हिंदी व्याकरण

6

लेखक :
आलोक शर्मा
(एम०ए०, बी०एड०)

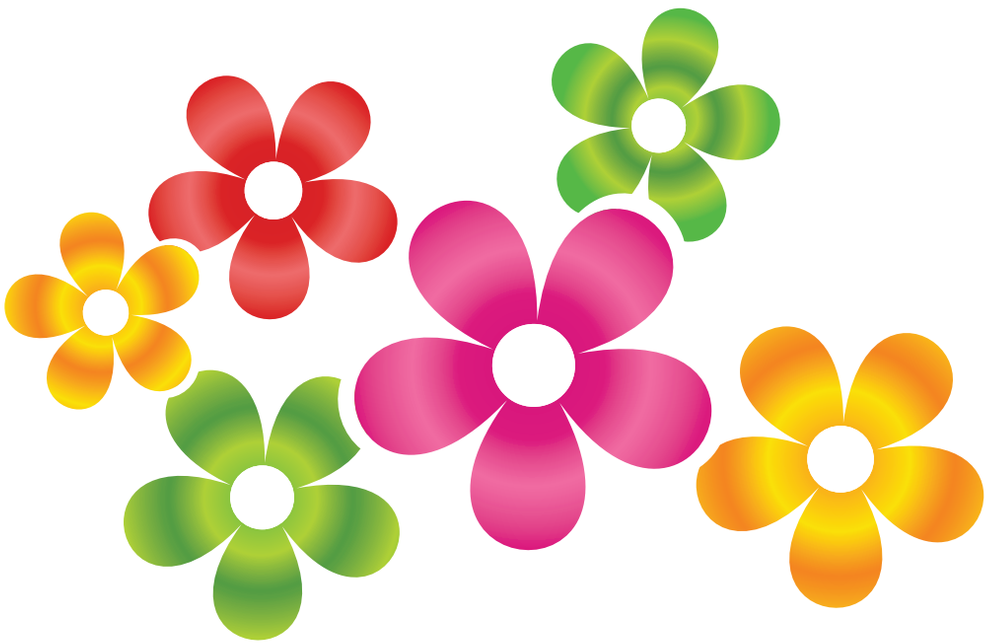

नवीन संस्करण

© प्रकाशकाधीन

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी रूप में मुद्रण, प्रकाशन, संग्रहण अथवा प्रसारण प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना वर्जित है।

वैधानिक सूचना

यद्यपि प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित बनाने का हरसंभव प्रयास किया गया है। परंतु इसमें यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो उससे कारित क्षति अथवा संताप के लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पुस्तक विक्रेता का कोई दायित्व नहीं होगा। किसी त्रुटि के संज्ञान में आने पर भविष्य में उसका सुधार किया जाएगा।

लेखक :
आलोक शर्मा (एम०ए०, बी०एड०)

हिंदी व्याकरण

प्रस्तावना

हिंदी व्याकरण की यह शृंखला आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इसे एन॰ सी॰ ई॰ आर॰ टी॰, इंटरस्टेट बोर्ड फॉर एंग्लो इंडियन एजुकेशन एवं अन्य प्रांतीय शिक्षा परिषदों द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार किया गया है।

इस शृंखला का उद्देश्य भाषा और व्याकरण का समुचित और सुबोध शैली में अध्ययन कराना है। छात्र व्याकरण को एक कठिन विषय के रूप में देखते हैं। इसलिए व्याकरण के जटिल नियमों को अत्यंत सरल और रोचक शब्दों में छात्रों तक पहुँचाना ही मेरा प्रयास है।

मेरा यह प्रयास छात्रों को अधिक रटने से बचाते हुए ज्ञानवर्धन करने के लिए है। अनेक चित्रों की सहायता से व्याकरण को समझाने का प्रयत्न किया गया है। अभ्यास में यथास्थान बहुवैकल्पिक प्रश्नों (MCQs) का समावेश किया गया है।

आशा है, यह प्रस्तुति विद्यार्थियों के लिए रुचिकर और उपयोगी सिद्ध होगी। आपसे अनुरोध है कि अपने अनुभवों और उपयोगी सुझावों से मुझे अवगत कराएँ।

धन्यवाद!

–लेखक

विषय सूची

1. भाषा और व्याकरण *(Language and Grammar)* ... 5
2. वर्ण (अक्षर)-विचार *(Phonology)* ... 8
3. शब्द-विचार *(Morphology)* ... 13
4. संज्ञा *(Noun)* ... 16
5. सर्वनाम *(Pronoun)* ... 19
6. लिंग तथा वचन *(Genders & Numbers)* ... 23
7. कारक व उसके भेद *(Case & Its Kinds)* ... 27
8. विशेषण *(Adjective)* ... 31
9. क्रिया *(Verb)* ... 34
10. वाच्य *(Voice)* ... 37
11. क्रिया-विशेषण *(Adverb)* ... 40
12. उपसर्ग *(Prefix)* ... 42
13. प्रत्यय *(Suffix)* ... 45
14. वाक्य-विचार *(Syntax)* ... 48
15. संधि-विचार *(Euphonic Combination)* ... 50
16. समास-विचार *(Word Combination)* ... 55
17. काल-विचार *(Tense)* ... 58
18. विराम-चिह्न *(Punctuation)* ... 61
19. विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द *(Antonyms)* ... 63
20. पर्यायवाची शब्द *(Synonyms)* ... 66
21. अनेक शब्दों के लिए शब्द *(One Word Substitution)* ... 69
22. सामान्य अशुद्धियाँ : वर्तनी *(Common Errors : Spellings)* ... 73
23. तद्भव तथा तत्सम शब्द *(Tadbhav and Tatsam Words)* ... 77
24. शब्द-युग्म *(Word Pairs)* ... 80
25. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ *(Idioms and Proverbs)* ... 83
26. पत्र-लेखन *(Letter Writing)* ... 88
27. अनुच्छेद-लेखन *(Paragraph Writing)* ... 93
28. कहानी-लेखन *(Story-Writing)* ... 95
29. निबंध-लेखन *(Essay-Writing)* ... 98
30. अंतर्कथाएँ *(Internal Stories)* ... 103

1 भाषा और व्याकरण
(Language & Grammar)

बच्चो ! मनुष्य अपने भावों तथा विचारों को अनेक प्रकार से प्रकट करता है। वह अपने हाथ-पैर तथा सिर आदि से संकेत करके भी दूसरों से कुछ कहना या मना करना चाहता है। **जैसे**–दाएँ-बाएँ सिर हिलाकर अथवा हाथ के इशारे से वह किसी बात के लिए ना करता है। यही भाषा मन के विचार प्रकट करने का अच्छा साधन है।

भाषा शब्द भाष् धातु+अ ङ्+टाप् प्रत्यय से मिलकर बना है जिसका अर्थ है–कहना, सार्थक वाणी। भाषा में ऐसी शक्ति है जिससे हम अपने विचारों को दूसरों के लिए आसानी से प्रकट कर सकते हैं। कभी-कभी अपनी बात को संकेतों द्वारा भी प्रकट किया जा सकता है। **जैसे**–रेलवे के गार्ड द्वारा ड्राइवर को हरी झंडी दिखाकर चलने का संकेत देना। इसी प्रकार क्रिकेट के खेल में एंपायर (निर्णायक) द्वारा अंगुली के संकेत से आउट घोषित करना आदि।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शब्दों द्वारा अपने विचारों तथा भावों के आदान-प्रदान को ही हम 'भाषा' कहते हैं।

परिभाषा–''जिस साधन के द्वारा मनुष्य अपने भावों तथा विचारों को बोलकर अथवा लिखकर प्रकट करता है वह भाषा कहलाती है।''

भारतवर्ष में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। जिनमें से 22 भाषाएँ संविधान में मुख्य भाषाएँ मानी गई हैं–

(1) हिंदी, (2) उर्दू, (3) संस्कृत, (4) गुजराती, (5) पंजाबी, (6) कन्नड़, (7) मराठी, (8) डोगरी, (9) कश्मीरी, (10) उड़िया, (11) बांग्ला, (12) असमिया, (13) तेलुगु, (14) सिंधी, (15) मलयालम, (16) तमिल, (17) मणिपुरी, (18) कोंकणी, (19) नेपाली, (20) मैथिली, (21) संथाली, (22) बोड़ो।

14 सितंबर, 1949 को भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी घोषित की गई। इसे विश्व में तीसरा स्थान प्राप्त है।

भाषा के भेद

भाषा के मुख्यतः तीन भेद बताए गए हैं–

1. मौखिक भाषा
2. लिखित भाषा
3. सांकेतिक भाषा

1. **मौखिक भाषा**–जिस भाषा के माध्यम से हम अपने विचार अथवा भाव बोलकर प्रकट करते हैं, वह मौखिक भाषा कहलाती है। कक्षा में अध्यापक द्वारा छात्रों को पढ़ाने के लिए मुख्य रूप से मौखिक भाषा का ही प्रयोग किया जाता है। मौखिक भाषा में ध्वनियों का प्रयोग होता है।

2. **लिखित भाषा**–जिस भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों तथा भावों को लिखकर प्रकट करते हैं, वह लिखित भाषा कहलाती है। दूर स्थित व्यक्ति को पत्र द्वारा अपने विचारों से परिचित कराने के लिए इस भाषा का प्रयोग करते हैं। इसी प्रकार परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर देते समय, कोई लेख, कविता, कहानी, निबंध आदि लिखने के लिए भी लिखित भाषा का प्रयोग किया जाता है। लिखित भाषा में हम अक्षरों का प्रयोग करते हैं।

3. **सांकेतिक भाषा**–जिस भाषा के माध्यम से मनुष्य संकेत से भावों को अभिव्यक्त करता है, उसे सांकेतिक भाषा कहते हैं। क्रिकेट के खेल में एंपायर द्वारा इस भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।

बोली (Dialect)

अपने क्षेत्र में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा के रूप को हम उस क्षेत्र की बोली के नाम से जानते हैं। यह बोली प्रायः एक क्षेत्र तक ही सीमित रहती है। इसका प्रयोग सरकारी कार्यों में नहीं किया जाता है। **जैसे**–अवधी, ब्रज, मराठी, पंजाबी आदि।

लिपि (Script)

"ऐसे चिह्न जिनके संयोग से भाषा को लिखित रूप प्रदान किया जाता है, वह उस भाषा की लिपि कहलाती है।"

हिंदी तथा संस्कृत भाषा को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। अंग्रेज़ी भाषा की लिपि रोमन है। इसी प्रकार पंजाबी भाषा की लिपि गुरुमुखी है तथा उर्दू और अरबी की लिपि फ़ारसी है।

भाषा के अंग–भाषा के मुख्य रूप से पाँच अंग बताए गए हैं– (i) ध्वनि, (ii) वर्ण, (iii) शब्द, (iv) पद, (v) वाक्य। इन्हीं अंगों के मिलने से भाषा का निर्माण होता है।

व्याकरण (Grammar)

भाषा में होने वाली त्रुटियों (अशुद्धियों) का पता लगाने तथा उसे शुद्ध रूप में लिखने तथा बोलने के लिए व्याकरण का ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। व्याकरण को किसी भी भाषा की रीढ़ कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

"व्याकरण उस शास्त्र को कहते हैं जिसमें किसी भाषा के शुद्ध रूप का बोध कराने वाले नियम बताए गए हों।"

व्याकरण के प्रकार–व्याकरण के मुख्य रूप से तीन प्रकार बताए गए हैं–

1. वर्ण- विचार (Phonology)
2. शब्द- विचार (Morphology)
3. वाक्य- विचार (Syntax)

नोट–इनका वर्णन हम अलग-अलग अध्यायों में आगे विस्तार से करेंगे।

भाषा और व्याकरण का संबंध

शुद्ध एवं प्रभावी भाषा का अपना विशिष्ट महत्त्व होता है। अशुद्ध तथा विकृत होने पर भाषा का अर्थ ही बदल जाता है। **जैसे**–आसन और आसन्न।

भाषा को शुद्ध एवं सुसंस्कृत बनाए रखने के लिए हमें उसके व्याकरण का ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि हम व्याकरण से ही शुद्ध लिखना, बोलना अथवा पढ़ना सीखते हैं।

आपने क्या सीखा

1. भाषा के द्वारा हम दूसरों के भावों तथा विचारों को समझते हैं।
2. भाषा के मुख्य तीन भेद हैं–
   (i) मौखिक, (ii) लिखित, (iii) सांकेतिक।
3. हिंदी भाषा की लिपि देवनागरी है।
4. व्याकरण के माध्यम से किसी भाषा का शुद्ध लिखना व बोलना सीखते हैं।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) भाषा शब्द बना है _____ धातु से।

भाषण ☐ भाष् ☐

(ख) भाषा होती है-

मौखिक व लिखित ☐ केवल लिखित ☐

(ग) संस्कृत भाषा है-

आधुनिक ☐ प्राचीन ☐

2. भाषा से क्या आशय है ?

_____

3. भाषा के मुख्य भेद कौन-कौन से हैं ?

_____

4. भारत में बोली जाने वाली किन्हीं 10 भाषाओं के नाम लिखिए।

_____

5. सांकेतिक भाषा किसे कहते हैं ?

_____

6. लिपि किसे कहते हैं ?

_____

7. भाषा के पाँच अंगों के नाम लिखिए।

_____

8. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) पंजाबी भाषा की लिपि रोमन है। ☐

(ख) संस्कृत भाषा की लिपि देवनागरी है। ☐

(ग) अंग्रेज़ी भाषा की लिपि रोमन है। ☐

(घ) व्याकरण के तीन भेद बताए गए हैं। ☐

(ङ) भाषा का क्षेत्रीय रूप बोली है। ☐

9. 'भाषा' शब्द किस प्रत्यय से मिलकर बना है ?

_____

10. व्याकरण की परिभाषा लिखिए।

_____

11. व्याकरण तथा भाषा में क्या संबंध है ?

_____

2 वर्ण (अक्षर)-विचार
(Phonology)

वर्ण या अक्षर–भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण कहलाती है। इसे अक्षर (अक्षर) भी कहते हैं। इसके टुकड़े नहीं हो सकते हैं। हिंदी में 48 वर्ण बताए गए हैं। वर्णों की सहायता से शब्दों का निर्माण किया जाता है। **जैसे**–अ, इ, उ, ए, क, ग, च, प आदि।

वर्ण की परिभाषा–वह छोटी से छोटी ध्वनि, जिसके टुकड़े न किए जा सकें वर्ण कहलाती है। अक्षर का उच्चरित रूप ही वर्ण कहलाता है।

वर्णमाला–वर्णों के समूह को वर्णमाला कहा जाता है। महर्षि पाणिनि के अनुसार संस्कृत व्याकरण में इनकी कुल संख्या 43 बताई गई है। हिंदी वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं–

(1) स्वर (Vowels), (2) व्यंजन (Consonants)।

1. स्वर (Bowels)

स्वर की परिभाषा–जिन वर्णों का उच्चारण स्वतः (अपने आप) होता है तथा जिनके बोलने में किसी वर्ण की सहायता नहीं ली जाती, वे स्वर कहलाते हैं। स्वरों की संख्या 11 है–अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ. ए, ऐ, ओ, औ।

उच्चारण की दृष्टि से स्वर के तीन भेद हैं।

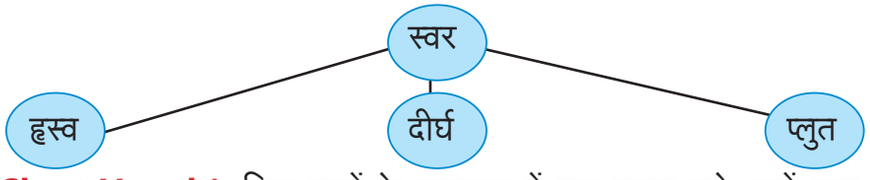

(1) **ह्रस्व स्वर (Short Vowels)**–जिन स्वरों के उच्चारण में कम समय लगे, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। अ, इ, उ, ऋ–ये चार स्वर ह्रस्व हैं।

(2) **दीर्घ स्वर (Long Vowels)**–जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से अधिक या लगभग दोगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं–आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(3) **प्लुत स्वर (Long-Drawn Vowels)**–जिनके बोलने में ह्रस्व स्वर से तिगुना समय लगता है। वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। प्रायः इस स्वर का प्रयोग दूर से बुलाने (संबोधन) में होता है। लिखते समय स्वर के आगे तीन (3) प्रयोग करते हैं। जैसे–ओ3म्, हे रा3म आदि।

नोट–आधुनिक समय में प्लुत स्वर का प्रयोग बहुत कम किया जाता है।

व्यंजन (Consonents)

व्यंजन की परिभाषा–जो वर्ण स्वरों की सहायता से बोले जाएँ, वे व्यंजन कहलाते हैं। हिंदी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। इन वर्णों (अक्षरों) को स्पर्श वर्ण भी कहते हैं। ये तीन प्रकार के हैं–

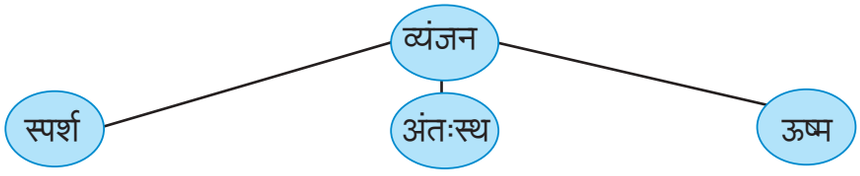

1. **स्पर्श व्यंजन (Mutes)**–जिन वर्णों को बोलते समय जीभ मुख के विभिन्न भागों को छूती है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। 'क' से 'म' तक 25 + 2 = 35 स्पर्श व्यंजन होते हैं–

(i) 'क' वर्ग–क्, ख्, ग्, घ्, ङ्

(ii) 'च' वर्ग–च्, छ्, ज्, झ्, ञ्

(iii) 'ट' वर्ग–ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण् – ड़, ढ़

(iv) 'त' वर्ग–त्, थ्, द्, ध्, न्

(v) 'प' वर्ग–प्, फ्, ब्, भ्, म्

2. **अंतःस्थ व्यंजन (Semi-Vowels)**–जो वर्ण व्यंजनों तथा स्वरों के मध्य स्थित होते हैं, उन्हें अंतःस्थ व्यंजन कहते हैं। ये 4 होते हैं–य्, र्, ल्, व्।

3. **ऊष्म व्यंजन (Sibilants)**–जिन व्यंजनों के बोलने से गर्म हवा निकलती है उन्हें ऊष्म व्यंजन कहते हैं। ये भी 4 हैं–श्, ष्, स्, ह्।

(क) मेल के आधार पर व्यंजन के भेद–समान अथवा भिन्न-भिन्न व्यंजनों के आधार पर भी व्यंजनों के भेद किए गए हैं। ये दो प्रकार के हैं– (i) संयुक्त व्यंजन, (ii) द्वित्व व्यंजन।

(i) संयुक्त व्यंजन–दो अलग-अलग व्यंजनों के संयोग से बने शब्द संयुक्त व्यंजन कहलाते हैं। जैसे–

श्र = श् + र। क्ष = क् + ष। ज्ञ = ज् + ञ। त्र = त् + र।

(ii) द्वित्व व्यंजन–द्वित्व का अर्थ है एक ही अक्षर का दो बार प्रयोग होना। जैसे 'पत्ते'। इसी प्रकार सच्चा, पक्का, प्रसन्न आदि में च्च, क्क तथा न्न द्वित्व व्यंजन देखे जा सकते हैं।

(ख) उच्चारण के आधार पर व्यंजन के प्रकार–यह मुख्यतः दो प्रकार के हैं–

(i) अल्पप्राण–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा कम तथा कमजोर होकर निकलती है, उन्हें अल्पप्राण व्यंजन कहते हैं।

(ii) महाप्राण–जिन व्यंजनों के बोलने में वायु की मात्रा अधिक तथा तेज वेग से बाहर निकलती है, उन्हें महाप्राण व्यंजन कहते हैं।

(ग) प्रयत्न–वर्णों के बोलते समय मनुष्य को जो प्रयत्न करना पड़ता है, उसे प्रयत्न कहते हैं। प्रयत्न दो प्रकार के होते हैं–

(i) आभ्यंतर प्रयत्न–वर्णों के बोलने से पहले जो भीतरी प्रयत्न करना पड़ता है, उसे आभ्यंतर प्रयत्न कहते हैं। इसके चार प्रकार हैं–स्पृष्ट, ईषत् स्पृष्ट, विवृत तथा ईषत् विवृत।

(ii) बाह्य प्रयत्न–वर्णों के अंत में होने वाले प्रयत्न को बाह्य प्रयत्न कहते हैं। इसके भी 4 प्रकार हैं–घोष, अघोष, अल्पप्राण और महाप्राण।

अनुस्वार–इसका उच्चारण 'म्' के समान होता है। इसका चिह्न (ं) बिंदु है। जैसे–अंगूर, मूंग आदि।

विसर्ग–इसका उच्चारण ह् के समान होता है। इसका चिह्न (ः) है। जैसे–दुःख, प्रातः आदि।

चंद्रबिंदु–जिस स्वर का उच्चारण मुख तथा नाक से होता है, उसके ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगा दिया जाता है। जैसे–चाँद, आँख, दाँत, आँत आदि।

हलंत–जहाँ व्यंजन का प्रयोग स्वरहीन होता है, वहाँ उसके नीचे टेढ़ी रेखा हलंत (्) लगा दिया जाता है। जैसे–विद्वत्, निम्नवत् आदि।

वर्णों के उच्चारण स्थान

हम मुख के जिस भाग (अंग) से जिस वर्ण का उच्चारण करते हैं, उसे उस वर्ण का उच्चारण स्थान कहते हैं।

स्थान	वर्ण	वर्ण का उच्चारण स्थान
कण्ठ	क वर्ग तथा ह्, अ, आ	कण्ठ्य
तालु	च वर्ग तथा य्, श्, इ, ई	तालव्य
मूर्धा	ट वर्ग तथा र्, ष्, ऋ	मूर्धन्य
दंत	त वर्ग तथा ल्, स्	दन्त्य
ओष्ठ	प वर्ग तथा उ, ऊ	ओष्ठ्य
कण्ठतालु	ए, ऐ	कण्ठ-तालव्य
नासिका	अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	नासिक्य = नासिका + मुँह
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	कण्ठोष्ठ्य = कण्ठ + ओष्ठ
दंतोष्ठ	व्	दंतोष्ठ्य = दंत + ओष्ठ

व्यंजन और स्वर का मेल

व्यंजन वर्ण में मिलने पर स्वर वर्ण अपना रूप बदल लेते हैं। इस बदले रूप को मात्रा कहते हैं। स्वरों की मात्रा के भेद–

स्वर	मात्रा चिह्न	मात्रा संयुक्त रूप
अ	कोई नहीं	क् + अ = क
आ	ा	क् + आ = का
इ	ि	क् + इ = कि
ई	ी	क् + ई = की
उ	ु	क् + उ = कु
ऊ	ू	क् + ऊ = कू
ऋ	ृ	क् + ऋ = कृ
ए	े	क् + ए = के
ऐ	ै	क् + ऐ = कै
ओ	ो	क् + ओ = को
औ	ौ	क् + औ = कौ
अं	ं	क् + अं = कं
अः	ः	क् + अः = कः
अँ	ँ	क् + अँ = कँ

आपने क्या सीखा

1. भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण (अक्षर) है।
2. अक्षरों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।
3. स्वर के तीन भेद-ह्रस्व, दीर्घ व प्लुत होते हैं।
4. स्वरों की सहायता से बोले जाने वाले अक्षर व्यंजन हैं।
5. हिंदी में 11 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं।
6. क् से म् तक 25 स्पर्श व्यंजन तथा 5 वर्ग हैं।
7. उच्चारण के आधार पर व्यंजन दो प्रकार के होते हैं।
8. प्रयत्नों के दो भेद–बाह्य तथा आभ्यंतर हैं।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) वर्ण भाषा की _____ इकाई है।

सबसे छोटी ☐ बड़ी ☐

(ख) ह्रस्व स्वर है–

आ ☐ अ ☐

(ग) प्लुत स्वर के उच्चारण में ह्रस्व स्वर की अपेक्षा _____ समय लगता है।

दोगुना ☐ तिगुना ☐

(घ) ऊष्म व्यंजनों की संख्या है–

दो ☐ चार ☐

2. वर्ण की परिभाषा दीजिए, हिंदी में कुल कितने वर्ण हैं ?

_____

_____

3. स्वर किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ?

_____

_____

4. व्यंजन की परिभाषा तथा उसके प्रकार लिखिए।

_____

_____

5. **भाषा की सबसे छोटी इकाई क्या है ?**

_____

_____

6. **प्रयत्न के कितने भेद हैं ?**

_____

_____

7. **अंतर बताइए–**

(क) स्वर एवं व्यंजन – _____

(ख) दीर्घ एवं प्लुत स्वर – _____

(ग) अंतःस्थ एवं ऊष्म – _____

(घ) अनुस्वार एवं विसर्ग – _____

(ङ) अल्पप्राण एवं महाप्राण – _____

8. **दिए गए स्वरों में से ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर छाँटकर लिखिए–**

आ, उ, इ, ए, ऊ, औ, अ, ई, ओ, ऐ।

दीर्घ स्वर – _____

ह्रस्व स्वर – _____

9. **सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–**

(क) वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। ☐

(ख) व्यंजनों की कुल संख्या 52 है। ☐

(ग) स्पर्श व्यंजन में 25 वर्ण होते हैं। ☐

(घ) 'अ' का उच्चारण स्थान तालु है। ☐

(ङ) प्रयत्न के तीन भेद होते हैं। ☐

10. **नीचे दिए गए वर्णों के उच्चारण स्थान लिखिए–**

वर्ण	उच्चारण स्थान	वर्ण	उच्चारण स्थान
इ	_____	ऋ	_____
क	_____	प	_____

3 शब्द-विचार
(Morphology)

भाषा की दूसरी इकाई शब्द कहलाती है। शब्दों का हमारे जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। इसी के आधार पर अनेक कार्य सम्पन्न होते हैं।

शब्द की परिभाषा–एक अथवा एक से अधिक वर्णों से बनी स्वतंत्र एवं सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है। जैसे–एक वर्ण से बने–'न' का अर्थ (नहीं), 'व' का अर्थ (और) आदि शब्द हैं तथा अनेक वर्णों से बने–वसन, महल, ताजमहल, नगर आदि शब्द हैं।

शब्दों के भेद

1. रचना के आधार पर।
2. उत्पत्ति के आधार पर।
3. अर्थ के आधार पर।
4. वाक्य प्रयोग के आधार पर।

1. रचना के आधार पर शब्दों का वर्गीकरण–

ये निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं–(i) रूढ़ शब्द, (ii) यौगिक शब्द, (iii) योगरूढ़ शब्द।

(i) रूढ़ शब्द–वे शब्द जिनको अलग-अलग करने पर कोई सार्थक अर्थ न निकले, ऐसे शब्द रूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे–हिरन = हि, र, न। मित्र = मि, त्र।

(ii) यौगिक शब्द–वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बनते हैं, यौगिक शब्द कहलाते हैं। जैसे–धर्म + शाला = धर्मशाला। दूध + वाला = दूधवाला।

(iii) योगरूढ़ शब्द–ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बने हों, पर किसी विशेष अर्थ को दर्शाते हों, योगरूढ़ शब्द कहलाते हैं। जैसे–जलज = जल + ज (विशेष अर्थ-कमल)।

2. उत्पत्ति के आधार पर–ये शब्द निम्नलिखित प्रकार के हैं–

(i) तत्सम शब्द–संस्कृत के जो शब्द अपने मूल रूप में ही हिंदी में प्रयोग होते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। जैसे–स्नेह, भ्राता, अग्नि आदि।

(ii) तद्भव शब्द–हिंदी के वे शब्द जो संस्कृत शब्दों में परिवर्तन के कारण बने हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं। जैसे–गाय = गौ।

(iii) देशज शब्द–वे शब्द जो क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिंदी में आ गए हैं, देशज शब्द कहलाते हैं। जैसे–झुग्गी, खाट, पगड़ी, पेट।

(iv) विदेशी शब्द–हिंदी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो विदेशी भाषाओं से लिए हुए हैं। ऐसे शब्दों को विदेशी शब्द कहते हैं। जैसे–टेलीविज़न (अंग्रेज़ी), किताब (फ़ारसी), हलवाई (अरबी), चम्मच (तुर्की), चाय (चीनी), पुलिस (फ्रांसीसी)।

3. अर्थ के आधार पर–

(i) सार्थक शब्द–जिन शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ हो, वे सार्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे–लड़का, मकान, फूल, बाज़ार आदि।

(ii) निरर्थक शब्द–जिन शब्दों का कोई अर्थ नहीं होता, वे निरर्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे–रोटी-वोटी, पानी-वानी। यहाँ 'वोटी' तथा 'वानी' निरर्थक शब्द हैं।

4. वाक्य-प्रयोग के आधार पर–

(i) विकारी शब्द–वे शब्द जो लिंग, कारक तथा वचन आदि में परिवर्तन के कारण परिवर्तित हो जाते हैं, विकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे–घोड़ा, घर, पीला, वह जाता है आदि।

विकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–1. संज्ञा, 2. सर्वनाम, 3. विशेषण, 4. क्रिया।

(ii) अविकारी शब्द–वे शब्द जिनका रूप प्रयोग के कारण न बदल सके, अविकारी शब्द कहलाते हैं। जैसे–

1. खिलाड़ी तेज़ दौड़ता है। 2. खिलाड़ी तेज़ दौड़ते हैं।

अविकारी शब्द चार प्रकार के होते हैं–

1. क्रिया विशेषण, 2. संबंध बोधक, 3. समुच्चय बोधक, 4. विस्मयादिबोधक।

आपने क्या सीखा

1. दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बनी सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं।
2. अर्थ के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं।
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्द चार प्रकार के होते हैं।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) शब्द कहते हैं-

वर्णों के सार्थक समूह को ☐ एक वर्ण को ☐

(ख) अर्थ के आधार पर शब्द मुख्यतः होते हैं-

दो प्रकार के ☐ दस प्रकार के ☐

(ग) तत्सम शब्दों का प्रयोग होता है-

परिवर्तन सहित ☐ अपने मूल रूप में ☐

(घ) प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद हैं-

तीन ☐ दो ☐

2. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) विदेशी भाषा के शब्द देशज शब्द कहलाते हैं। ☐

(ख) संज्ञा, विशेषण और क्रिया अविकारी शब्द कहलाते हैं। ☐

(ग) अर्थ वाले शब्दों को सार्थक शब्द कहते हैं। ☐

(घ) तद्भव शब्द तत्सम शब्दों के बदले हुए रूप हैं। ☐

3. शब्द से क्या तात्पर्य है ?

_____

_____

4. तत्सम तथा तद्भव शब्द क्या हैं ?

_____

_____

5. विकारी शब्द की परिभाषा तथा उसके भेद बताइए।

_____

_____

6. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) भाषा की दूसरी इकाई _____ कहलाती है।

(ख) संस्कृत से आए शब्द जो हिंदी में प्रयुक्त होते हैं _____ कहलाते हैं।

(ग) रचना के आधार पर शब्द _____ प्रकार के होते हैं।

(घ) वे शब्द जिनका कोई अर्थ नहीं होता _____ शब्द हैं।

(ङ) वे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने से बनते हैं _____ शब्द कहलाते हैं।

7. नीचे दिए गए शब्दों में से सार्थक एवं निरर्थक शब्द छाँटकर लिखिए–

पानी, फूल, वानी, ओटी, मकान, वूल।

सार्थक शब्द– _____

निरर्थक शब्द– _____

8. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

टेलीविज़न _____ (देशज / विदेशी शब्द) चम्मच _____ (विदेशी / देशज शब्द)

खाट _____ (तद्भव / तत्सम) लड़का _____ (विकारी / अविकारी)

9. अविकारी शब्द किसे कहते हैं, ये कितने प्रकार के होते हैं ?

_____

_____

_____

_____

4 संज्ञा (Noun)

संज्ञा का अर्थ है–नाम। संसार में हर प्राणी, वस्तु, स्थान, भाव आदि का कोई न कोई नाम होता है।

संज्ञा की परिभाषा–किसी प्राणी, वस्तु, स्थान अथवा भाव के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे–प्राणी–अजय, हाथी, सर्प आदि; वस्तु–कुर्सी, मेज़ , पुस्तक आदि; स्थान–मेरठ, बरेली, अमेरिका आदि; भाव–सौंदर्य, बचपन आदि।

संज्ञा के प्रकार

संज्ञाएँ पाँच प्रकार की होती हैं–

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)
2. जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)
3. भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)
4. समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)
5. पदार्थ (द्रव्य) वाचक संज्ञा (Material Noun)

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा (Proper Noun)**–जिस संज्ञा से किसी एक ही व्यक्ति या वस्तु का ज्ञान हो, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे**–कौशल, दिल्ली, ताजमहल आदि।
2. **जातिवाचक संज्ञा (Common Noun)**–जिस संज्ञा से एक ही जाति के सब पदार्थों का ज्ञान हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे**–मेज, कुत्ता, नदी आदि।
3. **भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)**–जिस संज्ञा से पदार्थों के गुण, स्वभाव, दोष, स्थिति, व्यापार आदि धर्मों का ज्ञान हो, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे**–यौवन, प्यास, ईर्ष्या, जलन, बुढ़ापा आदि।
4. **समुदायवाचक संज्ञा (Collective Noun)**–जिस संज्ञा से किसी समुदाय अथवा समूह का बोध होता हो, उसे समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे**–मेला, पुस्तकालय, कक्षा, पुलिस आदि।
5. **पदार्थ (द्रव्य) वाचक संज्ञा (Material Noun)**–जिस संज्ञा से किसी पदार्थ (द्रव्य) का बोध हो, उसे पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। **जैसे**–सोना, चाँदी, जल, घी, तेल, पेट्रोल आदि।

भाववाचक संज्ञाएँ बनाना

1.

जातिवाचक संज्ञा		भाववाचक संज्ञा
मित्र	–	मित्रता
बच्चा	–	बपचन
सेवक	–	सेवा
नेता	–	नेतृत्व
चोर	–	चोरी

2. विशेषण — भाववाचक संज्ञा

कठिन	–	कठिनाई
मधुर	–	मधुरता
निर्धन	–	निर्धनता
सरल	–	सरलता
सफ़ेद	–	सफ़ेदी

3. सर्वनाम — भाववाचक संज्ञा

अपना	–	अपनापन
अहं	–	अहंकार
पराया	–	परायापन
निज	–	निजता

4. क्रिया — भाववाचक संज्ञा

उड़ना	–	उड़ान
चुनना	–	चुनाव
धोना	–	धुलाई
पीटना	–	पिटाई
लड़ना	–	लड़ाई
गहरा	–	गहराई
हारना	–	हार

5. अव्यय — भाववाचक संज्ञा

धिक्	–	धिक्कार
निकट	–	निकटता
वाह	–	वाहवाही
समीप	–	समीपता
मना	–	मनाही

आपने क्या सीखा

1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, गुण आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।
2. संज्ञा के पाँच भेद होते हैं।
3. भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए शब्द में प्रायः 'ता' जोड़ते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) संज्ञा की परिभाषा लिखकर उसके भेद भी बताइए।

_____

_____

(ख) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ?

_____

_____

(ग) विशेषणों से चार भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए।

_____

_____

(घ) मित्रता, चोरी, ममत्व तथा मिठास किस प्रकार की संज्ञाएँ हैं ? स्पष्ट कीजिए।

_____

_____

2. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) मित्रता, सरलता, बचपन भाववाचक संज्ञाएँ हैं। ☐

(ख) शीशा, सोना, चाँदी, घी पदार्थवाचक संज्ञाएँ हैं। ☐

(ग) भारत, नदी, घोड़ा व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ हैं। ☐

(घ) पुलिस, परिवार, कक्षा जातिवाचक संज्ञाएँ हैं। ☐

3. दिए गए शब्दों के सामने संज्ञा के प्रकार लिखिए–

(क) जनता – _____

(ख) अजय – _____

(ग) तेल – _____

(घ) ताँबा – _____

(ङ) हिरन – _____

(च) भीड़ – _____

4. प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञा बनाइए–

(क) वीर – _____

(ख) पशु – _____

(ग) निज – _____

(घ) लिखना – _____

5 सर्वनाम (Pronoun)

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यान से पढ़ें–

1. दिनेश ने कहा, "मैं दिल्ली जाऊँगा।"
2. छात्रों ने कहा, "हम पढ़ेंगे।"
3. वह खाना बना रही है।

पहले वाक्य में 'मैं' का प्रयोग दिनेश के लिए किया गया है। दूसरे वाक्य में 'हम' का प्रयोग छात्रों के लिए किया गया है। तीसरे वाक्य में 'वह' शब्द किसी लड़की के लिए आया है।

सर्वनाम की परिभाषा–वे शब्द जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं, सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे–मैं, हम, तुम, वे आदि।

सर्वनाम के प्रकार

सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं–

1. पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)
2. निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)
4. संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)
6. निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)**–जो सर्वनाम शब्द बोलने वाले, सुनने वाले अथवा जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसके लिए प्रयोग किए जाएँ, वे पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे**–'मैंने' 'तुमसे' कहा कि 'वह' स्कूल नहीं जाएगा। इस वाक्य में मैंने–कहने (बोलने) वाले के लिए, तुमसे–सुनने वाले के लिए, वह–अन्य पुरुष के लिए प्रयोग किया गया है।

पुरुषवाचक सर्वनाम को तीन भागों में बाँटा गया है–

(i) उत्तम पुरुषवाचक (First Person)
(ii) मध्यम पुरुषवाचक (Second Person)
(iii) अन्य पुरुषवाचक (Third Person)

(i) उत्तम पुरुषवाचक (First Person)–बोलने वाला जिन शब्दों को अपने लिए प्रयोग करता है, वे शब्द 'उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम' कहलाते हैं। **जैसे**–हम, हमारा, मेरा आदि।

(ii) मध्यम पुरुषवाचक (Second Person)–बोलने वाला जिन शब्दों को सुनने वाले के लिए प्रयोग करता है, वे शब्द मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। **जैसे**–तुम, आप, तुम्हें आदि।

(iii) **अन्य पुरुषवाचक (Third Person)**–जिसकी बात कही जाए अथवा जिस व्यक्ति के बारे में बात की जाती है, उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे**–वह, उन्हें, वे, उसने, उसकी आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)**–जिस सर्वनाम शब्द से किसी पास या दूर की वस्तु अथवा व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत करते हैं, वह निश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। **जैसे**–यह, वह, ये, वे आदि।

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)**–जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित वस्तु या व्यक्ति की ओर निश्चयपूर्वक संकेत न करते हों, वह अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाता है। **जैसे**–कुछ, कोई, किन्हीं आदि।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)**–जो सर्वनाम वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से संबंध प्रकट करे, उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे**–जो, जिसने, जैसा आदि।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)**–जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता है, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे**–क्या, कौन, किसने, कहाँ आदि।

6. **निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronoun)**–जिस सर्वनाम शब्द से वाक्य के कर्त्ता के साथ अपनापन प्रकट हो, उसे निजवाचक सर्वनाम कहा जाता है। **जैसे**–आप, स्वयं, अपने आप, आप ही आदि।

शब्द रूपावली

'मैं' उत्तम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं / मैंने	हम / हमने
कर्म	मुझे / मुझको	हमें / हमको
करण	मुझसे	हमसे
संप्रदान	मुझे / मेरे लिए	हमें / हमारे लिए
अपादान	मुझसे	हमसे
संबंध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, पर	हममें, पर

'तू' मध्यम पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तू / तूने	तुम / तुमने
कर्म	तुझे / तुझको	तुम्हें / तुमको
करण	तुझसे	तुमसे
संप्रदान	तुझे / तेरे लिए	तुम्हें / तुम्हारे लिए
अपादान	तुझसे	तुमसे
संबंध	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझमें, पर	तुममें, पर

'वह' अन्य पुरुष

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	वह / उसने	वे / उन्होंने
कर्म	उसको / उसे	उनको / उन्हें
करण	उससे	उनसे
संप्रदान	उसके लिए / उसको	उनके लिए / उनको
अपादान	उससे	उनसे
संबंध	उसका, के, की	उनका, के, की
अधिकरण	उसमें, पर	उनमें, पर

आपने क्या सीखा

1. संज्ञा शब्द के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द को सर्वनाम कहा जाता है।
2. सर्वनाम छः प्रकार के होते हैं।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद होते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) सर्वनाम की परिभाषा लिखिए।

_____

_____

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं ?

_____

_____

(ग) सर्वनाम के कितने भेद (प्रकार) होते हैं ? उदाहरण दीजिए।

_____

_____

(घ) प्रश्नवाचक सर्वनाम से क्या आशय है ?

_____

_____

2. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) 'क्या' प्रश्नवाचक सर्वनाम है। ☐

(ख) 'मैं' प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम है। ☐

(ग) 'कुछ' अनिश्चयवाचक सर्वनाम है। ☐

(घ) 'वे' निश्चयवाचक सर्वनाम है।

(ङ) 'यह' पुरुषवाचक सर्वनाम है।

3. खाली स्थानों को उचित सर्वनाम से पूरा कीजिए–

(क) _____ अपने घर जा रहा है।

(ख) _____ अपना पाठ स्वयं याद करो।

(ग) _____ कब स्कूल जाएँगे ?

(घ) _____ कल पत्र भेजूँगा।

4. नीचे दिए गए वाक्यों में से सर्वनाम शब्द चुनकर लिखिए–

(क) यह पुस्तक सुंदर है। _____

(ख) मैं कल घर गया था। _____

(ग) जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा। _____

(घ) सैनिकों ने अपने शस्त्र रख दिए। _____

(ङ) तुम उसे भगा दो। _____

5. शब्दों को संबंधित सर्वनाम से मिलाइए–

कुछ	अनिश्चयवाचक सर्वनाम	किसने
कौन	प्रश्नवाचक सर्वनाम	क्या
तुम	निजवाचक सर्वनाम	स्वयं
अपने आप	पुरुषवाचक सर्वनाम	तू

6 लिंग तथा वचन
(Gender & Number)

हिंदी में दो वर्ग हैं–पुरुष वर्ग एवं स्त्री वर्ग। इन दोनों वर्गों का बोध कराने के लिए हिंदी व्याकरण में लिंग निश्चित किए गए हैं। लिंग का शाब्दिक अर्थ है–चिह्न अथवा निशान। पुरुष जाति की पहचान कराने वाले शब्द पुल्लिंग तथा स्त्री जाति की पहचान कराने वाले शब्द स्त्रीलिंग कहलाते हैं।

लिंग की परिभाषा–संज्ञा शब्द के जिस रूप से किसी पुरुष या स्त्री जाति का बोध होता हो, उसे लिंग कहते हैं।

लिंग के भेद

1. **पुल्लिंग (Masculine Gender)**–जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, उन्हें पुल्लिंग कहते हैं। **जैसे**–पिता, भाई, चाचा, मामा, घोड़ा, बंदर आदि।
2. **स्त्रीलिंग (Feminine Gender)**–जो शब्द स्त्री जाति का बोध कराते हैं, उन्हें स्त्रीलिंग कहते हैं। **जैसे**–माता, बहन, अध्यापिका, बंदरिया, हथिनी, धोबिन आदि।

पुल्लिंग की पहचान–

1. 'अ' से अंत तक होने वाले हिंदी के तद्भव शब्द प्रायः पुल्लिंग होते हैं। **जैसे**–जंगल, आग, गाँव, मेज़ आदि।
2. पर्वतों, ग्रहों, पेड़ों, समुद्रों, अनाजों, दिनों तथा द्रव पदार्थों के नाम प्रायः पुल्लिंग होते हैं।
3. शब्द के अंत में निम्न प्रत्यय आने पर पुल्लिंग शब्द बनते हैं–

आ	–	पैसा, दूधिया, छाता, माथा आदि।
पा	–	बुढ़ापा, पुजापा आदि।
पन	–	बचपन, लड़कपन, पागलपन आदि।
न	–	हवन, लोचन, यवन, नयन आदि।
औड़ा	–	भगौड़ा, हथौड़ा, पकौड़ा आदि।

4. मानव शरीर के कुछ अंग भी पुल्लिंग होते हैं। जैसे–मुँह, गला, मस्तक, हाथ, पैर, दाँत, कान, घुटना आदि।

स्त्रीलिंग की पहचान–

1. भाषाओं के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–अंग्रेज़ी, संस्कृत, जापानी, उर्दू, हिंदी आदि।
2. संस्कृत के आकारांत शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–परीक्षा, अहिंसा, कृपा, सूचना, सभा, दया आदि।
3. ईकारांत संज्ञाएँ स्त्रीलिंग होती हैं। **जैसे**–नदी, चिट्ठी, दूरी, रोटी, नौकरी, गर्मी, सर्दी आदि।
4. बोलियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगाली आदि।
5. जिन शब्दों के अंत में 'इया', 'आवट', 'ता', 'आई' आदि आते हैं, वे शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे**–

इया	–	लठिया, कुटिया, डिबिया आदि।
आवट	–	मिलावट, लिखावट, थकावट, बनावट आदि।

ता – दासता, लघुता, मित्रता, सरलता आदि।

आई – पढ़ाई, लिखाई, बुराई, लड़ाई आदि।

6. जिन शब्दों के अंत में नी व 'इमा' आए, वे शब्द भी प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं। **जैसे–**

'नी' – ओढ़नी, जननी, करनी, भरनी आदि।

'इमा' – नीलिमा, लालिमा, कालिमा आदि।

वचन

वचन का संबंध संख्या से होता है। कोई वस्तु या प्राणी संख्या में एक है अथवा अधिक, इसका ज्ञान इस वचन के अंतर्गत किया जाता है। उदाहरणार्थ–

(i) कुत्ता बैठा है। (ii) कुत्ते बैठे हैं।

पहले वाक्य में कुत्ता 'एक' है अतः इसे एकवचन कहते हैं, तथा दूसरे वाक्य में कुत्तों की संख्या एक से अधिक है, इसे बहुवचन कहते हैं।

वचन की परिभाषा–शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वह एक के लिए है अथवा एक से अधिक के लिए, उसे वचन कहते हैं। जैसे–घोड़ा–घोड़े, बकरी–बकरियाँ आदि।

वचन के भेद

हिंदी भाषा में वचन के दो भेद हैं–

1. **एकवचन (Singular Number)**–शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि प्राणी, वस्तु आदि की संख्या एक है, उसे एकवचन कहते हैं। **जैसे–**सूर्य, बस, मुर्गा, गधा आदि।
2. **बहुवचन (Plural Number)**–शब्द के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि प्राणी, वस्तु आदि 'एक से अधिक' हैं, उसे बहुवचन कहते हैं। **जैसे–**घोड़े, गाड़ियाँ, कुत्ते, मुर्गे आदि।

कुछ शब्दों के एकवचन तथा बहुवचन रूपों पर ध्यान दें–

(शब्द के अंत में 'अ' को 'एं' (े) कर दिया गया है।)

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
गाय	गाएँ	बात	बातें
बहन	बहनें	आँख	आँखें
(शब्द के अंत में आ (ा) के आगे ('एँ') जोड़ दिया गया है।)			
कन्या	कन्याएँ	कविता	कविताएँ
अध्यापिका	अध्यापिकाएँ	पत्रिका	पत्रिकाएँ
(शब्द के अंत में आ (ा) को ए (े) कर दिया गया है।)			
गधा	गधे	कुत्ता	कुत्ते
बेटा	बेटे	कुरता	कुरते

(शब्द के अंत में आ (ा), ई (ी) को इयाँ कर दिया गया है)

चिड़िया	चिड़ियाँ	बीड़ी	बीड़ियाँ
गुड़िया	गुड़ियाँ	साड़ी	साड़ियाँ

ध्यान देने योग्य बातें–

1. सदैव एकवचन में प्रयोग होने वाले शब्द–वर्षा, जनता, घी, तेल, सत्य, झूठ आदि।
2. सदैव बहुवचन में प्रयोग होने वाले शब्द–प्राण, आँसू, समाचार, होश, दर्शन आदि।
3. जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में किया जाता है। जैसे–दशहरी आम बहुत स्वादिष्ट होता है।
4. जिन शब्दों के अंत में जाति, दल अथवा सेना का प्रयोग होता है वे एकवचन में प्रयोग होते हैं। जैसे–स्काउट दल सेवा कर रहा है। आज पिछड़ी जाति जाग गई है।

आपने क्या सीखा

1. संज्ञा के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध हो, उसे पुल्लिंग कहते हैं।
2. संज्ञा के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध हो, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
3. संज्ञा के जिस रूप से उसकी संख्या का बोध हो, उसे वचन कहते हैं।
4. वचन के दो भेद हैं–(i) एकवचन, (ii) बहुवचन।

अभ्यास

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए-

(क) संज्ञा पद केवल प्राणिवाचक हो सकते हैं-

हाँ ☐ नहीं ☐

(ख) संज्ञा शब्दों में विकार आता है-

हाँ ☐ नहीं ☐

(ग) देशों के नाम प्राय होते हैंः-

पुल्लिंग ☐ स्त्रीलिंग ☐

(घ) नदियों के नाम प्रायः होते हैं-

स्त्रीलिंग ☐ पुल्लिंग ☐

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लिंग की परिभाषा तथा उसके भेद भी लिखिए।

_____

_____

(ख) पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के कोई दो नियम लिखिए।

_____

_____

(ग) वचन किसे कहते हैं ? ये हिंदी में कितने प्रकार के हैं ?

_____

_____

(घ) एकवचन से बहुवचन का प्रयोग कब किया जाता है ?

_____

_____

3. निम्नलिखित शब्दों के लिंग बताइए–

(क) रस्सी _____ (ख) भाषा _____

(ग) घंटा _____ (घ) हाथी _____

4. निम्न शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–

(क) कथा _____ (ख) साड़ी _____

(ग) तोता _____ (घ) गाय _____

5. निम्न शब्दों के एकवचन रूप लिखिए–

(क) शाखाएँ _____ (ख) छात्रगण _____

(ग) वस्तुएँ _____ (घ) तिथियाँ _____

6. शरीर के चार अंग पुल्लिंग में लिखिए–

_____

7. रेखांकित के वचन बदलकर वाक्यों को पुनः लिखिए–

(क) <u>लड़कियाँ</u> <u>गुड़ियों</u> की शादी रचा रहीं हैं।

_____

_____

(ख) मेरी <u>पुस्तक</u> फट गई है।

_____

_____

(ग) नानी <u>कहानी</u> सुनाती हैं।

_____

_____

(घ) <u>छात्र</u> शोर मचा रहे हैं।

_____

_____

7 कारक व उसके भेद
(Case & Its Kinds)

परिभाषा–संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति–कारकों का रूप प्रकट करने के लिए उनके साथ जो शब्द चिह्न के रूप में प्रयुक्त होते हैं उन्हें विभक्ति कहा जाता है। **जैसे**–ने, को, के लिए आदि। इन विभक्तियों को परसर्ग भी कहते हैं।

कारक के भेद

कारक के आठ भेद (प्रकार) हैं। इनके चिह्न निम्न हैं–

कारक	चिह्न/विभक्ति
1. कर्त्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से, के द्वारा
4. संप्रदान	को, के लिए
5. अपादान	से
6. संबंध	का, की, के आदि
7. अधिकरण	में, पर
8. संबोधन	हे, रे, अरे,

1. **कर्त्ता-कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध हो, उसे कर्त्ता कारक कहते हैं। **जैसे**–

   (i) सीता ने खाना खाया।

   (ii) सरिता विद्यालय जाती है।

कहीं-कहीं कर्त्ता कारक की विभक्ति 'ने' का प्रयोग होता है और कहीं नहीं भी होता है। जैसे–पहले वाक्य में सीता के साथ 'ने' विभक्ति का प्रयोग हुआ है, जबकि दूसरे वाक्य में विभक्ति 'ने' का प्रयोग नहीं किया गया है। 'ने' विभक्ति का प्रयोग सकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल में किया जाता है। जैसे–सुनीता ने चाय पी। यह विभक्ति वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में प्रयुक्त नहीं होती है। **जैसे**–वह पत्र पढ़ता है।, वह पत्र पढ़ेगा।

2. **कर्म कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। **जैसे**–

   (i) सुरेश ने पत्र लिखा। (ii) राम ने रावण को मारा।

इन वाक्यों में पत्र और रावण कर्म कारक हैं। कर्म कारक का चिह्न 'को' है। 'ने' की तरह कहीं-कहीं 'को' विभक्ति भी छिपी रहती है। कभी-कभी को कारक के स्थान पर अन्य कारक का प्रयोग भी होता है। **जैसे**–मैंने आपसे पूछा था। यहाँ 'आपसे' कर्म कारक है।

3. **करण कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का साधन, कारण, रीति आदि का बोध हो, उसे करण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति से, के द्वारा हैं। **जैसे**–

(i) धोबी ने डंडे से गधे को पीटा। (ii) मालिक ने सामान नौकर द्वारा भिजवाया।

4. **संप्रदान कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कुछ कह दिए जाने या किसी के लिए क्रिया करने का बोध होता हो, उसे संप्रदान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति का चिह्न 'को', 'के लिए' है । **जैसे**–

(i) गरीबों को दान दो। (ii) रवि ने भाई के लिए कपड़े खरीदे।

5. **अपादान कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होना, दूरी, तुलना आदि का बोध हो, उसे अपादान कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति 'से' है। **जैसे**–

(i) पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अलग होना)

(ii) नदियाँ हिमालय से गिरती हैं। (अलग होना)

(iii) दूध से दही बनता है। (उत्पत्ति)

6. **संबंध कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु के दूसरी वस्तु से संबंध का बोध है, उसे संबंध कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति का, की, के, ना, नी, ने तथा रा, री, रे हैं। **जैसे**–

(i) यह मकान मेरा है। (ii) सीता राजा जनक की पुत्री है।

(iii) मोना सुरेश की बहन है। (iv) मोहन का भाई घायल है।

7. **अधिकरण कारक**–संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया का आधार प्रकट हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति में, पर हैं। **जैसे**–

(i) लड़के विद्यालय में हैं। (ii) संजय छत पर पंतग उड़ा रहा है।

(iii) मेंढक कुएँ में हैं।

8. **संबोधन कारक**–वाक्यों में जिन शब्दों से किसी को पुकारा जाए, बुलाया जाए या सचेत किया जाए, उसे संबोधन कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति हे, हो, अरे हैं। **जैसे**–

(i) भाइयो और बहिनो ! देश को तुम्हारी आवश्यकता है।

(ii) हे भगवान् ! हमारी मदद करो।

(iii) बच्चो ! शोर मत करो।

(iv) मनोहर ! इधर आना।

आपने क्या सीखा

1. कारक के आठ भेद होते हैं।
2. विभक्ति का, की, के, ना, नी, ने तथा रा, री, रे का प्रयोग संबंध कारक से है।
3. जिस संज्ञा या सर्वनाम से अलग होना, दूरी, तुलना आदि का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कारक किसे कहते हैं ? कोई दो उदाहरण दीजिए।

_____

_____

(ख) सभी कारकों के नाम तथा उनके चिह्न लिखिए।

_____

_____

(ग) करण, कारक तथा अपादान कारक में क्या अंतर है ?

_____

_____

(घ) अधिकरण कारक किसे कहते हैं ?

_____

_____

2. नीचे कुछ कारकों की विभक्तियाँ हैं, उनके सामने उस कारक का नाम निर्देश करें–

(क) से (अलगाव) _____ (ख) को _____

(ग) पर _____ (घ) ने _____

(ङ) के लिए _____ (च) का _____

3. रेखांकित पदों के कारक लिखिए–

(क) माँ की याद आते ही <u>आँखों से</u> आँसू निकले पड़े। _____

(ख) पेड़ <u>पर</u> मैना थी। _____

(ग) श्यामलाल जी <u>की</u> गाड़ी सफ़ेद है। _____

(घ) यह आप<u>का</u> उपहार है। _____

(ङ) मुझे छिपकली <u>से</u> डर लगता है। _____

(च) <u>अरे</u> सब्ज़ीवाले ज़रा इधर तो आना। _____

4. रिक्त स्थानों पर उपयुक्त कारक चिह्न भरें–

(क) पेड़ _____ फूल गिरते हैं।

(ख) गंगा नदी हिमालय _____ निकलती है।

(ग) गुरु शिष्य _____ पढ़ाते हैं।

(घ) यह राम _____ सुंदर घोड़ा है।

(ङ) सुरेश _____ फल खाया।

5. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) कारकों की कुल संख्या 5 है। ☐

(ख) कर्म कारक की विभक्ति 'को' है। ☐

(ग) अपादन की विभक्ति 'के लिए' है। ☐

(घ) कर्त्ता कारक की विभक्ति 'ने' है। ☐

(ङ) संबंध कारक की विभक्ति 'में, पर' हैं। ☐

6. कारक संबंधी अशुद्धियों को दूर करके उन्हें पुनः लिखिए–

(क) राम ने पेड़ पर पत्ते तोड़े।

_____

(ख) महेश हमको ले गया।

_____

(ग) बिस्तर में मत बैठो।

_____

(घ) प्रमोद चोर पकड़ा।

_____

(ङ) वह राम के लिए घर है।

_____

(च) कृष्ण गरीब को वस्त्र देता है।

_____

(छ) यह दान का पात्र है।

_____

8 विशेषण
(Adjective)

विशेषण की परिभाषा–जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे–सीमा मधुर गीत सुनाती है। इस वाक्य में मधुर शब्द गीत की विशेषता बताता है। अतः यह शब्द विशेषण है।

विशेष्य–विशेषण जिस शब्द की विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं। **जैसे**–मधुर शब्द गीत शब्द की विशेषता बताता है। अतः यहाँ गीत शब्द विशेष्य है।

विशेषण के भेद

विशेषण के मुख्यतः चार भेद हैं–

1. गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)
2. संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)
3. परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)
4. संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)

1. **गुणवाचक विशेषण (Adjective of Quality)**–जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण-दोष आदि का बोध कराए, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं। **जैसे–**

गुण	–	झूठा, बुरा, दयालु, धार्मिक, अच्छा, भला, सरल आदि।
रंग	–	हरा, लाल, नीला, काला आदि।
स्वाद	–	खट्टा, मीठा, कड़वा, चटपटा आदि।
स्थान	–	ऊँचा, नीचा, गहरा, चौड़ा, लंबा आदि।
समय	–	सुबह, शाम, दोपहर, संध्या, रात्रि आदि।
गंध	–	सुगंधित, दुर्गंधयुक्त।
आकार	–	छोटा, बड़ा, मोटा, चौकोर आदि।

2. **संख्यावाचक विशेषण (Adjective of Number)**–जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराए, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे–

(i) मेरे पास चार कमीज़ हैं। (ii) सब बच्चे पढ़ रहे हैं। (iii) क्यारी में कुछ पौधे हैं।

संख्यावाचक विशेषण के दो भाग हैं–

(i) निश्चित संख्यावाचक–**जैसे**–तीन पुस्तकें, पाँच पाण्डव, पाँच मुखी, पाँच तत्व, चतुर्भुज।

(ii) अनिश्चित संख्या वाचक–**जैसे**–कुछ लोग, कुछ पैसे, थोड़े बच्चे आदि।

3. **परिमाणवाचक विशेषण (Adjective of Quantity)**–जो विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या परिमाण का बोध कराए, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। **जैसे–**

(i) दो किलो दाल ले आना।

(ii) आज पाँच लीटर दूध आया।

(iii) मुझे थोड़ा पानी दे दो।

(iv) शर्ट के लिए तीन मीटर कपड़ा दो।

4. **संकेतवाचक विशेषण (Demonstrative Adjective)**–जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की ओर संकेत करते हैं, वो संकेतवाचक शब्द कहलाते हैं। **जैसे–**

(i) वह पुस्तक मेरी है।

(ii) यह लड़का शौकीन है।

विशेषण की अवस्थाएँ

कभी-कभी दो या दो से अधिक वस्तुओं में तुलना की जाती है। तुलना की दृष्टि से विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

1. मूलावस्था (Positive Degree)
2. उत्तरावस्था (Comparative Degree)
3. उत्तमावस्था (Superlative Degree)

1. **मूलावस्था (Positive Degree)**–जहाँ कोई गुण अथवा दोष मुख्य रूप में होता है। **जैसे–**अच्छा, बुरा आदि।
2. **उत्तरावस्था (Comparative Degree)**–जहाँ कोई गुण अथवा दोष मूलावस्था से अधिक या कम होता है। **जैसे–**उससे अच्छा, उससे बुरा, लघुतर आदि।
3. **उत्तमावस्था (Superlative Degree)**–जहाँ कोई गुण अथवा दोष सबसे अच्छा या सबसे बुरा प्रकट होता है। **जैसे–**सबसे अच्छा, सबसे बुरा, मृदुतम, लघुतम आदि।

उदाहरण–

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
लघु	लघुतर	लघुतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
श्रेष्ठ	श्रेष्ठतर	श्रेष्ठतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
महान	महानतर	महानतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम

आपने क्या सीखा

1. जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।
2. विशेषण के चार भेद हैं।
3. तुलना हेतु विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाएँ।
_____

(ख) विशेषण के कितने भेद हैं ?
_____

(ग) सर्वनाम तथा विशेषण में क्या अंतर है?
_____

(घ) संख्यावाचक विशेषण किसे कहते हैं ?
_____

(ङ) विशेषण की कितनी अवस्थाएँ होती हैं ?
_____

2. निम्न वाक्यों में विशेषण शब्द भरिए–

(क) _____ गाय किसकी है ?
(ख) _____ दूध ले जाओ।
(ग) _____ लड़का सो रहा है।
(घ) _____ पुस्तक मेरी है।

3. दिए गए विशेषणों की अवस्थाएँ बताइए–

(क) सर्वोत्तम _____
(ख) प्रियवर _____
(ग) श्रेष्ठ _____
(घ) तीव्रतम _____

4. नीचे दिए गए शब्दों के उत्तमावस्था के रूप लिखिए–

(क) गुरु _____
(ख) प्रिय _____
(ग) उच्च _____
(घ) मधुर _____

9 क्रिया (Verb)

क्रिया की परिभाषा–जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं। किसी भी वाक्य में कर्त्ता तथा क्रिया का होना बहुत आवश्यक है।

जैसे–(i) कुत्ता भौंक रहा है।

(ii) सरिता खेल रही है।

(iii) बच्चा सो रहा है।

इन वाक्यों में कर्म नहीं दिया गया है तथा भौंक रहा, खेल रही, सो रहा आदि क्रियाएँ हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं–

1. अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)
2. सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)

1. **अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb)**–जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म न हो (केवल क्रिया का प्रभाव ही कर्त्ता पर पड़े) तो वह क्रिया अकर्मक क्रिया कहलाती है। **जैसे–**

   (i) सीता सुंदर है।

   (ii) बच्चा हँसता है।

   (iii) सेब मीठा है।

2. **सकर्मक क्रिया (Transitive Verb)**–जब वाक्य में क्रिया के साथ कर्म भी दिया हो, तो वह क्रिया सकर्मक क्रिया कहलाती है। **जैसे–**

   (i) रमेश पुस्तक पढ़ता है।

   (ii) तुम फूल तोड़ते हो ।

   (iii) बच्चे बिस्कुट खाते हैं।

पहचान–वाक्य में क्रिया के साथ 'क्या', 'किस' और 'किसको' प्रश्न करने पर यदि कोई उत्तर मिले तो वह क्रिया 'सकर्मक क्रिया' होती है। यदि उत्तर न मिले तो वह क्रिया 'अकर्मक क्रिया' होती है। सकर्मक क्रिया दो प्रकार की होती हैं–

1. एककर्मक क्रिया (Verb with single object)
2. द्विकर्मक क्रिया (Verb with two objects)

1. **एककर्मक क्रिया**–जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक ही कर्म दिया जाता है उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं। **जैसे–** (i) मोहन ने पैसे दिए। (ii) मैंने पत्र लिखा।

2. **द्विकर्मक क्रिया**–जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे– (i) श्याम ने मोहन को पैसे दिए। (ii) मैंने अपने मित्र को पत्र लिखा।

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के भेद

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के पाँच भेद हैं–

1. संयुक्त क्रिया
2. सामान्य क्रिया
3. नामधातु क्रिया
4. प्रेरणार्थक क्रिया
5. पूर्वकालिक क्रिया

1. **संयुक्त क्रिया**–जहाँ दो या अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग होता है, उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। **जैसे**–(i) सरिता ने खाना पकाया। (ii) मैं अब पढ़ सकता हूँ।

2. **सामान्य क्रिया**–जहाँ वाक्य में केवल एक क्रिया का प्रयोग होता है, वह सामान्य क्रिया कहलाती है। **जैसे**–(i) वह हँसता है। (ii) वे चले गए।

3. **नामधातु क्रिया**–जहाँ वाक्य में प्रयुक्त क्रियाएँ संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि से बनती हैं, तब ये नामधातु क्रिया कहलाती हैं। **जैसे**–हथियाना, गर्माना, झुठलाना आदि।

4. **प्रेरणार्थक क्रिया**–जहाँ वाक्य में कर्त्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को काम के लिए प्रेरित करता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। **जैसे**–(i) पंकज धोबी से कपड़े धुलवाता है।

   (ii) माँ बच्चे को दूध पिलाती है।

ये क्रियाएँ दो प्रकार की हैं–

   (i) प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्त्ता स्वयं भी कार्य में शामिल होते हुए प्रेरणा देता है, उसे प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

   (ii) द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया–जब कर्त्ता स्वयं कार्य न करके दूसरे को ही कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, उसे द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं।

5. **पूर्वकालिक क्रिया**–मुख्य क्रिया से पूर्व यदि किसी दूसरी क्रिया का प्रयोग हो तो वह पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। **जैसे**–(i) छात्र काम करके घर गए। (ii) वह दौड़कर स्कूल पहुँचा।

आपने क्या सीखा

1. जिस शब्द से किसी काम का करना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।
2. क्रिया के दो भेद होते हैं–
   (i) सकर्मक क्रिया, (ii) अकर्मक क्रिया।
3. प्रयोग के आधार पर क्रिया के पाँच भेद बताए गए हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) क्रिया किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) अकर्मक क्रिया किसे कहते हैं ?

(ग) पूर्वकालिक क्रिया क्या है ?

(घ) सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में क्या भेद है ?

2. सकर्मक तथा अकर्मक क्रियाएँ छाँटकर लिखिए–

(क) विजय सो रहा है।
(ख) रमेश घर जा रहा है।
(ग) बच्चा रो रहा है।
(घ) देवेन्द्र पत्र लिख रहा है।

सकर्मक क्रियाएँ–

अकर्मक क्रियाएँ–

3. अंतर बताइए–

(क) सामान्य तथा संयुक्त क्रिया में –
(ख) प्रेरणार्थक तथा नामधातु क्रिया में–

4. पाठ से पाँच क्रियाएँ छाँटकर लिखिए–

5. नीचे दिए गए वाक्यों में से प्रेरणार्थक तथा पूर्वकालिक क्रियाएँ छाँटकर लिख दीजिए–

(क) वह खाकर सोता है।
(ख) माँ बच्चे को दूध पिलाती है।
(ग) छात्र काम करके घर गए।
(घ) पढ़कर क्या करोगे ?
(ङ) उसने पेड़ लगवा दिए।

प्रेरणार्थक

पूर्वकालिक

10 वाच्य (Voice)

परिभाषा–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके लिंग तथा वचन का प्रयोग कर्त्ता, कर्म या भाव में से किसके अनुसार किया गया है, वह वाच्य कहलाता है।

वाच्य के भेद

हिंदी भाषा में तीन प्रकार के वाच्य होते हैं–

1. **कर्तृवाच्य (Active Voice)**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसका प्रयोग कर्त्ता के लिंग तथा वचन के अनुरूप किया गया है उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। **जैसे**–(i) रमा गाना गाती है। (ii) मदन बॉल से खेलता है।
2. **कर्मवाच्य (Passive Voice)**–क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि वाक्य में उसका प्रयोग कर्त्ता के लिंग व वचन के अनुसार न होकर कर्म के लिंग, वचन के अनुसार किया गया है, उसे कर्मवाच्य कहते हैं। **जैसे**–(i) गुड़िया से दूध नहीं पिया गया। (ii) रमेश से पढ़ा नहीं जाता है।
3. **भाववाच्य (Impersonal Voice)**–क्रिया के जिस रूप में कर्त्ता तथा कर्म की प्रधानता न होकर केवल भाव की प्रधानता हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। इस वाच्य के वाक्य सदैव नकारात्मक ही होते हैं। **जैसे**–(i) बूढ़े व्यक्ति से चला नहीं जाता। (ii) गर्मी में घूमा नहीं जाता।

वाच्य परिवर्तन

1. कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन–

(i) क्रिया में 'आ' अथवा 'या' जोड़ते हैं तथा उसके बाद 'जा' धातु का कर्म के लिंग, वचन, काल तथा पुरुष के अनुसार प्रयोग करते हैं।

(ii) कर्त्ता के साथ 'से', 'द्वारा' या 'के द्वारा' जोड़ते हैं।

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
1. रमेश पुस्तक पढ़ता है।	1. रमेश के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
2. मोनी पौधे लगाती है।	2. मोनी के द्वारा पौधे लगाए जाते हैं।
3. सरिता गाना गाती है।	3. सरिता द्वारा गाना गाया जाता है।

2. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन–

(i) क्रिया को अन्य पुरुष एकवचन में कर देते हैं तथा कर्त्ता के साथ 'से' जोड़ देते हैं।

(ii) क्रिया को भूतकाल में बदल देते हैं। काल के अनुसार 'जाना' क्रिया का सही रूप जोड़ देते हैं।

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
1. वह नहीं लिखता है।	1. उससे नहीं लिखा जाता।
2. बच्चा नहीं सोता है।	2. बच्चे से सोया नहीं जाता।
3. बालक नहीं दौड़ता है।	3. बालक से दौड़ा नहीं जाता।
4. रमेश नहीं खाता है।	4. रमेश से खाया नहीं जाता।

आपने क्या सीखा

1. क्रिया के जिस रूप से उसके लिंग एवं वचन की जानकारी प्राप्त होती है, उसे वाच्य कहते हैं।
2. वाच्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं।
3. वाच्य परिवर्तन में तीनों वाच्यों को एक-दूसरे वाच्य में परिवर्तित किया जा सकता है।

अभ्यास

1. वाच्य किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

_____

_____

2. कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में क्या अंतर है ?

_____

_____

3. नीचे दिए वाच्यों को कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) रमा गाना गाती है। _____

(ख) रमेश पुस्तक पढ़ता है। _____

(ग) तुम झूठ बोलते हो। _____

(घ) मोना पौधा लगाती है। _____

(ङ) वह दौड़ता है। _____

4. भाववाच्य में बदलिए–

(क) बच्चा खेलता है।

_____

(ख) वह नहीं पढ़ता है।

_____

(ग) बालक दौड़ता है।

_____

(घ) हम जल्दी जाएँगे।

_____

(ङ) रमेश सोता है।

_____

5. कर्तृवाच्य से भाववाच्य में बदलते समय क्या परिवर्तन होता है ? सोदाहरण स्पष्ट करके लिखिए।

_____

_____

6. कर्मवाच्य में बदलिए–

(क) माता जी ने बच्चों को कंबल दिए।

_____

(ख) तुम व्याकरण की पुस्तक पढ़ते हो।

_____

(ग) आज हमने क्रिकेट खेला।

_____

(घ) प्रतिवर्ष स्वास्थ्य-सेवाओं पर सरकार योजनाएँ बनाती है।

_____

7. दिए गए वाच्यों के नाम लिखिए–

(क) शीना ने सेवक को थैला पकड़ाया। _____

(ख) पुलिस के द्वारा ठग पकड़े गए। _____

(ग) मुझसे लिखा नहीं जाता। _____

(घ) बच्चे पतंग उड़ा रहे हैं। _____

(ङ) चंद्रशेखर आजाद ने आंदोलन चलवाया था। _____

11 क्रिया-विशेषण (Adverb)

परिभाषा–जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट होती है, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं। जैसे–

(i) कल तक यह गृहकार्य कर लेगा।

(ii) वह बहुत बोलता है।

(iii) नेता लोग आगे-आगे चलते हैं।

ऊपर दिए वाक्यों में कल, बहुत, आगे-आगे शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं। ऐसे शब्द क्रिया-विशेषण शब्द हैं।

क्रिया-विशेषण के भेद

हिंदी भाषा में क्रिया-विशेषण निम्न हैं–

1. कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)
2. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)
3. स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)
4. रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)

1. **कालवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Time)**–जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के होने के समय का बोध हो, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। **जैसे–**(i) वह शाम से पढ़ रहा है। (ii) श्रमिक दिनभर कड़ी मेहनत करता है। (iii) रमा कल यहाँ से जाएगी।

2. **परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Quantity)**–जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया के परिमाण या मात्रा को बोध हो उसे परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। **जैसे–**(i) वह बहुत कम पढ़ता है। (ii) उसे थोड़ा रुपया दे दो। (iii) उसे पाँच मीटर कपड़ा दे दो।

3. **स्थानवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Place)**–जिस क्रिया-विशेषण से किसी होने वाले कार्य स्थान का बोध हो, उसे स्थानवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। **जैसे–**(i) वह घर के अंदर पढ़ता है। (ii) तुम यहाँ सोते हो। (iii) मोहन तुम कहाँ जा रहे हो ?

4. **रीतिवाचक क्रिया-विशेषण (Adverb of Manner)**–जिस क्रिया-विशेषण द्वारा क्रिया के होने वाली रीति का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। **जैसे–**(i) वह तेज़ी से दौड़ता है। (ii) बच्चा अचानक जाग गया। (iii) ध्यान से पढ़ना चाहिए। (iv) वह सचमुच अच्छा लड़का है।

आपने क्या सीखा

1. जिस शब्द से क्रिया की विशेषता प्रकट होती है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।
2. क्रिया-विशेषण के चार भेद होते हैं।
3. स्थानवाचक क्रिया विशेषण में कार्य के स्थान का बोध होता है।
4. परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण द्वारा क्रिया की मात्रा का सही बोध होता है।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) 'क्रिया-विशेषण' किसे कहते हैं ?

(ख) 'क्रिया-विशेषण' कितने प्रकार के होते हैं ?

(ग) विशेषण तथा क्रिया-विशेषण में भेद बताइए।

(घ) परिमाणवाचक एवं रीतिवाचक क्रिया-विशेषण में क्या अंतर है ?

2. निम्नलिखित में से क्रिया-विशेषण शब्द छाँटकर लिखिए–

(क) वह रातभर पढ़ता रहा।

(ख) राधा कल यहाँ से जाएगी।

(ग) उसे थोड़ा रुपया दे दो।

(घ) श्रमिक दिनभर मेहनत करता रहा।

(ङ) तुम यहाँ सोते हो।

3. निम्नलिखित क्रिया-विशेषणों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

धीरे-धीरे –

थोड़ा –

सामने –

अचानक –

जल्दी –

निरंतर –

4. नीचे दिए वाक्यों में विशेषण तथा क्रिया-विशेषण छाँटकर लिखिए–

(क) रमा सुंदर लिखती है।

(ख) वह बहुत खाता है।

(ग) कृष्ण तेज़ बालक है।

(घ) कृष्णा अच्छा गाती है।

(ङ) वह रातभर गाता रहा।

(च) थोड़ा आराम कीजिए।

विशेषण –

क्रिया-विशेषण –

12 उपसर्ग (Prefix)

परिभाषा–वह शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देता है, उपसर्ग कहलाता है। हिंदी में उपसर्ग बहुत कम होते हैं। ये या तो संस्कृत के होते हैं या उर्दू के।

उपसर्ग के भेद

हिंदी भाषा के पाँच प्रकार के उपसर्ग होते हैं–

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. उर्दू के उपसर्ग
4. उपसर्ग की भाँति प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत अव्यय
5. अंग्रेज़ी के उपसर्ग

1. संस्कृत के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति	अधिक	अत्याचार, अतिरिक्त।
परा	पीछे, उल्टा	पराजय, पराधीन, परामर्श।
अन्	नहीं, अभाव	अनाचार, अनेक, अनादर।
उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्तम, उत्साह, उद्धार।
अनु	समान, पीछे	अनुसरण, अनुरूप, अनुसार।
अव	बुरा, नीचा	अवगुण, अवनति, अवशेष।
प्र	अधिक, आगे	प्रबल, प्रस्थान, प्रहार।
उप	छोटा, समीप	उपकार, उपदेश, उपवन।
नि	नीचे, निषेध	निमग्न, निबंध, निपात।
दुर	बुराई, हीन	दुर्गुण, दुर्गम, दुर्बल।
प्रति	हरएक, सामने	प्रतिदिन, प्रतिनिधि, प्रतिकूल।
सह	साथ	सहपाठी, सहयोगी, सहयात्री।
स्व	अपना	स्वदेश, स्वजन, स्वभाव।
सम्	समान	संबंध, संसार आदि।

2. हिंदी के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	बिना, निषेध	अज्ञान, अनपढ़, अचेत।
औ	हीनता, रहित	औगुण, औतार, औघट।
अध	आधा	अधपका, अधखिला, अधमरा।
नि	अभाव	निकम्मा, निहत्था, निडर।
कु	बुरा	कुढंग, कुचाल, कुमार्ग।
दु	हीन, बुरा	दुबला, दुकान, दुलारा।

3. उर्दू के उपसर्ग–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
बा	सहित, साथ	बाकायदा, बाइज़्ज़त।
ला	रहित	लाइलाज, लाजवाब, लाचार।
ना	निषेध, नहीं	नासमझ, नापसंद, नालायक।
सर	श्रेष्ठ, मुख्य	सरकार, सरदार, सरहद।
हम	समान, साथ	हमउम्र, हमराज़, हमदर्द।
खुश	प्रसन्न	खुशदिल, खुशहाल, खुशबू।
बर	ऊपर	बरदाश्त, बरख़ास्त, बराबर।
ऐन	पूरा	ऐनवक्त, ऐनजवानी।

4. उपसर्गों की तरह प्रयोग किए जाने वाले संस्कृत अव्यय–

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कु	बुरा	कुपुत्र, कुमार्ग, कुरूप।
स	सहित	ससंदर्भ, सपरिवार, सजल।
अधः	नीचे	अधोगति, अधोमुख।
पुनः	फिर	पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण।
सह	साथ	सहपाठी, सहकर्मी, सहयात्री।
इति	ऐसा	इतिहास, इतिश्री।

5. अंग्रेज़ी उपसर्ग–

सब–सब इंस्पेक्टर, सब रजिस्ट्रार।

डिप्टी–डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी मैनेजर।

वाइस–वाइस एडमिरल, वाइस प्रेसीडेंट, वाइस प्रिंसिपल।

आपने क्या सीखा

1. वे शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर अर्थ में परिवर्तन करते हैं, उपसर्ग कहलाते हैं।
2. हिंदी में प्रायः पाँच प्रकार के उपसर्गों का प्रयोग होता है।

अभ्यास

1. 'उपसर्ग' किसे कहते हैं, स्पष्ट करके लिखिए।

_____

_____

2. उपसर्ग के कितने भेद हैं, प्रत्येक के उदाहरण दीजिए।

_____

_____

3. नीचे दिए गए शब्दों में से उपसर्ग तथा उसके मूल शब्द को अलग-अलग करके लिखिए–

उपवन, कुरूप, दुराचार, सुमार्ग, सहपाठी, उत्साह।

उपसर्ग – _____

मूल शब्द – _____

4. नीचे लिखे उपसर्गों द्वारा तीन-तीन नए शब्द बनाइए–

उप, प्र, सु, अन, ला, अधः, अति, कु।

_____

5. निम्नलिखित शब्दों में से उपसर्गों को अलग करके लिखिए–

उपप्रधान, सुपुत्र, नालायक, सब-डिप्टी, सहचर, प्रत्येक।

_____

6. नीचे दिए उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाकर लिखिए–

उपसर्ग		शब्द	नए शब्द
दुः	+	लभ	_____
प्रति	+	एक	_____
सत्	+	संग	_____
सु	+	मित्र	_____
नि	+	डर	_____
बे	+	परवाह	_____
स्व	+	इच्छा	_____
अन	+	पढ़	_____

13 प्रत्यय (Suffix)

प्रत्यय की परिभाषा–जो शब्दांश शब्दों के अंत में लगकर उनके अर्थ को बदल देते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे– चाल = चालू – ऊ

लिख = लिखने वाला – ने वाला

बढ़ = बढ़िया – इया

प्रत्यय के भेद

हिंदी भाषा में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–

1. कृदंत प्रत्यय
2. तद्धित प्रत्यय

1. **कृदंत प्रत्यय**–क्रिया की धातु के अंत में लगने वाले शब्दांश को कृदंत प्रत्यय कहते हैं। **जैसे**–भागता, लिखता आदि।

कृदंत प्रत्यय के प्रकार–

कृदंत प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं–

(i) कर्तृवाचक प्रत्यय–ऐसे प्रत्यय जो क्रिया करने वाले का बोध कराएँ, उन्हें कर्तृवाच्य प्रत्यय कहते हैं। **जैसे**–

हुआ	–	खाया हुआ, सोया हुआ, पका हुआ।
ऐया	–	नचैया, खिलैया, गवैया।
सार	–	मिलनसार, चलनसार।
लू	–	झगड़ालू, चालू।
वाला	–	पढ़ने वाला, लिखने वाला, भागने वाला।

(ii) कर्मवाचक प्रत्यय–वे कृदंत जो सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत में 'हुआ' या 'हुई' लगने से बनें, वे कर्मवाचक प्रत्यय कहलाते हैं। **जैसे**–ना, नी–खोना, सूँघना आदि।

(iii) भाववाचक प्रत्यय–ये प्रत्यय भाववाचक संज्ञा का काम करते हैं तथा क्रिया के अंत में आ, आई, आन, आप, त, ती, न, नी, पन, र आदि लगाकर बनते हैं।**जैसे**–

आई	–	लड़ाई, सुनाई, पढ़ाई।
आव	–	चढ़ाव, लिखाव, बहाव।
आन	–	लगान, उड़ान, ढलान।
आवट	–	लिखावट, बनावट, दिखावट।
ई	–	बोली, खेली, हँसी।
त	–	बचत, खपत, बनत।

(iv) करणवाचक प्रत्यय–ये क्रिया के अंत में ना, आ, ई, नी, ऊ, आदि लगाने से बनते हैं। **जैसे**–

आ	–	घेरा, ठेला, भाला, झूला।
न	–	बंधन, बेलन, झारन।
ऊ	–	झाड़ू, साढ़ू।
ई	–	चिमटी, रेती, फाँसी।

(v) क्रियावाचक प्रत्यय–इन प्रत्ययों से क्रिया के अर्थ का ज्ञान होता है। **जैसे**–पढ़ता हुआ, हँसता हुआ, सोता हुआ आदि।

2. **तद्धित प्रत्यय**–ऐसे प्रत्यय जो संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण के अंत में लगकर नए शब्द की रचना करते हैं, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं।

तद्धित प्रत्यय के प्रकार–

तद्धित प्रत्यय भी पाँच प्रकार के होते हैं–

(i) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय–

इया	–	मुखिया, दिवालिया।
वाला	–	लकड़ीवाला, सब्ज़ीवाला।
ई	–	तेली, सहेली, माली।
गर	–	बाजीगर, जादूगर, सौदागर।

(ii) भाववाचक संज्ञा बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

आई	–	भलाई, चतुराई, बुराई।
ई	–	गर्मी, खेती, रेती।
ता	–	सुंदरता, प्रभुता, लघुता।
आपा	–	मोटापा, बुढ़ापा।

(iii) लघुवाचक तद्धित प्रत्यय–

ई	–	झंडी, डंडी, रस्सी।
इया	–	लुटिया, डिबिया।

(iv) विशेषण बनाने वाले तद्धित प्रत्यय–

ऊ	–	बाज़ारू, झगड़ालू।
वाँ	–	दसवाँ, सातवाँ।
आ	–	प्यासा, प्यारा।

(v) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय–

ई	–	गुजराती, पंजाबी।
इया	–	मुंबइया, नागपुरिया।

आपने क्या सीखा

1. जो शब्दांश किसी शब्द के अंत में लगाए जाते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं।
2. प्रत्यय के दो भेद बताए गए हैं।
3. कृदंत प्रत्यय पाँच प्रकार के हैं।
4. संज्ञा के अंत में तथा क्रिया के अंत में प्रत्यय लगते हैं।

अभ्यास

1. प्रत्यय किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित समझाइए।

_____

_____

2. उपसर्ग तथा प्रत्यय में क्या अंतर है ?

_____

_____

3. उचित प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए–

देव, दानव, पशु, लड़का, लोभ, कृपण।

_____

4. नीचे दिए शब्दों में मूल शब्द तथा प्रत्यय अलग करके लिखिए–

सुंदरता, खेती, मुखिया, दयालु, गुरुत्व, माली।

_____

मूल शब्द – _____

प्रत्यय – _____

5. निम्नांकित शब्दों में दिए हुए प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाएँ–

शब्द		प्रत्यय	नए शब्द
दानव	+	ता	_____
प्र	+	काश	_____
मोटा	+	ई	_____
इतिहास	+	इक	_____
पढ़	+	आई	_____

14 वाक्य-विचार (Syntax)

वाक्य की परिभाषा–शब्दों के ऐसे समूह जो शब्दों का पूरा-पूरा अर्थ प्रकट करते हैं, उन्हें वाक्य कहते हैं। जैसे–(i) हिमांशु ने रवि को मारा। (ii) सुरेश फ़ुटबॉल खेलता है। (iii) रमेश कक्षा में प्रथम आया। यहाँ तीनों वाक्य अपने आप में सार्थक हैं। तीनों का अर्थ अलग-अलग है। अतः तीनों शब्द समूहों को व्याकरण के आधार पर वाक्य कहेंगे।

वाक्य के दो अंग हैं–

1. **उद्देश्य**–वाक्य में जिसके संबंध में जो बात कही गई हो, उसे उद्देश्य कहते हैं। **जैसे**–सुरेश फ़ुटबॉल खेलता है। इस वाक्य में सुरेश उद्देश्य है।
2. **विधेय**–वाक्य में उद्देश्य से संबंधित जो बात कही गई हो, उसे विधेय कहते हैं। **जैसे**–सुरेश फ़ुटबॉल खेलता है। इस वाक्य में विधेय ''फ़ुटबॉल खेलता है'' है।

वाक्य के भेद

हिंदी भाषा में वाक्य के निम्नलिखित तीन भेद होते हैं–

1. साधारण वाक्य (Simple Sentences)
2. संयुक्त वाक्य (Compound Sentences)
3. मिश्रित वाक्य (Complex Sentences)

1. **साधारण वाक्य (Simple Sentences)**–जिस वाक्य में केवल एक ही उद्देश्य तथा एक ही क्रिया हो, उसे साधारण वाक्य कहते हैं। **जैसे**–(i) सोनल पुस्तक लिखती है। (ii) वे स्कूल जाते हैं।
2. **संयुक्त वाक्य (Compound Sentences)**–जब दो या दो से अधिक साधारण वाक्य समुच्चयबोधक से जुड़ जाते हैं, तो वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। **जैसे–**

(i) अजय आया और तुरंत चला गया। (ii) वह स्कूल से भाग गया और अपने गाँव चला गया।
(iii) वह चोरी करता है लेकिन डरता भी है।

इन वाक्यों में उपवाक्य और, लेकिन समुच्चयबोधक शब्दों से जुड़े हैं। ऐसे वाक्य 'संयुक्त वाक्य' कहलाते हैं।

3. **मिश्रित वाक्य (Complex Sentences)**–जब किसी विषय पर कई साधारण वाक्यों को मिलाकर एक नए वाक्य की रचना होती है, तो ऐसे वाक्यों को मिश्रित वाक्य कहते हैं। **जैसे–**

(i) जो परिश्रम करता है वह फल पाता है।
(ii) जब धन आता है, तो मनुष्य अभिमानी हो जाता है।
(iii) जो विद्यार्थी लगन से पढ़ते हैं, वही परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं।
(iv) जो व्यक्ति विद्वान होता है, उसे सभी स्थानों पर पूजा जाता है।

मिश्रित वाक्य में एक उपवाक्य होता है और दूसरा आश्रित वाक्य। पहले वाक्य में 'जो परिश्रम करता है', मुख्य उपवाक्य तथा 'वह फल पाता है', आश्रित वाक्य कहलाता है।

आपने क्या सीखा

1. शब्दों के ऐसे समूह जो पूरा-पूरा अर्थ प्रकट करते हैं वाक्य कहलाते हैं।
2. वाक्य के दो अंग–विधेय और उद्देश्य हैं।
3. वाक्य के मुख्यतः तीन भेद हैं।

अभ्यास

1. वाक्य की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

_____

2. वाक्य के कितने अंग हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

_____

3. नीचे दिए वाक्यों में उद्देश्य तथा विधेय को अलग-अलग करके लिख दीजिए–

(क) सोनल पुस्तक लिखती है।

उद्देश्य – _____ विधेय – _____

(ख) सीता चली गई।

उद्देश्य – _____ विधेय – _____

(ग) सोहन छाया में सोया है।

उद्देश्य – _____ विधेय – _____

(घ) कपड़े सूख गए हैं।

उद्देश्य – _____ विधेय – _____

(ङ) सुरेश फ़ुटबॉल खेलता है।

उद्देश्य – _____ विधेय – _____

4. अंतर बताइए–

(क) उद्देश्य और विधेय में

_____

(ख) साधारण वाक्य तथा मिश्रित वाक्य में

_____

(ग) मिश्रित वाक्य तथा संयुक्त वाक्य में

_____

5. निम्न वाक्यों के प्रकार लिखिए–

(क) जो परिश्रम करता है वही सफल होता है। _____

(ख) वे स्कूल जाते हैं। _____

(ग) अजय आया और शीघ्र चला गया। _____

15 संधि-विचार
(Euphonic Combination)

संधि की परिभाषा–दो समीप स्थित अक्षरों या वर्णों के पारस्परिक मेल को संधि कहते हैं। जैसे–प्रति + एक = प्रत्येक। सु + आगतम् = स्वागतम्।

संधि के प्रकार

संधि तीन प्रकार की होती हैं–

1. स्वर संधि
2. व्यंजन संधि
3. विसर्ग संधि

1. **स्वर संधि**–दो स्वर अक्षरों से मिलने से जो परिवर्तन होता है उसे स्वर संधि कहते हैं। जैसे–देव + इन्द्र = देवेन्द्र।

ये निम्नलिखित पाँच प्रकार की होती हैं–

(i) दीर्घ संधि–जब दो समान स्वर पास-पास आएँ तो उनके मेल से एक दीर्घ स्वर बनता है, उसे दीर्घ संधि कहते हैं। **जैसे–**

राम	+	अवतार	=	रामावतार
हिम	+	आलय	=	हिमालय
तथा	+	अपि	=	तथापि
महा	+	आशय	=	महाशय
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय

(ii) गुण संधि–जब अ, आ का संयोग ई, इ तथा ऋ से होता है, तो ए, ओ और अर् हो जाते हैं, इसे गुण संधि कहते हैं। **जैसे–**

अ	+	इ	=	ए	देव	+	इन्द्र	=	देवेन्द्र
अ	+	इ	=	ए	परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर
आ	+	ई	=	ए	गण	+	ईश	=	गणेश
अ	+	उ	=	ओ	नर	+	उत्तम	=	नरोत्तम
अ	+	ऊ	=	ओ	सूर्य	+	ऊर्जा	=	सूर्योर्जा

(iii) वृद्धि संधि–जब अ, आ का ऐ से मिलने पर 'ऐ' तथा अ, आ का ओ, औ से मिलने पर 'औ' हो जाता है, तो इसे वृद्धि संधि कहते हैं। **जैसे–**

अ	+	ए	=	ऐ	तथा	+	एव	=	तथैव
अ	+	ऐ	=	ऐ	मत	+	ऐक्य	=	मतैक्य
अ	+	ओ	=	औ	महा	+	ओज	=	महौज
अ	+	औ	=	औ	परम	+	औदार्य	=	परमौदार्य
आ	+	औ	=	औ	महा	+	औषधः	=	महौषधः

(iv) यण् संधि–दीर्घ इ, उ, ऋ के पश्चात् यदि अन्य असमान स्वर आता है तब इ, ई, को 'य्', उ, ऊ को 'व्' और ऋ को 'र्' हो जाता है। इसे ही यण् संधि कहते हैं। **जैसे**–

इ	+	अ	=	य	अति	+	अधिक	=	अत्यधिक
इ	+	आ	=	या	अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक
इ	+	उ	=	यु	अति	+	उत्तम	=	अत्युत्तम
उ	+	आ	=	वा	सु	+	आगतम्	=	स्वागतम्
उ	+	अ	=	व	मधु	+	अरि	=	मध्वरि

(v) अयादि संधि–यदि ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् कोई भिन्न स्वर आए, तो इनके स्थान पर क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् हो जाता है तथा बाद के स्वर उसमें मिल जाते हैं। **जैसे**–

ए	+	अ	=	अय	ने	+	अन	=	नयन
ऐ	+	अ	=	आय	नै	+	अक	=	नायक
ओ	+	अ	=	अव	पो	+	अन	=	पवन
ओ	+	इ	=	अवि	पो	+	इत्र	=	पवित्र
औ	+	इ	=	आवि	नौ	+	इक	=	नाविक

2. व्यंजन संधि–व्यंजन के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने को व्यंजन संधि कहते हैं। **जैसे**–(i) उत् + ज्वल = उज्जवल। (ii) वाक् + ईश = वागीश।

व्यंजन संधि के नियम–

(i) वर्णों के वर्गों के प्रथम वर्ण (क, च, ट, त, प) के बाद कोई स्वर अथवा किसी वर्ग का तृतीय या चतुर्थ वर्ण अथवा अंतःस्थ (य, र, ल, व) वर्ण हो तो प्रथम वर्ण का अपने वर्ग का तृतीय वर्ग हो जाता है। जैसे–

क्	+	अ	=	ग	दिक्	+	अम्बर	=	दिगम्बर
क्	+	ग	=	ग्ग	दिक्	+	गज	=	दिग्गज
क्	+	ई	=	गी	वाक्	+	ईश	=	वागीश

(ii) किसी वर्ण के प्रथम वर्ण के बाद पंचम वर्ण रहने पर प्रथम वर्ण को अपने वर्ग का पंचम वर्ण हो जाता है। **जैसे**–

त् का न्		जगत्	+	नाथ	=	जगन्नाथ।
त् + म = न्म		तत्	+	मय	=	तन्मय।

(iii) यदि त् या द् के बाद वर्ण 'श' हो, तो 'त्', 'द्' के स्थान पर 'च' तथा 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है। **जैसे–**

(त् को च् तथा शा को छा)	सत्	+	शास्त्र	=	सच्छास्त्र
(त् को च् तथा शि को छि)	उत्	+	शिष्ट	=	उच्छिष्ट

(iv) यदि त् या द् के बाद 'ह' हो तो 'त्' के स्थान पर 'द्' और 'ह' के स्थान पर 'ध' हो जाता है। **जैसे–**

उत्	+	हार	=	उद्धार
तत्	+	हित	=	तद्धित

(v) यदि 'त्' अथवा 'द्' के बाद च वर्ग, ट वर्ग हो तो उसके स्थान पर क्रमशः च वर्ग, ट वर्ग या लकार हो जाता है। **जैसे–**

सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
उत्	+	चारण	=	उच्चारण
तत्	+	टीका	=	तट्टीका

(vi) यदि 'म्' के बाद अंतःस्थ, स्पर्श या ऊष्म किसी का भी कोई वर्ण हो, तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है। **जैसे–**

सम्	+	सार	=	संसार
सम्	+	चय	=	संचय
सम्	+	योग	=	संयोग

(vii) अ, इ, उ, के आगे 'छ' आए, तो मध्य में 'च्' का योग हो जाता है। **जैसे–**

परि	+	छेद	=	परिच्छेद
अव	+	छेद	=	अवच्छेद

3. विसर्ग संधि–विसर्ग (ः) के साथ स्वर या व्यंजन के मिलने पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहा जाता है।

विसर्ग संधि के नियम–

(i) विसर्ग से पूर्व यदि 'अ' आए तथा किसी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण तथा य, र, ल, व, श में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का 'ओ' बन जाता है। **जैसे–**

मनः	+	अनुकूल	=	मनोनुकूल
यशः	+	अभिलाषी	=	यशोभिलाषी
अधः	+	गति	=	अधोगति
तपः	+	बल	=	तपोबल

(ii) यदि विसर्ग के पूर्व 'अ', 'आ' को छोड़कर अन्य कोई स्वर हो तथा बाद में कोई कोमल व्यंजन हो, तो विसर्ग का र् हो जाता है। **जैसे–**

निः	+	उपाय	=	निरुपाय
दुः	+	उपयोग	=	दुरुपयोग
दुः	+	आत्मा	=	दुरात्मा
निः	+	बुद्धि	=	निर्बुद्धि

(iii) यदि किसी विसर्ग के बाद में 'र' हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है तथा उसके पूर्व का स्वर दीर्घ हो जाता है। **जैसे–**

निः	+	रोग	=	नीरोग
निः	+	रज	=	नीरज
निः	+	रस	=	नीरस
निः	+	रव	=	नीरव

(iv) यदि विसर्ग के बाद 'श', 'ष', 'स' आए, तो विसर्ग श् या स् बन जाते हैं। **जैसे–**

निः	+	सार	=	निस्सार
निः	+	शब्द	=	निश्शब्द
निः	+	संदेह	=	निस्संदेह

(v) विसर्ग से परे 'त्' या 'श्' हो तो विसर्ग का 'स्' हो जाता है। **जैसे–**

निः	+	तेज	=	निस्तेज।
नमः	+	ते	=	नमस्ते।
दुः	+	साहस	=	दुस्साहस।

आपने क्या सीखा

1. दो शब्दों के पारस्परिक मेल से जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।
2. संधि तीन प्रकार की होती हैं।
3. स्वर संधि छः प्रकार की होती है।

अभ्यास

1. संधि किसे कहते हैं, सोदाहरण समझाइए।

_____

_____

2. संधि के कितने भेद हैं ? प्रत्येक का नाम लिखिए।

_____

_____

3. स्वर संधि तथा व्यंजन संधि के चार-चार उदाहरण दें–

स्वर संधि– _____

व्यंजन संधि– _____

4. स्वर संधि के अंतर्गत आने वाली संधियों के नाम लिखते हुए उनमें संधि भी कीजिए–

संधि विग्रह		संधि	संधि का रूप		
जैसे–	सदा	+ एव	=	सदैव	वृद्धि स्वर
रमा	+	ईश	=	_____	_____
विद्या	+	अर्थी	=	_____	_____
मधु	+	अरि	=	_____	_____
पो	+	अन	=	_____	_____

5. संधि विच्छेद कीजिए–

नमस्ते	=	_____	कवीश	=	_____
जगदीश	=	_____	महर्षि	=	_____
नीरोग	=	_____	नाविक	=	_____
दिगम्बर	=	_____	गणेश	=	_____

6. नीचे दिए शब्दों के सम्मुख स्वर, व्यंजन तथा विसर्ग संधि छाँटकर लिखिए–

मनोरथ	_____	अधोगति	_____
नगेन्द्र	_____	वागीश	_____
संसार	_____	नायक	_____

16 समास-विचार
(Word Combination)

परिभाषा–दो या दो से अधिक शब्दों से मिलाकर एक शब्द में संक्षिप्त कर देने को समास कहते हैं। जैसे–यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार। हवन-सामग्री = हवन के लिए सामग्री।

समस्त पद–दो शब्दों के जोड़ने से बने नए शब्द को समस्त-पद कहते हैं। **जैसे**–वाल्मीकि रचित।

समास विग्रह–समस्त पद के बीच के संबंध को स्पष्ट करना समास विग्रह कहलाता है।

समास के भेद

हिंदी भाषा में समास के छः भेद होते हैं–

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. बहुव्रीहि समास
6. द्वंद्व समास

1. **अव्ययीभाव समास**–जिस समास में प्रथम पद प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। **जैसे**–

   यथासमय = समय के अनुसार।

   यथाशक्ति = शक्ति के अनुसार।

2. **तत्पुरुष समास**–जिस समास में दूसरा प्रधान पद होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं। ये छः प्रकार के होते हैं-

   (i) कर्म तत्पुरुष–इसमें 'को' का लोप हो जाता है। **जैसे**–जेब को काटने वाला = जेबकतरा।

   मन को हरने वाला = मनोहर।

   (ii) करण तत्पुरुष–इसमें 'से' 'द्वारा' का लोप हो जाता है। **जैसे**–मन से माना = मनमाना। वाल्मीकि द्वारा कृत = वाल्मीकि कृत।

   (iii) संप्रदान तत्पुरुष–इसमें 'के लिए' का लोप हो जाता है। **जैसे**–गुरुओं के लिए दक्षिणा = गुरु दक्षिणा। मार्ग के लिए व्यय = मार्गव्यय।

   (iv) अपादान तत्पुरुष–इसमें 'से' का लोप हो जाता है। **जैसे**–काम से जी चुराने वाला = कामचोर। कर्म से हीन = कर्महीन।

   (v) संबंध तत्पुरुष–इसमें 'का', 'की', 'के' का लोप हो जाता है। **जैसे**–गंगा का जल = गंगाजल। सेना का नायक = सेनानायक।

(vi) अधिकरण तत्पुरुष–इसमें 'में', 'पर' का लोप हो जाता है। **जैसे**–घोड़े पर सवार = घुड़सवार। पेट में दर्द = पेटदर्द।

3. **कर्मधारय समास**–जिसमें विशेषण-विशेष्य का संबंध होता है, उसे कर्मधारय समास कहते हैं। **जैसे**–नीलकमल = नीला है कमल। पीतवस्त्र = पीला है वस्त्र जिसका।

4. **द्विगु समास**–जिसमें पहला अक्षर संख्यावाची हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। **जैसे**–

नौरत्नों का समूह	=	नवरत्न।
चार रास्तों का समूह	=	चौराहा।
पाँच वटों का समूह	=	पंचवटी।

5. **बहुव्रीहि समास**–जिस समास मे समस्त पद का कोई भी प्रधान पद न हो, बल्कि अन्य पद प्रधान हो, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। **जैसे**–

लंबा है उदर जिसका	=	लम्बोदर (गणेश)।
नीला है कंठ जिसका	=	नीलकंठ (शिव)।
पीला है वस्त्र जिसका	=	पीतांबर (विष्णु)।

6. **द्वंद्व समास**–जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं। **जैसे**–

माता और पिता	=	माता-पिता
राधा और कृष्ण	=	राधा-कृष्ण
राम और लक्ष्मण	=	राम-लक्ष्मण

आपने क्या सीखा

1. दो शब्दों को मिलाकर संक्षिप्त कर देना समास कहलाता है।
2. समास छः प्रकार के होते हैं।
3. जिस समास में दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) समास किसे कहते हैं ?

_____

(ख) समास के कितने भेद हैं ? प्रत्येक को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

_____

(ग) अव्ययीभाव किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए।

_____

(घ) तत्पुरुष समास से क्या आशय है ? उसके भेद बताइए।

(ङ) कर्मधारय समास किसे कहते हैं ?

(च) द्वंद्व समास की परिभाषा देते हुए उदाहरण भी दें।

2. अंतर बताइए–

(क) द्वंद्व तथा द्विगु समास में

(ख) कर्मधारय तथा बहुव्रीहि में

3. नीचे लिखे पदों का विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए–

समस्त पद	विग्रह	समास-नाम
यथाशक्ति		
पीतांबर		
सेनानायक		
दशानन		
पंचवटी		
माता-पिता		
गुरुदक्षिणा		
पाप-पुण्य		

4. निम्नलिखित समस्त पदों का समास के नाम से मिलान करें–

	पद	समास का नाम
(क)	गंगाजल	अव्ययीभाव
(ख)	प्रतिदिन	तत्पुरुष
(ग)	पंचवटी	द्वंद्व
(घ)	रात-दिन	द्विगु
(ङ)	लंबोदर	कर्मधारय
(च)	कर्महीन	बहुव्रीहि

5. कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के दो-दो उदाहरण दीजिए–

17 काल-विचार (Tense)

परिभाषा–क्रिया के जिस रूप से काम के होने अथवा न होने के समय का बोध होता है, उसे काल कहते हैं। जैसा–वे कल गए। काल का शाब्दिक अर्थ है–समय।

काल के भेद

हिंदी व्याकरण में काल के तीन भेद हैं–

1. वर्तमान काल (Present Tense)
2. भूतकाल (Past Tense)
3. भविष्यत् काल (Future Tense)

1. **वर्तमान काल (Present Tense)**–क्रिया के जिस रूप से कार्य वर्तमान समय में करने या होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। **जैसे**–रमा चित्र बनाती है।

वर्तमान काल के प्रकार–

(i) **सामान्य वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से वर्तमान समय में कार्य का होना या करना पाया जाए, उसे सामान्य वर्तमान कहते हैं। **जैसे**–बच्चे कक्षा में शोर मचाते हैं।

(ii) **अपूर्ण वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि कार्य वर्तमान समय में प्रारंभ होकर अभी भी समाप्त नहीं हुआ है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं। **जैसे**–(क) करुणा पुस्तक पढ़ रही है। (ख) लड़के नदी में तैर रहे हैं।

(iii) **संदिग्ध वर्तमान**–क्रिया के जिस रूप से कार्य के वर्तमान समय में होने या करने का संदेह हो रहा हो, उसे संदिग्ध वर्तमान कहते हैं। **जैसे**–बच्चे शोर मचाते होंगे।

2. **भूतकाल (Past Tense)**–क्रिया के जिस रूप से कार्य का बीते समय में होना या न होना प्रकट होना हो, उसे भूतकाल कहते हैं। **जैसे**–राम ने रावण को मारा था।

भूतकाल के प्रकार–

(i) **सामान्य भूतकाल**–क्रिया के जिस रूप से पता चले कि काम बीते समय में सामान्यतः पूरा हो गया है, उसे 'सामान्य भूतकाल' कहते हैं। **जैसे**–वरुण ने गाना गाया।

(ii) **आसन्न भूतकाल**–क्रिया के जिस रूप से पता चले कि काम पूरा होने का समय बहुत निकट का है, उसे 'आसन्न भूतकाल' कहते हैं। **जैसे**–राम ने गीत लिखा है।

(iii) **पूर्ण भूतकाल**–क्रिया के जिस रूप से यह विदित हो कि काम बहुत पहले पूरा हो चुका था, उसे 'पूर्णभूत' कहते हैं। **जैसे**–गाड़ी रवाना हो चुकी थी।

(iv) अपूर्ण भूतकाल–क्रिया के जिस रूप से क्रिया का भूतकाल में होना पाया जाए, लेकिन होना अनिश्चित हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। **जैसे**–गाड़ी स्टेशन पर आ रही थी।

(v) संदिग्ध भूतकाल–भूतकाल की जिस क्रिया के करने या होने में संदेह हो, उसे 'संदिग्ध भूतकाल' कहते हैं। **जैसे**–वे पुस्तक पढ़ चुके होंगे।

3. **भविष्यत् काल (Future Tense)**–क्रिया के जिस रूप से कार्य का आने वाले समय में होना या करना पाया जाए, उसे भविष्यत् काल कहते हैं। **जैसे**–(क) अंशू डॉक्टर बनेगी। (ख) मोहन कल आएगा।

भविष्यत् काल के प्रकार–

(i) सामान्य भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से आने वाले समय में कार्य करने या होने का बोध हो, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं। **जैसे**–(क) कल विद्यालय खुलेगा। (ख) हम कल बरेली जाएँगे।

(ii) संदिग्ध भविष्यत् काल–क्रिया के जिस रूप से कार्य के आने वाले समय में होने में संदेह या संभावना पाई जाए, उसे संदिग्ध भविष्यत् काल कहते हैं। **जैसे**–(क) शायद माताजी कल आएँगी। (ख) संभवतः आज वर्षा होगी।

आपने क्या सीखा

1. क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान समय में होना या करना पाया जाए, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।
2. जिस क्रिया से काम के बीते हुए समय में होने का पता चलता है, उसे 'भूतकाल' कहते हैं।
3. जिस क्रिया से काम का आने वाले समय में होना पता चलता है, उसे 'भविष्यत् काल' कहते हैं।
4. वर्तमान काल के तीन, भूतकाल के छः और भविष्यत् काल के दो भेद हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) काल किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

_____

_____

(ख) वर्तमान काल किसे कहते हैं ? इसके कितने प्रकार हैं ?

_____

_____

(ग) भूतकाल किसे कहते हैं ? इसके प्रकार भी लिखिए।

_____

_____

(घ) भविष्यत् काल किसे कहते हैं ? इसके प्रकार सोदाहरण दें।

_____

_____

2. अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) अपूर्ण वर्तमान तथा संदिग्ध वर्तमान में।

(ख) आसन्न भूतकाल तथा पूर्ण भूतकाल में।

(ग) सामान्य भविष्यत् तथा संभाव्य भविष्यत् में।

3. निम्नलिखित वाक्यों के काल तथा उनके प्रकार लिखिए–

(क) बच्चे रो रहे हैं।

(ख) मैं पढ़ाई से नहीं डरता।

(ग) यह बालक सोता है।

(घ) शायद पापा कल जाएँगे।

4. नीचे दिए गए वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए–

(क) उसके चाची जी आए थे।

(ख) हम सभी ने सुने होगे।

(ग) तुम्हें कल मेरठ जाने होगा।

(घ) रागिनी ने मुझे पुस्तक दिया।

(ङ) विवेक ने अपनी-अपनी काम किया।

5. निम्न वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करके लिखिए–

(क) वे लोग घर गए। (संदिग्ध भविष्यत्)

(ख) कमला आ रही होगी। (अपूर्ण भूत0)

(ग) वे कल जाएँगे। (सामान्य वर्तमान)

(घ) कल स्कूल खुलेंगे। (अपूर्ण भूत0)

(ङ) कृष्ण ने मदद की। (संदिग्ध भविष्यत्)

18 विराम-चिह्न (Punctuation)

विराम शब्द का अर्थ है–विश्राम, रुकना या ठहरना। हम बोलते समय या अपने भावों को प्रकट करते समय बीच-बीच में अपनी बात पर बल देने के लिए अनेक स्थानों पर रुकते हैं। यदि बिना रुके हम अपनी बात को कहते चले जाएँगे, तो सुनने वाले को कुछ समझ में नहीं आएगा।

विराम चिह्न की परिभाषा–वाक्यों के बीच में रुकने की प्रक्रिया में व्याकरण के जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन चिह्नों को विराम-चिह्न कहते हैं।

प्रमुख विराम-चिह्न

अपनी बात को उचित प्रकार से कहने के लिए निम्नलिखित विराम-चिह्नों का प्रयोग किया जाता है–

1. **पूर्ण विराम (।)** –इस चिह्न का प्रयोग वाक्य समाप्त होने पर किया जाता है। **जैसे**–कारगिल युद्ध समाप्त हो गया।
2. **अल्प विराम (,)**–बोलते या लिखते समय एक शब्द को दूसरे शब्द से अलग करने के लिए थोड़ा रुकते हैं, तब इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव पाँच पांडव कहलाते थे।
3. **अर्द्ध विराम (;)**–जब वाक्य में अल्प विराम की अपेक्षा कुछ ज्यादा देर रुकना पड़ता है, तब इस चिह्न का प्रयोग करते हैं। **जैसे**–सत्य ही सुंदर है; सत्य ही परमेश्वर है।
4. **निर्देशक चिह्न (–)**–वार्तालाप में वक्ता के आगे संवाद आदि को प्रकट करने के लिए यह चिह्न लगाया जाता है। **जैसे**–रमेश ने कहा–मेरे पिताजी बीमार हैं।
5. **योजक चिह्न (-)**–यह चिह्न दो शब्दों को एक साथ कहने पर, अर्थात् विपरीतार्थक शब्द-युग्मों के बीच में प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–लाभ-हानि, सुख-दुःख।
6. **लाघव चिह्न (०)**–शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–इंजीनियर = इंजी०, इण्टर = इ०, डॉक्टर = डॉ०।
7. **प्रश्नवाचक चिह्न (?)**–जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा जाता है, उसके अंत में इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–तुम गाँव कब जाओगे ?
8. **विस्मय सूचक चिह्न (!)**–वाक्य में हर्ष, घृणा, शोक, भय आदि भावों को प्रकट करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–हाय ! यह क्या हो गया ?
9. **कोष्ठक चिह्न ( )** –किसी बात के विशेष अर्थ को स्पष्ट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। **जैसे**–यह प्रियंवदा (प्रिय बोलने वाली स्त्री) है।
10. **त्रुटि चिह्न (^)**–लिखते समय जब कोई शब्द भूल से छूट जाता है, तो इस चिह्न का प्रयोग करके, उस शब्द को पंक्ति के ऊपर लिख देते हैं। **जैसे**–राम ^ जाता है।

आपने क्या सीखा

1. वाक्यों के बीच में रुकने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।
2. विराम-चिह्न कई प्रकार के होते हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) विराम-चिह्न किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं ?

(ख) पूर्ण विराम से क्या तात्पर्य है ?

(ग) अल्प विराम क्या है ? इसका चिह्न भी दर्शाएँ।

(घ) उद्धरण चिह्न का प्रयोग किस दशा में किया जाता है ?

2. अंतर स्पष्ट कीजिए–

(क) पूर्ण विराम एवं अल्प विराम में।

(ख) प्रश्नवाचक तथा विस्मयवाचक में।

(ग) लाघव तथा उद्धरण चिह्न में।

(घ) योजक तथा त्रुटि चिह्न में।

3. निम्नलिखित चिह्नों के संकेत पहचानकर उनके सम्मुख उनका नाम लिखिए–

(क) ।

(ख) !

(ग) ?

(घ) ( )

(ङ) ,

(च) 0

4. यथास्थान पूर्ण / अल्प विराम लगाइए–

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से कहा मैं युद्ध नहीं करूँगा यहाँ हमारे गुरु द्रोणाचार्य सगे संबंधी खड़े हैं इन्हें मारने से हमें पाप लगेगा

19 विलोम अथवा विपरीतार्थक शब्द
(Antonyms)

विलोम शब्द का अर्थ है–विपरीत अथवा उल्टा होना। हिंदी भाषा में किसी शब्द के विपरीत अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को हम उसका 'विलोम' कहते हैं। जैसे–हार का विलोम जीत।

शब्द	विलोम	शब्द	विलोम
अथ	इति	उल्टा	सीधा
अमृत	विष	उत्तम	अधम
अल्पायु	दीर्घायु	उच्च	निम्न
अनुज	अग्रज	उजाला	अंधेरा
अपना	पराया	उतार	चढ़ाव
अचल	चल	उत्थान	पतन
अज्ञान	ज्ञान	एक	अनेक
अधर्म	धर्म	झूठ	सच
अच्छा	बुरा	खरा	खोटा
अनुकूल	प्रतिकूल	नया	पुराना
आदान	प्रदान	संयोग	वियोग
आरंभ	अंत	गुरु	शिष्य
आदि	अनादि	हित	अहित
आय	व्यय	निंद्य	वंद्य
आदर	निरादर	सम	विषम
आश्रित	निराश्रित	यश	अपयश
आलस्य	स्फूर्ति	स्मरण	विस्मरण
आकाश	पाताल	निंदा	स्तुति
इष्ट	अनिष्ट	पक्ष	विपक्ष
ईश्वर	अनीश्वर	साधारण	विशेष
उदय	अस्त	मूल	शिखर
पापी	पुण्यात्मा	गौरव	लाघव
पंडित	मूर्ख	क्रय	विक्रय

स्वामी	सेवक	सुकर्म	कुकर्म
नूतन	पुरातन	मंगल	अमंगल
गहरा	उथला	भारी	हल्का
सजीव	निर्जीव	चतुर	मूर्ख
वीर	कायर	विद्वान्	मूर्ख
प्रियतम	अप्रियतमा	पराधीन	स्वाधीन
देश	विदेश	भोगी	योगी
गुण	दोष	स्वर्ग	नरक
सुबोध	दुर्बोध	विश्वास	अविश्वास
कल्पित	सत्य	शुभ	अशुभ
न्याय	अन्याय	प्रवृत्ति	निवृत्ति
हार	जीत	राग	द्वेष
शयन	जागरण	दुष्कर	सुकर
झूठा	सच्चा	रुचि	अरुचि
घृणा	प्रेम	राजा	रंक
मंगल	अमंगल	सरस	नीरस
दुर्गंध	सुगंध	पतन	उत्थान
दैत्य	देव	ज्ञान	अज्ञान
कृपा	क्रोध	बंजर	उपजाऊ
दंड	पुरस्कार	शांत	क्रुद्ध
घातक	रक्षक	जटिल	सरल
पुष्ट	कृश	सुगम	आगम
मनुज	दनुज	रक्षक	भक्षक
तेजस्वी	निस्तेज	जड़	चेतन
विरोध	समर्थन	सूक्ष्म	स्थूल
सदाचार	दुराचार	कुरूप	सुरूप
कृतज्ञ	कृतघ्न	चर	अचर
कीर्ति	अपकीर्ति	अतिवृष्टि	अनावृष्टि
संधि	विग्रह	स्वतंत्र	परतंत्र

आपने क्या सीखा

1. किसी शब्द के विपरीत अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द 'विलोम' हैं।
2. विलोम का अर्थ है 'उल्टा होना'।

अभ्यास

1. विलोम शब्द किसे कहते हैं ?

_____

_____

_____

2. नीचे दिए शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–

(क) कीर्ति _____ (ख) कृतज्ञ _____

(ग) शयन _____ (घ) संधि _____

3. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

प्राचीन	नवीन/अर्वाचीन	मरण	जीवन/जीवित
ईश्वर	अनीश्वर/देवता	स्वदेश	जीना/विदेश
पक्ष	अपनी ओर/विपक्ष	कठोर	मुलायम/कोमल

20 पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

परिभाषा–जो शब्द एक ही वस्तु या विचार का ज्ञान कराते हैं, ''पर्यायवाची शब्द'' कहलाते हैं। नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची वर्ण के अनुक्रम में दिए जा रहे हैं। छात्र उन्हें कंठस्थ करें।

	शब्द		पर्यायवाची शब्द
1.	अमृत	–	अमिय, सुधा, सोम, मधु, पीयूष, सुरभोग।
2.	असुर	–	दानव, दैत्य, निशाचर, राक्षस, रात्रिचर।
3.	अग्नि	–	अनल, पावक, दहन, आग, हुताशन।
4.	अश्व	–	घोड़ा, तुंरग, घोटक, बाजि, हरि।
5.	आकाश	–	गगन, व्योम, अम्बर, शून्य, नभ।
6.	आदमी	–	नर, मनुष्य, मानव, मनुज, पुरुष।
7.	आनंद	–	हर्ष, उल्लास, आमोद, प्रमोद।
8.	इन्द्र	–	सुरपति, देवेन्द्र, सुरेन्द्र, देवराज, सुरेश।
9.	ईश्वर	–	प्रभु, परमात्मा, अगोचर, अलख, ब्रह्मा।
10.	कमल	–	अरविंद, जलज, पंकज, नीरज, अम्बुज।
11.	कामदेव	–	मनोज, मदन, रतिपति, अनंग, काम।
12.	कामना	–	लालसा, इच्छा, अभिलाषा, आकांक्षा।
13.	कपड़ा	–	अम्बर, वस्त्र, चीर, पट, वसन।
14.	केश	–	बाल, अलक, कच, चिकुर।
15.	कृष्ण	–	घनश्याम, मुरारी, केशव, हरि, गोविंद।
16.	खरगोश	–	शशक, शश, खरहा, तीव्रधावी।
17.	गणेश	–	गजानन, गणपति, लम्बोदर, गौरीसुत।
18.	गज	–	हाथी, दंती, हस्ती, कुंजर, कर्ण।
19.	गंगा	–	सुरसरि, देवनदी, भागीरथी, त्रिपथगा।
20.	गृह	–	घर, आलय, सदन, निकेतन, आगार।
21.	चन्द्रमा	–	शशि, विधु, मयंक, सोम, निशापति।
22.	जल	–	अम्बु, नीर, पय, तोय, उदक।
23.	जग	–	जगत्, विश्व, लोक, संसार।
24.	तालाब	–	तड़ाग, सरोवर, जलाशय, ताल, सर।
25.	दास	–	सेवक, अनुचर, गुलाम, नौकर, किंकर।
26.	देवता	–	देव, सुर, अमर, आदित्य, दैत्यारि।

27. दिन – वासर, दिवस, वार, दिवा, अहन।
28. धन – कोष, सम्पत्ति, रुपया, जीविका।
29. दुःख – संकट, यातना, वेदना, कष्ट।
30. दूध – पय, नीर, दुग्ध, अम्बु, क्षीर।
31. नदी – सरिता, तटनी, तरंगिणी, सलिला।
32. पति – नाथ, भरतार, जीवन साथी, प्राणनाथ।
33. पत्नी – भार्या, सहचरी, स्त्री, बहू, वल्लभा।
34. पहाड़ – गिरि, अचल, पर्वत, नग, शैल।
35. पक्षी – खग, विहंग, द्विज, अण्डज, पखेरू।
36. पुत्र – आत्मज, नंद, तनय, पुत्र, वत्स।
37. पुत्री – बेटी, आत्मजा, दुहिता, तनया, नंदिनी।
38. फूल – पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुमन।
39. बिजली – विद्युत, चपला, चंचला, दामिनी।
40. बादल – घन, जलद, वारिद, नीरद, जलधर।
41. ब्रह्मा – लोकेश, विधाता, प्रजापति, कमलासन।
42. मधुकर – भौंरा, अलि, षट्पद, मधुप, भ्रमर।
43. राजा – नृप, नरेश, नरेन्द्र, क्षितिपति, भूपति।
44. रात्रि – यामिनी, निशा, रजनी, रात, विभावरी।
45. लक्ष्मी – कमला, रमा, मनोरमा, श्री, हरिप्रिया।
46. वृक्ष – पादप, तरु, विटप, द्रुम, पेड़।
47. शिव – शंकर, कैलाशपति, त्रिपुरारी, नीलकण्ठ।
48. सर्प – भुजंग, उरग, विषधर, व्याल, नाग।
49. सूर्य – दिनेश, भानु, भास्कर, रवि, दिनकर।
50. सरस्वती – भारती, शारदा, वाणी, इला।
51. सिंह – केहरी, केसरी, मृगेन्द्र, पंचमुख।
52. सागर – जलधि, पयोधि, उदधि, वारिधि, अम्बुधि।
53. स्त्री – महिला, नारी, वनिता, रमणी।
54. सुंदर – रम्य, रमणीक, मनोहर, मनमोहक।
55. सुख – उल्लास, हर्ष, प्रमोद, आनंद।
56. हाथी – गज, मतंग, दंती, नाग, हरि।
57. हाथ – कर, पाणि, हस्त, भुजा, बाहु।
58. हिरन – सारंग, तुरंग, हरिण, मृग।
59. हिमालय – पर्वतराज, हिमवान, नागराज, नगेन्द्र।
60. हृदय – हृदि, वामपार्श्व, उर, वक्षःस्थल।

आपने क्या सीखा

1. पर्यायवाची शब्द से आशय है–समान अर्थ वाले शब्द।
2. जो शब्द एक ही प्राणी, वस्तु तथा विषय का समान बोध कराते हैं, पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

अभ्यास

1. नीचे दिए शब्दों के पर्यायवाची बताइए–

सागर, हाथ, रात्रि, जल, चंद्रमा।

_____

2. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं ?

_____

3. हमारे जीवन में पर्यायवाची का क्या महत्व है ?

_____

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

आकाश– _____ _____ _____

नदी– _____ _____ _____

वृक्ष– _____ _____ _____

गंगा– _____ _____ _____

घोड़ा– _____ _____ _____

सूर्य– _____ _____ _____

4. तीन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द छाँटकर लिखिए–

(देवेन्द्र, द्रुम, तटिनी, सुरेश, त्रिपथगा, विटप)

इन्द्र– _____ _____

गंगा– _____ _____

वृक्ष– _____ _____

21 अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(One Word Subtitution)

परिभाषा–भाषा को अति संक्षेप में बनाने के लिए जब हम किसी वाक्यांश के लिए उसके स्थान पर एक उचित शब्द का प्रयोग करते हैं, तो वह एक शब्द कहलाता है।

वाक्यांश (अनेक शब्द)	एक शब्द
जो कहा न जा सके	अकथनीय
जिसका ईश्वर में विश्वास हो	आस्तिक
जिसके आने की तिथि न हो	अतिथि
जो कठिनाई से मिले	दुर्लभ
जो काम कठिन हो	दुष्कर
जो आँख के सामने हो	प्रत्यक्ष
जहाँ जाने में कठिनाई हो	दुर्गम
दूर की सोचने वाला	दूरदर्शी
जो कभी बूढ़ा न हो	अजर
जिसकी कोई उपमा न हो	अनुपम
जिसका कोई शत्रु न हो	अजातशत्रु
उपकार को मानने वाला	कृतज्ञ
उपकार को न मानने वाला	कृतघ्न
आकाश को चूमने वाला	गगनचुम्बी
जो देखने योग्य हो	दर्शनीय
कम खर्च करने वाला	मितव्ययी
जिसका पति मर गया हो	विधवा
जिसकी पत्नी मर गई हो	विधुर
जो वन में घूमता हो	वनचर
जो नभ में उड़ता हो	नभचर

जो जल में रहता हो	जलचर
जो काम आसान हो	सरल
जिसका वर्णन न हो सके	अवर्णनीय
ऊपर कहा गया	उपर्युक्त
जिसे रोका न जा सके	अदम्य
जिसके पास कुछ न हो	अकिंचन
भूमि की जाँच पड़ताल करने वाला	भू-सर्वेक्षक
कम बोलने वाला	मितभाषी
मौके का लाभ उठाने वाला	अवसरवादी
पन्द्रह दिन में एक बार आने वाला पत्र	पाक्षिक-पत्र
साथ में काम करने वाला	सहकर्मी
किसी की याद में बनाई गई इमारत	स्मारक
परदेश में रहने वाला	प्रवासी
आंतरिक ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति	अंतर्दृष्टि
पत्र-पत्रिकाओं में समाचार भेजने वाला	संवाददाता
भाषण देने वाला	वक्ता
प्रतिदिन होने वाला कार्य	दैनिक
मन को मोहने वाला	मनमोहक
नीति को जानने वाला	नीतिज्ञ
जिसमें धैर्य न हो	अधीर
उच्च कुल वाला	कुलीन
जो दिखाई न दे	अदृश्य
दूसरों के दोष देखने वाला	छिद्रान्वेषी
श्रद्धा रखने वाला	श्रद्धालु
जिस भूमि पर कुछ न उगे	ऊसर भूमि
जो एक साथ पढ़ता हो	सहपाठी

जो अपना दल समय-समय पर बदलता हो	दलबदलू
जो मर्यादा के विरुद्ध हो	अमर्यादित
धर्म पर चलने वाला	धर्मज्ञ
सब लोगों को प्रिय लगने वाला	लोकप्रिय
हर समय काम में लगा रहने वाला	व्यस्त
देखने के योग्य	दर्शनीय
जो स्त्री वीर हो	वीरांगना
जो गुप्त रखने के लायक हो	गोपनीय
जो भाग्य पर भरोसा रखता हो	भाग्यवादी
जो सबसे ऊँचा हो	सर्वोच्च
दोपहर के पहले का समय	पूर्वान्ह
जिसका दिवाला निकल गया हो	दिवालिया
विदेश से देश में वस्तु का आना	आयात
जिस स्थान पर कोई न हो	निर्जन

आपने क्या सीखा

1. भाषा को अतिसंक्षेप में लिखने के लिए एक शब्द का प्रयोग होता है।
2. एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं।

अभ्यास

1. अनेक शब्द के स्थान पर एक शब्द का प्रयोग क्यों करते हैं ? संक्षेप में लिखिए।

_____

2. निम्नलिखित शब्द-समूह के स्थान पर एक शब्द लिखिए–

(क) उपकार को मानने वाला– _____

(ख) जिसका ईश्वर में विश्वास हो– _____

(ग) जो साथ-साथ पढ़ा हो– _____

(घ) किसी की याद में बनी इमारत– _____

(ङ) नीति को जानने वाला– _____

(च) जो कभी बूढ़ा न हो– _____

3. सुमेलित कीजिए एवं उसके सामने लिखिए–

वन में रहने वाला	धर्मज्ञ	_____
देखने के योग्य	श्रद्धालु	_____
श्रद्धा रखने वाला	दर्शनीय	_____
उच्च कुल में जन्मा	जलचर	_____
जल में रहने वाला	कुलीन	_____
धर्म पर चलने वाला	वनचर	_____

4. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

(क) आकाश में उड़ने वाला–

(i) जलचर (ii) नभचर

(iii) वनचर (iv) पक्षी _____

(ख) जो काम न करना चाहे–

(i) अकर्मण्य (ii) दुष्कर

(iii) निकम्मा (iv) आलसी _____

(ग) जो सबसे ऊँचा हो–

(i) श्रेष्ठ (ii) श्रेष्ठतर

(iii) सर्वोच्च (iv) उच्चकोटि _____

22 सामान्य अशुद्धियाँ : वर्तनी
(Common Errors : Spellings)

विद्यार्थियों को शब्दों का शुद्ध ज्ञान होना परमावश्यक है। अतः यहाँ ऐसे शब्दों की सूची दी जा रही है जिनके लिखने में प्रायः कुछ अशुद्धियाँ होती हैं।

1. 'अ' तथा 'आ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
अगामी	आगामी	सप्ताहिक	साप्ताहिक
आधीन	अधीन	अलोक	आलोक
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	बारात	बरात
संसारिक	सांसारिक	व्यवहारिक	व्यावहारिक

2. 'इ' तथा 'ई' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
मुनी	मुनि	पती	पति
क्षत्रीय	क्षत्रिय	निरिक्षण	निरीक्षण
पूर्वि	पूर्वी	पत्नि	पत्नी
भक्ती	भक्ति	निरोग	नीरोग
श्रीमति	श्रीमती	बुद्धी	बुद्धि
परिक्षा	परीक्षा	अतिथी	अतिथि
दुःखि	दुःखी	पूर्ती	पूर्ति

3. 'उ' तथा 'ऊ' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
ऊत्थान	उत्थान	दुसरा	दूसरा
सिंदुर	सिंदूर	गुरू	गुरु
पुज्य	पूज्य	भानू	भानु
प्रभू	प्रभु	उन्नती	उन्नति
दुजा	दूजा	जादु	जादू
आयू	आयु	नुपुर	नूपुर

4. 'ण' तथा 'न' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
प्रान	प्राण	पुन्य	पुण्य
स्मरन	स्मरण	दर्पन	दर्पण
कल्यान	कल्याण	साधारन	साधारण
प्रनाम	प्रणाम	आक्रमन	आक्रमण

5. 'ऋ' तथा 'र' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
ब्रज	बृज	रितु	ऋतु
द्रश्य	दृश्य	श्रिंगार	श्रृंगार
हिरदय	हृदय	प्रथक	पृथक
रिषि	ऋषि	ग्रहणी	गृहिणी

6. 'ज्ञ' तथा 'ग्य' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
विग्यान	विज्ञान	संग्या	संज्ञा
संग्यान	संज्ञान	अनभिग्य	अनभिज्ञ
योज्ञ	योग्य	यग्य	यज्ञ
विग्य	विज्ञ	आग्या	आज्ञा

7. 'श', 'ष' तथा 'स' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
विश्णु	विष्णु	पिसाच	पिशाच
सक्ती	शक्ति	सांति	शांति
कस्ट	कष्ट	सोभा	शोभा

8. 'छ' तथा 'क्ष' संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
लच्छन	लक्षण	लच्छ	लक्ष्य
लक्षमण	लक्ष्मण	छिमा	क्षमा
अच्छर	अक्षर	छत्री	क्षत्रिय

9. ‘ट’, ‘ठ’, ‘ड’, ‘ढ’, ‘ण’ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
ठटेरा	ठठेरा	बाढ	बाढ़
कन्ठ	कण्ठ	बूड़ा	बूढ़ा
पड़ना	पढ़ना	बडाई	बड़ाई
पृष्ट	पृष्ठ	जएष्ट	ज्येष्ठ

10. ‘ब’ तथा ‘व’ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
व्याज	ब्याज	विवाह	विवाह
बधू	वधू	बंदना	वंदना
बन	वन	बिद्वान	विद्वान

11. ‘र’ तथा ‘र्’ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
उपरोक्त	उपर्युक्त	परदीप	प्रदीप
दुरगति	दुर्गति	स्मर्ण	स्मरण

12. ‘अनुस्वार’ तथा ‘चंद्रबिंदु’ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
आंसू	आँसू	पांच	पाँच
दन्ड	दण्ड	दांत	दाँत
जन्जीर	जंजीर	गांव	गाँव

13. ‘वचन’ संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
सौंदर्यता	सौंदर्य	मान्यनीय	माननीय
ओराग्यता	आरोग्य	पूज्नीय	पूजनीय

14. विसर्ग संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
शनै-शनै	शनैः-शनैः	षष्ठः	षष्ठ
दुख	दुःख	प्रात	प्रातः

15. हलंत संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
दसम्	दशम्	विद्वान	विद्वान्
शुभम	शुभम्	जगत	जगत्
भाग्यवान	भाग्यवान्	स्वागतम	स्वागतम्

16. सामान्य अशुद्धियाँ

अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
रचियिता	रचयिता	कवियित्री	कवयित्री
बापिस	वापिस	अंगरेज़ी	अंग्रेज़ी
श्रीयुक्त्	श्रीयुत्	त्रितीय	तृतीय
तिरवेदी	त्रिवेदी	दुतीय	द्वितीय
सारिणी	सारणी	निरदोस	निर्दोष
मात्रभूमि	मातृभूमि	शिघ्र	शीघ्र

अभ्यास

1. वर्तनी किसे कहते हैं ?

_____

2. नीचे दिए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

(क) निरोग – _____ (ख) ग्रहणी – _____

(ग) कवियित्री – _____ (घ) बिमार – _____

(ङ) उपरोक्त – _____ (च) सौंदर्यता – _____

(छ) प्रात – _____ (ज) मात्रभूमि – _____

(झ) स्वास्थ – _____ (ण) जगत – _____

3. नीचे लिखे शब्दों में अशुद्धि के प्रकार बताइए–

(क) सन्कट – _____ (ख) आरोग्यता – _____

(ग) दुस्ट – _____ (घ) भासण – _____

(ङ) दृंद – _____ (च) उत्कृष्ठ – _____

(छ) कृप्या – _____ (ज) विश्नु – _____

23 तद्भव तथा तत्सम शब्द
(Tadbhav and Tatsam Words)

परिभाषा–किसी भी भाषा का मूल शब्द तत्सम कहलाता है तथा ऐसे शब्द जो संस्कृत एवं प्राकृत भाषा से बिगड़कर हिंदी में आए हैं तद्भव कहे जाते हैं।

शुद्ध रूप को तत्सम और अशुद्ध रूप को तद्भव कहा जाता है। निम्नलिखित तद्भव एवं तत्सम रूप देखिए–

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
अभिसेक	अभिषेक	इक	एक
अच्छर	अक्षर	इहाँ	यत्र
अवध	अवध्य	इलायची	एला
अमोल	अमूल्य	ईख	इक्षु
आग	अग्नि	ईर्षा	ईर्ष्या
अमिय	अमृत	ऊँट	ऊष्ट्र
अस्तुति	स्तुति	उल्लू	उलूक
अंधेरा	अंधकार	उच्छाह	उत्साह
अपूरब	अपूर्व	ऊँचा	उच्च
अच्छत	अक्षत	एतवार	आदित्यवार
आधा	अर्द्ध	ओंठ	ओष्ठ
आँख	अक्षि	औतार	अवतार
आयसु	आदेश	अंगुलि	अंगुली
आसरा	आश्रय	कपूत	कुपुत्र
आँसू	अश्रु	किवाड़	कपाट
आज	अद्य	कुँवारी	कुमारी
आम	आम्र	कछुआ	कच्छप
आलस	आलस्य	कान	कर्ण
इतर	इत्र	खत्री	क्षत्रिय
इमली	अम्लिका	खजूर	खर्जूर
खंभ	स्तम्भ	तेज	तीव्र
गेहूँ	गोधूम	ताँबा	ताम्र
गाँव	ग्राम	तिनका	तृण
गाहक	ग्राहक	थन	स्तन
ग्वाल	गोपाल	दही	दधि
गुफा	गुहा	दोख	दोष

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
घड़ा	घट	दस	दश
घिन	घृणा	दाँत	दंत
घोड़ा	घोटक	दादुर	दर्दुर
घर	गृह	दिवाली	दीपावली
चमड़ा	चर्म	दीया	दीप
चबाना	चर्वण	धीरज	धैर्य
चख	चक्षु	धुँआ	धूम
चना	चणक	धरम	धर्म
चाँद	चंद्रमा	धूल	धूलि
चरित	चरित्र	धारण	धारणा
चूमना	चुम्बन	धरती	धरित्री
छेद	छिद्र	नखत	नक्षत्र
छिन	क्षण	निसि	निशि
छोभ	क्षोभ	नीम	निम्ब
जोति	ज्योति	नाच	नृत्य
जीभ	जिह्वा	नंगा	नग्न
जौ	यव	नाक	नासिका
जीरा	जीरक	निठुर	निष्ठुर
जनेऊ	यज्ञोपवीत	पूनम	पूर्णिमा
जमुना	यमुना	पग	पद
झट	झटिति	पंगत	पंक्ति
पाहन	पाषाण	साँप	सर्प
पोथी	पुस्तक	साँवला	श्याम
फूल	पुष्प	सरन	शरण
फागुन	फाल्गुन	सास	श्वश्रु
बहू	वधू	सरवर	सरोवर
ब्याह	विवाह	सनैः	शनैः
बनिया	वणिक्	शक्कर	शर्करा
बहिन	भगिनी	शाप	श्राप
भाप	वाष्प	होंठ	ओष्ठ
भगत	भक्त	हरस	हर्ष
भाभी	भ्रातृवधू	हाथ	हस्त
माथा	मस्तक	हिय	हृदय
मैल	मल	हिरन	हरिण

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
मीत	मित्र	हरन	हरण
मामा	मातुल	हथिनी	हस्तिनी
मारग	मार्ग	हाथी	हस्ती
मोती	मुक्ता	होली	होलिका
जस	यश	हत्यारो	हत्यारा
यग	यज्ञ	हींग	हिंगु

आपने क्या सीखा

1. किसी भी भाषा का शुद्ध रूप 'तत्सम' कहलाता है।
2. किसी भी भाषा का अशुद्ध रूप 'तद्भव' कहलाता है।

अभ्यास

1. 'तत्सम शब्द' किसे कहते हैं ?

_____

2. तद्भव तथा तत्सम शब्दों में क्या अंतर है ?

_____

3. नीचे दिए शब्दों में से तत्सम तथा तद्भव शब्द छाँटकर लिखिए–

हाथ, हाथी, यज्ञ, झट, यग्य, लौह, फूल, घट, दादुर, यव।

तत्सम – _____

तद्भव – _____

4. नीचे दिए तद्भव शब्दों के तत्सम शब्द को सुमेलित करें–

जैसे– हाथी - हस्ती

तद्भव	तत्सम
तालाब	दधि
भाप	गृह
घर	वाष्प
ब्याह	जीरिक
होंठ	पाषाण
जीरा	ओष्ठ
दही	तड़ाग

24 शब्द-युग्म (Word Pairs)

परिभाषा–शब्दों के ऐसे जोड़े, जिनका उच्चारण लगभग समान हो परंतु जिनके अर्थ भिन्न-भिन्न हों, शब्द-युग्म कहलाते हैं।

शब्द-युग्म की रचना

शब्द-युग्म निम्न प्रकार रचनायुक्त हैं–

1. एक शब्द का दो बार प्रयोग–

(i)	किनारे-किनारे	–	मोहन ने घर के किनारे-किनारे पेड़ लगाए।
(ii)	कौन-कौन	–	तुम्हारे साथ कौन-कौन आएगा ?
(iii)	क्या-क्या	–	तुमने शादी में क्या-क्या इंतजाम किया है ?
(iv)	चुपके-चुपके	–	राहुल ने चुपके-चुपके अपना जन्मदिन मना लिया है।
(v)	भागते-भागते	–	वह भागते-भागते गिर पड़ा।
(vi)	धीरे-धीरे	–	रमेश अपना काम धीरे-धीरे करता है।
(vii)	देखते-देखते	–	देखते-देखते वहाँ भीड़ लग गई।
(viii)	साथ-साथ	–	रमेश व दिनेश साथ-साथ विद्यालय गए।

2. विलोम शब्दों का प्रयोग करके–

(i)	आशा-निराशा	–	मनुष्य जीवन भर आशा-निराशाओं से घिरा रहता है।
(ii)	शाम-सवेरे	–	शाम-सवेरे सैर पर जाना चाहिए।
(iii)	जाने-अनजाने	–	जाने-अनजाने गलती हो ही जाती है।
(iv)	सवाल-जवाब	–	अपने से बड़ों से सवाल-जवाब नहीं करना चाहिए।
(v)	लंबा-चौड़ा	–	नेता लोग चुनाव में अपनी जीत के लिए लंबा-चौड़ा भाषण देते हैं।

3. सार्थक तथा निरर्थक शब्दों का प्रयोग करके–

(i)	अलग-थलग	–	कारगिल युद्ध में दुश्मनों की लाशें अलग-थलग पड़ी हुई थीं।
(ii)	जात-पाँत	–	गाँवों में आज भी जात-पाँत देखी जाती है।
(iii)	हेरा-फेरी	–	आजकल हर चीज में हेरा-फेरी है।

(iv) टाल-मटोल – आजकल बच्चे हर काम में टाल-मटोल कर जाते हैं।

(v) ढीला-ढाला – आजकल के युवकों को ढीले-ढाले कपड़े पहनने चाहिए।

(vi) मेल-जोल – घर में लोगों को मेल-जोल से रहना चाहिए।

(vii) नोंक-झोंक – पक्ष-विपक्ष के नेता एक-दूसरे से खूब नोंक-झोंक करते हैं।

(viii) चटक-मटक – त्योहारों पर बच्चे चटक-मटक रंग वाले कपड़े पहन कर निकलते हैं।

4. सजातीय व समानार्थी शब्दों का प्रयोग करके–

(i) इष्ट-मित्र – रमेश की शादी में उसके इष्ट-मित्र मौजूद थे।

(ii) काम-काज – ग्रामीण महिलाएँ दिन भर काम-काज करती हैं।

(iii) खाना-पीना – शादी के समय खाना-पीना देरी से प्रारंभ होता है।

(iv) हँसी-खुशी – राहुल की छुट्टियाँ हँसी-खुशी से व्यतीत हुईं।

(v) दाँव-पेंच – कुश्ती में पहलवान दाँव-पेंच का प्रयोग करते हैं।

(vi) पठन-पाठन – सरकार गरीब बच्चों के पठन-पाठन पर बल देती है।

(vii) रहन-सहन – शहरी क्षेत्र का रहन-सहन गाँव की अपेक्षा अच्छा होता है।

(viii) सीधा-साधा – छोटे बच्चों का स्वभाव सीधा-साधा होता है।

(ix) सोच-विचार – आजकल हर काम सोच-विचार से करना चाहिए।

(x) भाग-दौड़ – पैसा कमाने के लिए हर व्यक्ति भाग-दौड़ कर रहा है।

(xi) रीति-रिवाज – हर धर्म में रीति-रिवाज होते हैं।

5. शब्दों के बीच में परसर्गों का प्रयोग करके–

(i) खेल-ही-खेल – खेल-ही-खेल में झगड़ा हो गया।

(ii) कभी-न-कभी – कभी-न-कभी तो अच्छा समय आएगा।

(iii) कोई-न-कोई – आजकल कोई-न-कोई समस्या बनी ही रहती है।

(iv) साथ-ही-साथ – खूब खाने के साथ-ही-साथ खूब व्यायाम भी हमें करना चाहिए।

आपने क्या सीखा

1. शब्दों के ऐसे जोड़े, जिनका उच्चारण लगभग समान हो जबकि उनके अर्थ में भिन्नता हो, शब्द-युग्म कहलाते हैं।
2. शब्द-युग्मों की रचना कई तरह से होती है।

अभ्यास

1. शब्द-युग्म किसे कहते हैं ?

2. विलोम शब्द प्रयोग करते हुए कोई दो शब्द-युग्म लिखिए।

3. सार्थक एवं निरर्थक शब्दों का प्रयोग करके कोई चार शब्द-युग्म लिखिए।

4. शब्द-युग्म का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   साथ-ही-साथ –

   कम-से-कम –

   किनारे-किनारे –

   जय-पराजय –

25 मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ
(Idioms and Proverbs)

मुहावरे की परिभाषा–जब कोई वाक्य अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, तो वह मुहावरा कहलाता है। मुख्य रूप से यह 'अरबी' भाषा का शब्द है। मुहावरा पूर्ण वाक्य न होकर एक वाक्यांश होता है जो किसी विलक्षण तथा चमत्कारपूर्ण अर्थ का प्रतीक होता है। मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर, प्रभावपूर्ण एवं चमत्कारपूर्ण बन जाती है।

प्रमुख मुहावरे तथा उनका प्रयोग

1. अंधे की लकड़ी = एकमात्र सहारा

   श्रवण कुमार अपने बूढ़े माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी थे।

2. अमर होना = कभी न मरना

   सुभाष चन्द्र बोस देश-सेवा के लिए अमर हो गए।

3. अपना उल्लू सीधा करना = स्वार्थ सिद्ध करना

   आजकल हर व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने में लगा है।

4. अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना = स्वयं हानि पहुँचाना

   सुरेश ने परीक्षा छोड़कर अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली।

5. आँखों का तारा = अत्यंत प्यारा

   श्रीकृष्ण यशोदा की आँखों के तारे थे।

6. आग में घी डालना = क्रोध बढ़ाना

   लक्ष्मण की बातें परशुराम के क्रोध के लिए आग में घी डालने के समान थीं।

7. आँखों में धूल झोंकना = धोखा देना

   चोर पुलिस की आँखों में धूल झोंककर फरार हो गए।

8. आस्तीन का साँप होना = कपटी मित्र

   पाकिस्तान भारत के लिए आस्तीन का साँप बना हुआ है।

9. इधर-उधर की हाँकना = गप्पें मारना

   राम इधर-उधर की हाँकने में ही लगा रहता है।

10. ईद का चाँद होना = बहुत दिनों बाद मिलना

    गोपाल की नौकरी लगने के बाद वह ईद का चाँद हो गया।

11. ईंट से ईंट बजाना = विनाश करना

    महाराणा प्रताप ने युद्ध क्षेत्र में अकबर की समस्त सेना की ईंट से ईंट बजा दी।

12. अंगुली पर नचाना = अपने वश में करना

कुशल नेता अपने भाषण से जनता को अपनी अंगुली पर नचाता है।

13. ऊँट के मुँह में जीरा = कोई वस्तु कम मात्रा में मिलना

विशाल हाथी को दस रोटी खिलाना ऊँट के मुँह में जीरे के समान है।

14. एड़ी चोटी का जोर लगाना = अत्यधिक प्रयास करना

नीरज एड़ी चोटी का जोर लगाने के बावजूद फेल हो गया।

15. कलेजे पर साँप लोटना = ईर्ष्या से जलना

रमेश के परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने से दिनेश के कलेजे पर साँप लोट गया।

16. कानों पर जूँ न रेंगना = ध्यान न देना

कितनी बार पढ़ने के लिए कहा परंतु उसके कानों पर जूँ न रेंगी।

17. खून खौलना = क्रोध आना

दुश्मनों को देखकर जवानों का खून खौल उठता है।

18. खाक छानना = बहुत परेशान होना

आजकल बहुत से युवक नौकरी के लिए खाक छानते हैं।

19. गागर में सागर भरना = थोड़े शब्दों में अधिक कहना

कबीर ने अपने ग्रंथों में गागर में सागर भर दिया।

20. गुड़ गोबर करना = काम बिगाड़ना

भोजन में नमक अधिक होने से वह गुड़ गोबर हो गया।

21. गड़े मुर्दे उखाड़ना = पुरानी बातें दोहराना

रमेश की मृत्यु का समाचार सुनाकर उसने गड़े मुर्दे उखाड़ दिए।

22. घी के दिए जलाना = खुशियाँ मनाना

रामचन्द्र जी के वन से लौटने पर अयोध्या में घी के दिए जलाए गए।

23. चार चाँद लगाना = शोभा बढ़ाना

ग्रेनाइट के पत्थरों ने मकान में चार चाँद लगा दिए।

24. छक्के छुड़ाना = पराजित करना

हनुमान जी ने रावण की सेना के छक्के छुड़ा दिए।

25. जी चुराना = काम से भागना

आजकल के छात्र पढ़ाई से जी चुराने लगे हैं।

26. जान पर खेलना = वीरता के साथ मरना

कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिक अपनी जान पर खेल गए।

27. टेढ़ी खीर होना = मुश्किल होना

बिना परिश्रम के धनार्जन एक टेढ़ी खीर है।

28. दाँत खट्टे करना = हराना

महाराणा प्रताप ने मुगलों के दाँत खट्टे कर दिए।

29. नौ-दो ग्यारह होना = भाग जाना

पुलिस को देखकर डकैत नौ-दो ग्यारह हो गए।

30. मुँह में पानी आना = जी ललचाना

अच्छी मिठाई देखकर बच्चों के मुँह में पानी आ गया।

31. पहाड़ टूट पड़ना = अधिक आपत्ति आना

पिताजी की मृत्यु के पश्चात् मुझ पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा।

32. पीठ दिखाना = हार मानना

संघर्ष में पीठ दिखाना कायरता है।

33. लोहा लेना = मुकाबला करना

क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों से अनेक बार लोहा लिया।

34. सिर पर कफन बाँधना = मरने को तैयार रहना

राजपूत लड़ाई में सिर पर कफन बाँध कर निकलते थे।

35. हाथ पाँव फूल जाना = घबरा जाना

वन में शेर देखकर मेरे हाथ पाँव फूल गए।

लोकोक्ति की परिभाषा–लोकोक्ति का अर्थ है–'लोक + उक्ति' अर्थात् लोगों द्वारा कहा गया विशेष कथन। लोकोक्ति को कहावत या जनश्रुति भी कहते हैं। यह भी मुहावरे की तरह अपना सामान्य अर्थ छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करती है।

प्रमुख लोकोक्तियाँ तथा उनका प्रयोग

1. अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता = अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता

   क्रिकेट के खेल में एक ही अच्छा खिलाड़ी था, इस कारण मैच हार गए। भाई अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ा करता है।

2. आम के आम गुठलियों के दाम = दोहरा लाभ

   मैं अखबार पढ़ता हूँ और फिर उन्हें रद्दी में बेच देता हूँ जिससे वह आम के आम गुठलियों के दाम हैं।

3. एक अनार सौ बीमार = जरूरत ज्यादा, वस्तुएँ कम

   गाँव में एक ही कुआँ है जिससे पानी भरने के लिए सभी लड़ते हैं। क्या करें, एक अनार सौ बीमार वाली कहावत है।

4. एक पंथ दो काज = एक साथ दो काम पूरे होना

   मैं आगरा काम से गया, वहाँ मैंने ताजमहल भी देखा। इस कारण एक पंथ दो काज हो गए।

5. उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे = अपना दोष छुपाकर दूसरे को डाँटना

   रामू से दूध फैला और छोटे भाई को दोष लगा दिया। इसे कहते हैं उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

6. काला अक्षर भैंस बराबर = निरा मूर्ख या अनपढ़

देहातों में अभी बहुत से ऐसे व्यक्ति भी हैं जिनके लिए काला अक्षर भैंस बराबर है।

7. खोदा पहाड़ निकली चुहिया = परिश्रम करने पर भी कुछ प्राप्त न होना

पूरे वर्ष कड़ी मेहनत से खेती की किंतु कुल दो कुंतल अनाज पैदा हुआ, वास्तव में खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

8. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा = जो पहले से बुरा है उसका साथ भी बुरा होता है।

एक तो पढ़ाई नहीं की, दूसरे उसे मित्र भी अनपढ़ मिले तो यह सिद्ध हो गया कि एक तो करेला ऊपर से नीम चढ़ा।

9. घर का भेदी लंका ढावे = आपसी फूट से हानि होती है

रावण को विभीषण ने ही उसका असली भेद बताकर मरवाया, कहावत भी तो है घर का भेदी लंका ढावे।

10. नाच न जाने आँगन टेढ़ा = दूसरों को दोषी बताना

रमेश जब ठीक से नाच नहीं सका तो स्टेज को दोष देने लगा। मैंने कहा–नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

11. चोर की दाढ़ी में तिनका = दोषी अपना दोष प्रकट कर देता है।

पुलिस को देखकर गोपाल भागने लगा क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका होता है।

12. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी = जड़ से नष्ट कर देना

शत्रु को पैदा होते ही मार देना चाहिए ताकि न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

13. जान न पहचान मैं तेरा मेहमान = जबरदस्ती गले पड़ना

रमेश के घर कोई दूर के रिश्तेदार आए जिन्हें वह जानता भी नहीं था, तो जान न पहचान मैं तेरा मेहमान वाली कहावत चरितार्थ हो गई।

14. श्रीगणेश करना = आरंभ करना

मैंने आज दुकान खोलकर श्रीगणेश कर दिया है।

15. अंगद का पैर होना = कार्य में दृढ़ता से जमना

उसने शिक्षक से प्रधानाचार्य बनकर अपने कार्य में अंगद के पैर की तरह जमा दिया।

आपने क्या सीखा

1. सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करने वाला वाक्य मुहावरा कहलाता है।
2. मूल रूप से मुहावरा 'अरबी भाषा' का शब्द है।
3. मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर तथा प्रभावपूर्ण बन जाती है।
4. लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है–लोगों द्वारा कहा गया विशेष कथन।
5. लोकोक्ति को जनश्रुति अथवा कहावत भी कहते हैं।

अभ्यास

1. **मुहावरे की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।**

_____

_____

2. मुहावरे तथा लोकोक्ति में क्या अंतर है ?

_____

_____

3. नीचे दिए वाक्यों के लिए उचित मुहावरे लिखिए–

(क) प्रारंभ करना – _____

(ख) अधिक प्यारा – _____

(ग) भाग जाना – _____

(घ) धोखा देना – _____

4. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

मुहावरा		अर्थ	वाक्य-प्रयोग
कान भरना	–	_____	_____
आस्तीन का साँप	–	_____	_____
आँख दिखाना	–	_____	_____
अंधे की लकड़ी	–	_____	_____
जी चुराना	–	_____	_____

26

पत्र-लेखन
(Letter Writing)

पत्र-लेखन एक महत्त्वपूर्ण कला है। इसके द्वारा हम अपने मनोभावों को प्रकट करते हैं। पत्र हमारे हृदय के विभिन्न पटलों को खोलने में सहायक हैं। ये हमारी भावनाओं तथा विचारों की पंखुड़ियों से निर्मित सुंदर पुष्प हैं।

पत्र के माध्यम से उसके लेखक का व्यक्तित्व भी स्पष्ट हो जाता है। महान् लेखकों एवं साहित्यकारों द्वारा लिखे पत्र एक अमूल्य निधि बन जाते हैं।

दो अनजान व्यक्तियों में आत्मीय संबंध बनाना भी पत्र की अपनी एक विशेषता है। किसी के सामने हमें जिस बात को कहने में संकोच होता है उसे हम पत्र द्वारा व्यक्त कर सकते हैं।

पत्र की परिभाषा–वह कागज का टुकड़ा, जिस पर हम अपने मन के विचार प्रकट करते हैं, पत्र कहा जाता है।

पत्रों के प्रकार

पत्र मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं–

1. व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्र (Personal Letters)
2. व्यावसायिक पत्र (Business Letters)
3. सरकारी पत्र (Official Letters)

1. **व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्र**–मित्रों, संबंधियों आदि को लिखे जाने वाले पत्र इस वर्ग में आते हैं। इन पत्रों में कुशल, बधाई तथा निमंत्रण पत्र आदि भी आते हैं।
2. **व्यावसायिक पत्र या व्यापारिक पत्र**–ऐसे पत्र जो व्यापार या व्यवसाय संबंधी (माल खरीद/बिक्री) लिखे जाते हैं, वे इस वर्ग में आते हैं। ऐसे पत्रों में प्रायः संबंधित विषय के अतिरिक्त कुछ नहीं लिखा जाता।
3. **सरकारी पत्र**–सरकारी, अद्‌र्धसरकारी तथा निगमों आदि के अधिकारियों को लिखे जाने वाले पत्र इस वर्ग में आते हैं। इसमें अधिकारियों को प्रार्थना पत्र देने, शिकायत करने आदि के संबंध में पत्र लिखे जाते हैं।

पत्र लिखने की विधि

नई प्रथा के अनुरूप पत्र को सात भागों में बाँटा गया है–

1. स्थान तथा दिनांक–पत्र के ऊपर दाईं ओर अपना स्थान एवं तिथि लिखनी चाहिए।
2. संबोधन–पत्र के शुरू में बाईं ओर संबोधन लिखना चाहिए।
3. पत्र का कलेवर–यह पत्र का मुख्य विषय होता है।
4. समाप्ति–पत्र के समाप्त होने पर कुछ वाक्य या शब्द लिखना भी एक परंपरा है।
5. अभिवादन–संबोधन के नीचे यथायोग्य अभिवादन शब्द लिखा जाता है।
6. हस्ताक्षर के पूर्व की शब्दावली–पत्र के अंत में पत्र लिखने वाले के द्वारा अपने लिए कुछ संबंधवाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है।
7. हस्ताक्षर–बड़ों को लिखे गए पत्र में केवल अपना नाम ही लिखना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें–

एक अच्छे पत्र को लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान रखना आवश्यक है–

1. पत्र की भाषा विषय के अनुरूप होनी चाहिए।
2. पत्र में मुख्य बात पर ही संक्षेप में बल देना चाहिए।
3. पत्र में विचारों की क्रमबद्धता का होना आवश्यक है।
4. पत्र की भाषा-शैली सरल तथा आकर्षक होनी चाहिए।
5. प्रार्थना-पत्रों में विनम्रता का भाव प्रदर्शित करना चाहिए।
6. पत्र की लिखावट स्पष्ट होनी चाहिए।

उदाहरण–

(i) स्थान अथवा पता

(ii) तिथि _____

(iii) संबोधन _____

(iv) अभिवादन _____

(v) विषय _____

(vi) निवेदन _____

संबंध के अनुसार पत्रों में संबोधन, अभिवादन तथा अंत में निवेदन का प्रारूप–

1. अपने से बड़ों के लिए

संबंध	–	माता, पिता, गुरु, बड़ा भाई, चाचा, मामा आदि।
आरंभ	–	पूज्य, पूजनीय, आदरणीय, परमादरणीय, श्रद्धेय आदि।
अभिवादन	–	सादर प्रणाम, सादर चरण स्पर्श।
निवेदन	–	आपका आज्ञाकारी, आपका कृपापात्र, कृपाभिलाषी।

2. अपने से छोटों के लिए

आरंभ	–	प्रिय अनुज, प्रियवर आदि।
अभिवादन	–	शुभाशीष, चिरंजीव, प्रसन्न रहो आदि।
निवेदन	–	तुम्हारा शुभचिंतक, शुभाकांक्षी।

3. मित्रों के लिए

आरंभ	–	प्रिय जगजीत, प्रिय मित्र, सहृदय आदि।
अभिवादन	–	सस्नेह नमस्कार।
निवेदन	–	आपका परम मित्र, आपका अपना आदि।

4. व्यावहारिक पत्र

आरंभ	–	प्रिय महोदय, प्रिय महाशय, श्रीमान् जी।
अभिवादन	–	नमस्कार, प्रणाम आदि।
निवेदन	–	भवदीय, निवेदक, शुभचिंतक आदि।

कुछ सामान्य पत्रों के नमूने

1. पुत्र की ओर से पिता को पत्र–

158, बसंत विहार

दिल्ली।

06, अप्रैल, 20____

परम पूजनीय पिताजी,

सादर चरण स्पर्श।

मैं यहाँ पर कुशलपूर्वक रह रहा हूँ और आशा करता हूँ कि आप भी कुशलपूर्वक होंगे। अब मेरी परीक्षाएँ शुरू होने वाली हैं। परीक्षाफल ईश्वर की कृपा और आपके चरणों के आशीर्वाद से पूर्ववत् ही रहेगा। परीक्षाएँ समाप्त होते ही मैं घर आ जाऊँगा। पूज्य माता जी को चरण वंदना। छोटे भाई-बहनों को सस्नेह आशीष।

आपका बेटा–

अजय शंकर

2. मित्र को पत्र–

145, साकेत–वाराणसी।

03, मार्च, 20___

प्रिय मित्र मनोज,

सादर नमस्कार।

मैं कुशलपूर्वक रहकर ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की कामना करता हूँ। तुम्हारा पत्र प्राप्त हुआ। तुमने पूछा है कि ग्रीष्मावकाश को किस प्रकार मनाया जाये ? इस विषय में मैंने गोपाल, सुरेश तथा अजय से मिलकर कुछ कार्यक्रम तैयार किया है। इस वर्ष हम सब जयपुर की सैर से आनंद उठाते हुए भारत के कुछ ऐतिहासिक नगरों का भ्रमण करेंगे। शेष सब ठीक है।

तुम्हारा परम मित्र

शिवांश द्विवेदी

3. भाई के विवाह पर मित्र को निमंत्रण–

184, हुसैनपुरा

शाहजहाँपुर।

1 जुलाई, 20___

प्रिय मित्र राजीव,

सप्रेम नमस्ते।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मेरे छोटे भाई का शुभ विवाह 20-07-20____ को होना निश्चित हुआ है। बारात लखनऊ जाएगी। हम बस द्वारा बारात लेकर लखनऊ के लिए 20 जुलाई को अपने निवास स्थान-ताजूखेल बरेली से प्रस्थान करेंगे। ऐसे शुभ अवसर की शोभा मित्र ही बढ़ाते हैं। अतः आप कृपा करके, इस निमंत्रण-पत्र को स्वीकार करें तथा सपरिवार पधारकर शोभा बढ़ाएँ।

आपका मित्र

अजय शंकर

4. अवकाश के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र–

सेवा में,

श्रीमान् प्रधानाचार्य जी,

अवध पब्लिक इंटर कॉलेज

शाहजहाँपुर।

महादेय,

विनम्र निवेदन है कि मैं पिछले दो दिनों से जुकाम व बुखार से पीड़ित हूँ। इस कारण विद्यालय आने में असमर्थ हूँ। जिला अस्पताल में मेरा इलाज चल रहा है। अतः महोदय से निवेदन है कि मुझे तीन दिन का अवकाश प्रदान करें।

सधन्यवाद।

दिनांक : _____

आपका आज्ञाकारी शिष्य

आशुतोष तिवारी

कक्षा–VI—'A'

5. पुस्तक मँगाने के लिए प्रकाशक को पत्र–

सेवा में,

श्रीमान् व्यवस्थापक महोदय

जीनियस प्रकाशन

मेरठ।

महोदय,

कृपया निम्नलिखित पुस्तकें वी0 पी0 पी0 से शीघ्र भेजने का कष्ट करें। मैं दो सौ रुपए अग्रिम भेज रहा हूँ। मैं विश्वास दिलाता हूँ कि वी0 पी0 पी0 आते ही उसे छुड़ा लूँगा। पुस्तकें कृपया नवीन संस्करण की ही भेजें। पुस्तकों की सूची अग्र प्रकार है–

संस्कृत (भाग–1)–50 प्रतियाँ

संस्कृत (भाग–2)–50 प्रतियाँ

हिंदी व्याकरण (भाग–3)–23 प्रतियाँ

हिंदी व्याकरण (भाग–4)–15 प्रतियाँ

विज्ञान (भाग–2)–15 प्रतियाँ।

धन्यवाद।

भवदीय

नरेश बुक डिपो

कच्चा कटरा

शाहजहाँपुर।

आपने क्या सीखा

1. पत्र के माध्यम से हम दूरस्थ व्यक्ति का समाचार ज्ञात करते हैं।
2. पत्र लिखना पढ़ाई के साथ-साथ आवश्यक कला भी है।
3. पत्र प्रायः तीन प्रकार के लिखे जाते हैं।
4. पत्र के अंतर्गत हमें 7 बातों का ध्यान रखना चाहिए।

अभ्यास

1. पत्र किसे कहते हैं ?

_____

2. पत्र कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम लिखिए।

_____

3. विवाह के लिए निमंत्रण-पत्र कैसे लिखेंगे ? उसका एक नमूना (प्रारूप) लिखिए।

_____

_____

_____

4. अवकाश के लिए अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

_____

_____

_____

27 अनुच्छेद-लेखन
(Paragraph Writing)

अनुच्छेद-लेखन में संक्षेप में किसी एक विषय की मुख्य बातों का उल्लेख किया जाता है। अनुच्छेद एक प्रकार का लघु निबंध-लेखन होता है, जो सीमित एवं सुगठित शब्दों में लिखा जाना चाहिए। निबंध तथा अनुच्छेद में मुख्य अंतर यह होता है कि निबंध में किसी एक विषय के अनेक पहलुओं का समावेश किया जाता है, जबकि अनुच्छेद में विषय के सीमित पहलुओं का ही संक्षेप में वर्णन किया जाता है।

कुछ प्रमुख अनुच्छेद

1. शिष्टाचार

प्रत्येक समाज के कुछ ऐसे व्यावहारिक नियम होते हैं जिनके पालन की अपेक्षा समाज के हर व्यक्ति से की जाती है। अपने से बड़ों व गुरुजनों के प्रति विनम्र व्यवहार तथा छोटों के प्रति प्यार, सद्भाव व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार ही शिष्टाचार है। कक्षा में शिक्षक का अभिवादन करना व उनके सम्मान में खड़े हो जाना भी शिष्टाचार है। अपने से बड़ों को प्रणाम करना, अपने दोस्तों तथा साथियों का मुस्कुराकर अभिनंदन करना तथा उनका कुशलक्षेम पूछना, अपनों से छोटों के हाल-चाल पूछना, मेहमानों का आदर व स्वागत करना तथा उनके लिए शीघ्र उचित जलपान की व्यवस्था करना और उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखना शिष्टाचार के अंतर्गत ही आता है। वास्तव में शिक्षा और संस्कृति की सारी शोभा शिष्टाचार में ही समाई है। शिष्टाचार से मानव का जीवन सुदृढ़ हो जाता है।

2. प्रदूषण

आज का युग विज्ञान का युग है। आज मानव ने हर क्षेत्र में बहुत प्रगति की है। कहीं भी कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जहाँ विज्ञान ने अपने पाँव न जमाए हों। मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधा के लिए अनेक प्रकार की मशीनों का आविष्कार किया। समय की गति के साथ-साथ जनसंख्या में भी निरंतर वृद्धि हो रही है। जनसंख्या-वृद्धि के कारण ही मनुष्य ने वनों को काटकर, उद्योग धंधों और कृषि का विस्तार किया है। इससे वर्षा, जलवायु तथा भूमि पर इसका दुष्प्रभाव पड़ा है। वनों के कारण वातावरण प्रदूषित नहीं होता तथा मिलों की चिमनियों से निकलता धुआँ तथा मिलों से बहने वाले पदार्थों से वातावरण प्रदूषित होता नजर आ रहा है। इसी प्रकार मिलों से बेकार हो जाने वाला पदार्थ नदी-नालों में बहा दिया जाता है जिससे जल-प्रदूषण हो जाता है। अतः वृक्षों को काटने से रोकना चाहिए और नए-नए वृक्ष लगाने चाहिएँ; जिससे प्राकृतिक वातावरण में संतुलन बना रहे।

3. अनुशासन

अनुशासन जीवन के क्षेत्र में परमावश्यक है। चाहे हम विद्यालय में हों, ऑफिस में हों, घर में हों–प्रत्येक जगह अनुशासन हमारे व्यवहार की शोभा है। इसी से हर जगह तथा हर स्थिति में एक व्यवस्था बनी रहती है। विद्यालय में प्रवेश के समय से लेकर कक्षा में, खेल के मैदान में तथा प्रयोगशाला आदि में अनुशासन बनाए रखना आवश्यक है। घर में भी चाहे हम पढ़ रहे हों, खाना खा रहे हों या आपस में बातचीत कर रहे हों; अनुशासन के प्रति हर क्षण सतर्क रहना आवश्यक है। हमारे जिस कार्य अथवा व्यवहार से दूसरों को अपने कार्यों में सुविधा हो तथा सामूहिक जीवन सुव्यवस्थित और शोभनीय लगे, वही अनुशासन है। यही कारण है कि एक ओर जहाँ अनुशासन हमारे व्यक्तित्व को निखारता है वहीं दूसरी ओर हमारे सामाजिक जीवन को सुंदर भी बनाता है। इस प्रकार अनुशासन ही जीवन का प्रमुख आधार है।

4. परोपकार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। हर व्यक्ति सुख की खोज में लगा रहता है। तन का सुख मनुष्य तथा पशु-पक्षी सभी को समान रूप से चाहिए, जबकि मन व आत्मा के सुख केवल मनुष्यों के लिए ही हैं। मन से संबंधित जितने भी सुख हैं उनमें सबसे बड़ा सुख है–परोपकार का सुख। तुलसीदास जी ने अपने शब्दों में कहा है–''परहित सरिस धर्म नहीं भाई''। परोपकार का एक उदाहरण यह भी है कि सूर्य स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है और वृक्ष स्वयं धूप सहकर राहगीर को छाया व फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति केवल स्वार्थ में ही लिप्त है, वह पशु के समान है। परोपकार के लिए ही सुकरात ने जहर पिया तथा गांधी जी ने गोलियाँ खाईं। भारतीय संस्कृति में परोपकार को मानव का प्रमुख कर्त्तव्य बताया गया है।

सच्चा मनुष्य वही है, जो स्वयं के लिए न जीकर अपने जीवन-काल में परोपकार भी करे। जब हम अपने जीवन को परोपकार में लगा देते हैं तो हमारा जीवन धन्य हो जाता है। सदैव वे ही उन्नति को प्राप्त होते हैं जो परोपकार करते हैं। अतः परोपकार से बढ़कर जीवन का कोई धर्म नहीं है।

5. समाचार-पत्र

मानव हमेशा से ही अपने आस-पास की घटनाओं तथा दूर के समाचारों को जानने का उत्सुक रहा है। वह देश-विदेश की घटनाओं को जानना चाहता है तथा अपने आस-पास के वातावरण की भी जानकारी से परिचित रहना चाहता है। समाचार-पत्र ही उसकी इस जरूरत की पूर्ति करते हैं। समाचार-पत्रों में देश-विदेश की घटनाओं तथा अनेक समाचारों का विस्तार से वर्णन होता है। हमारे देश में भी विभिन्न भाषाओं के अनेक समाचार-पत्रों की भरमार है। आजकल समाचार-पत्रों में खेल-कूद, व्यापार, बाज़ार, भाव, दूरदर्शन के कार्यक्रम की जानकारी तथा अनेक प्रकार के विज्ञापन भी प्रकाशित होते हैं।

6. मोबाइल फ़ोन

आज संचार का प्रमुख साधन मोबाइल फ़ोन आम आदमी की आवश्यकता बन गया है। मोबाइल फ़ोन के कारण आज विश्व की दूरियाँ घट रही हैं। मोबाइल फ़ोन से आप कभी भी, कहीं भी, किसी से भी बात कर सकते हैं। मोबाइल फ़ोन में बातों के अतिरिक्त अन्य सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। जैस– खेल की सुविधाएँ, समाचार, केलक्युलेटर आदि। आज मोबाइल द्वारा संदेश भेजना एस.एम.एस. से बहुत आसान हो गया है। मोबाइल में हम फोटो खींचकर अपने सुनहरे पलों को यादगार भी बना सकते हैं। मोबाइल के लाभ होने के साथ-साथ कुछ नुकसान भी हैं। विद्यार्थी गण तो इसका गलत उपयोग करने लगे हैं। इसकी सबसे बड़ी कमी यह है कि लोग गाड़ी चलाते समय इसका उपयोग करते हैं। गाड़ी चलाते समय तो मोबाइल पर बात करना असुरक्षित होने के साथ-साथ कानूनन अपराध भी है। मोबाइल का उपयोग समझदारी के साथ करना चाहिए।

7. यदि मैं विद्यालय का प्रधानाचार्य बन जाऊँ

मानव मन कल्पनाओं का सागर है। मैंने भी अपने मन में विद्यालय का प्रधानाचार्य बनने की कल्पना की है। यदि मैं प्रधानाचार्य बन जाऊँगा तो मुझे एक आदर्श विद्यालय बनाने के लिए कई कार्य करने होंगे। मेरा यह सपना है कि मेरा विद्यालय अन्य विद्यालयों की अपेक्षा श्रेष्ठ बने। मैं अपने विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की प्रतिभाओं को उभारने की कोशिश करूँगा। विद्यालय में किताबी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी देने का प्रयत्न करूँगा। विद्यालय में खेलकूद, योग शिक्षा, सांस्कृतिक क्रियाकलापों पर भी विशेष ध्यान दूँगा। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए समय-समय पर भाषण प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, गायन, नृत्य आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाऊँगा। विद्यालय में अनुशासन का विशेष ध्यान रखूँगा। मेरा यह प्रयास रहेगा कि इस विद्यालय में पढ़ने वाले सभी छात्र प्रबुद्ध, अनुशासित तथा कर्मठ नागरिक बनें।

8. मीठी वाणी

वाणी ईश्वर का दिया हुआ अनमोल वरदान है। यदि व्यक्ति के पास वाणी न हो तो यह संसार सूना लगेगा। मीठी वाणी सभी लोगों को प्रभावित करती है। जो लोग मधुरभाषी होते हैं, उन्हें सभी पसंद करते हैं। कोयल अपनी मीठी वाणी के कारण ही सब लोगों द्वारा पसंद की जाती है। मीठी वाणी सब लोगों को आनंदित ही नहीं करती, वरन बोलने वाले को भी आनंद पहुँचाती है। कटुभाषी लोगों को कोई भी पसंद नहीं करता। मीठी वाणी अमृत के समान होती है। अतः हमें हमेशा मधुर वाणी में ही बात करनी चाहिए।

9. समय का सदुपयोग

समय निरंतर चलता रहता है।यदि धन चला भी जाय तो मेहनत करके उसे दोबारा प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन बीते हुए समय को वापस नहीं लाया जा सकता। समय एक अमूल्य धन है, हमें उसका सदुपयोग करना चाहिए। आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। हर कार्य समयसारणी बनाकर उसके अनुसार करना चाहिए। जो व्यक्ति समय पर अपना काम करता है, सफलता उसके कदम चूमती है। इसके विपरीत जो व्यक्ति समय के महत्व को नहीं समझता, उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण रहता है। ऐसे व्यक्ति में आत्मविश्वास

की कमी रहती है। कहा भी गया है जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। अतः स्वयं की, समाज की और देश की उन्नति के लिए समय का सदुपयोग नितांत आवश्यक है।

अभ्यास

1. नीचे दिए विषयों पर अपनी उत्तर-पुस्तिका में अनुच्छेद लिखिए।

(क) कॉमनवेल्थ खेल

(ख) मेरा गप्पी मित्र

(ग) जब मैं गलत स्टेशन पर उतर गया

(घ) जब मैं पहली बार हवाई जहाज़ में बैठा

(ङ) जब मेरा झूठ सबके सामने पकड़ा गया

(च) हमारा खेल का घंटा

(छ) मेरा प्रिय खेल

(ज) किताबें-हमारी मित्र

2. अनुच्छेद की परिभाषा दीजिए।

_____

_____

3. आज के मीडिया युग के ऊपर एक अनुच्छेद लिखिए।

_____

_____

28 कहानी-लेखन
(Story-Writing)

मनुष्य का इतिहास जितना पुराना है, कहानी भी उतनी ही पुरानी है। प्राचीनकाल से ही कहानी को सुना, पढ़ा तथा लिखा जाता रहा है। मानव की प्रवृत्ति है कि वह बचपन से ही कहानी सुनना पसंद करता है। हिंदी भाषा में कहानियों की भरमार है।

कहानी लिखते समय निम्नलिखित सावधानियाँ रखनी चाहिएँ–

1. कहानी की कथा-वस्तु रोचक हो, जिससे पढ़ने वाले में रुचि पैदा हो।
2. कहानी वातावरण के अनुकूल लिखनी चाहिए।
3. कहानी के कथोपकथन छोटे, सरल व सरस होने चाहिएँ।
4. कहानी की भाषा स्पष्ट, रोचक व बच्चों को शीघ्र ही समझ में आने वाली होनी चाहिए।
5. कहानी शिक्षाप्रद होनी चाहिए।

कुछ कहानियाँ

1. मैंने ऐसा कभी नहीं सुना

किसी जंगल में एक सिंह रहता था। उसकी आहट मात्र से जंगल के अन्य वन्य जीव भाग खड़े होते थे। इससे उसे भोजन प्राप्त करने में परेशानी होने लगी। एक दिन वह भूखा-प्यासा शाम तक घूमता रहा और अंत में एक गुफा में चला गया। गुफा में गीदड़ के रहने के लक्षण देखकर सिंह प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि गीदड़ रात्रि-विश्राम के लिए यहाँ अवश्य आएगा। मैं उसे मारकर खाऊँगा।

उस गुफा में गीदड़ अपने परिवार के साथ रहता था। गीदड़ ने लौटने पर जब शेर के पद-चिन्हों को देखा तो वह चौंक पड़ा। गुफा में जाने के पद-चिन्ह थे, परंतु वापस आने के नहीं। अतः सिंह गुफा में ही था या नहीं, यह जानना काफी मुश्किल था।

गीदड़ ने एक क्षण सोचा और जोर से बोला–'हे गुफा! मैं आ गया हूँ। सब ठीक है न।

कोई उत्तर नहीं मिलने पर गीदड़ ने फिर कहा–'हे गुफा! क्या कारण है, जो तुम आज मेरी बात का उत्तर नहीं दे रही हो ? क्या तुम किसी प्राणी से भयभीत हो ?'

सिंह ने जब यह सुना तो सोचा कि गुफा अवश्य ही गीदड़ के पुकारने पर बोलती है। आज मेरे भय के कारण नहीं बोली। अब मुझे ही गुफा के रूप में आवाज देनी होगी। यह सोचकर सिंह ने गर्जना की। सिंह की गर्जना सुनते ही वन्य-जीव इधर-उधर भागने लगे। गीदड़ इस गर्जना को सुनते ही अपने परिवार के साथ पलायन करते हुए बोला–"विचार किए बिना और अच्छी

प्रकार से निरीक्षण किए बिना अचानक कोई कार्य नहीं करना चाहिए। चाहे वह अपने घर में ही जाना हो।''

इस प्रकार यदि गीदड़ ने सावधानी से काम न लिया होता, तो उसका सारा परिवार मारा गया होता।

2. व्यर्थ कदापि न बोलो

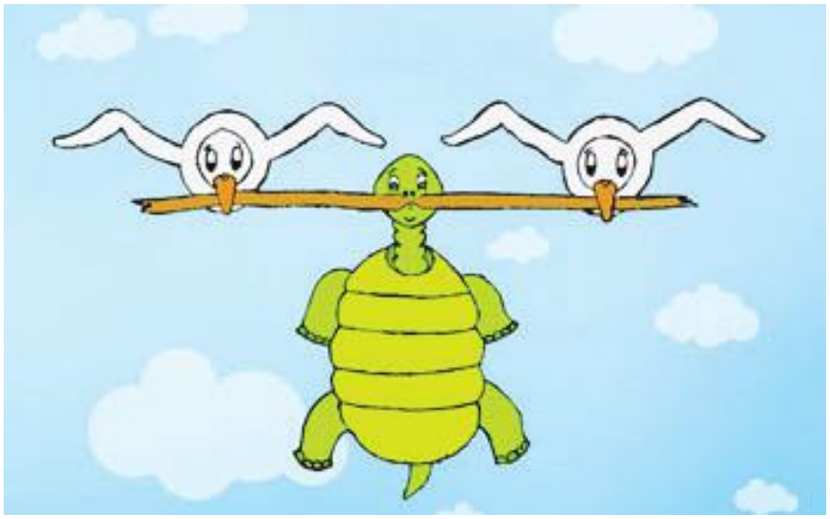

किसी जलाशय में एक कछुआ रहता था। उसी जलाशय में दो बगुले भी रहते थे। बगुलों और उस कछुए में बड़ी मित्रता हो गई। अचानक गर्मी की ऋतु में जलाशय सूखने लगा। इससे कछुए की चिंता बढ़ने लगी। एक दिन कछुए को दुःखी देकर बगुलों ने पूछा–''मित्र ! तुम परेशान क्यों हो ?'' इस पर कछुए ने अपनी चिंता का कारण बताया। इस पर बगुले भी चिंतित हो गए। बगुलों ने कहा–''मित्र होने के नाते एक मित्र की सहायता करना हमारा कर्त्तव्य है। क्या हम आपकी कोई सहायता कर सकते हैं ?''

कुछ देर सोचने के बाद कछुए ने कहा–''जरूर, आप लोग एक लकड़ी का सीधा डंडा लाकर उसे दोनों ओर से अपनी चोंच में पकड़ कर उड़ेंगे और मैं डंडे को बीच में पकड़ूँगा। इस प्रकार आप मुझे किसी बड़े जलाशय में डाल सकते हैं।''

बगुलों ने ऐसा ही किया। वे एक लकड़ी का डंडा ले आए और एक बड़ा-सा जलाशय भी देख आए। उन्होंने कछुए से कहा–''मित्र! तुम किसी भी दशा में मुँह मत खोलना और डंडे को मजबूती से पकड़े रहना, अन्यथा गिर जाओगे।'' कछुए ने कहा–''मैं कदापि मुँह नहीं खोलूँगा।'' अब बगुले इस डंडे को लेकर उड़ चले। कुछ देर बाद वे नगर के ऊपर से गुजर रहे थे। वहाँ बच्चों ने इस विचित्र दृश्य को देखा तो शोर मचाने लगे कि देखो-देखो बगुले एक केकड़े को ले जा रहे हैं।

कछुआ यह सुनकर अपने को रोक न सका और बोल पड़ा ''मूर्खों ! मैं केकड़ा नहीं कछुआ हूँ।'' किंतु मुँह खुलते ही डंडा कछुए के मुँह से छूट गया और जमीन पर गिरकर वह मर गया।

अतः व्यर्थ कदापि नहीं बोलना चाहिए।

3. कपटी का अंत बुरा

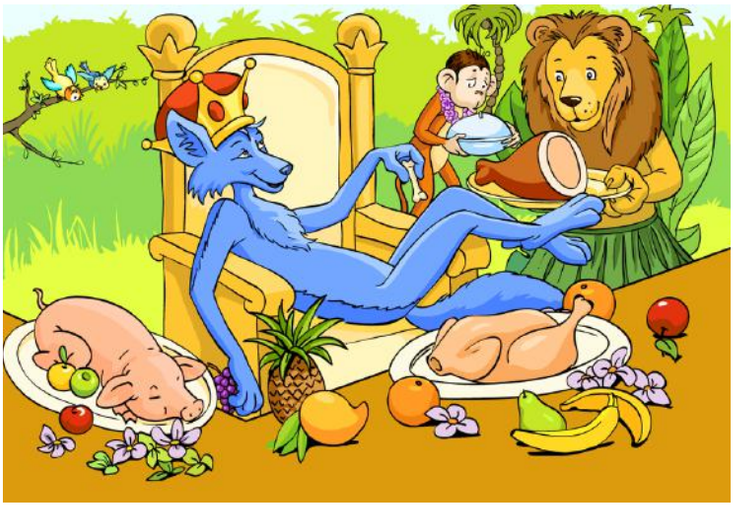

एक सियार भोजन की तलाश में एक धोबी के नील वाले ड्रम में जाकर गिर गया। सुबह पानी पीते हुए अपनी परछाई में अपना शरीर नीला रँगा देख कर उसका लाभ उठाने के बारे में सियार सोचने लगा। उसने सभी जानवरों को बुलाकर कहा–''ईश्वर ने मुझे जंगल का नया राजा नियुक्त किया है। अतः सभी को मेरे आदेश का पालन करना पड़ेगा।''

सभी जानवर उसे उचित फल, मांस आदि लाकर खिलाने लगे। कुछ समय में ही वह सियार मोटा ताजा व हृष्ट-पुष्ट हो गया।

एक दिन सभी सियारों के दल ने एक साथ हुँकार भरकर हुआँ-हुआँ किया। इस आवाज को सुनकर उस रँगे सियार से रहा न गया तथा वह भी मुँह ऊपर करके हुआँ-हुआँ करने लगा। यह देखकर सभी जानवर समझ गए कि यह कोई जंगल का राजा नहीं बल्कि नीले रंग में रँगा हुआ एक सियार है। यह दृश्य देखकर सारे जानवरों ने क्रोधित होकर उस रँगे सियार को मार डाला।

4. चतुर खरगोश

एक जंगल में एक अत्यंत खूँखार सिंह रहता था। वह भोजन के लिए प्रतिदिन अनेक जानवरों को मार देता था। एक दिन सभी जानवर आपस में विचार-विमर्श करके सिंह के पास पहुँचे। उन्होंने सिंह से निवेदन किया कि वह अनेक जानवरों को न मारे। वे एक-एक करके स्वयं ही उसके पास पहुँचेंगे। यह सुनकर सिंह सहमत हो गया।

उस दिन से सिंह को बैठे-बैठे भोजन मिलने लगा। एक दिन चतुर खरगोश की बारी आई। उसने शेर से छुटकारा पाने की तरकीब सोची। वह शेर के पास जान-बूझकर देरी से पहुँचा। शेर क्रोध से तिलमिला रहा था। खरगोश ने विनम्रता से कहा–महोदय, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। रास्ते में एक दूसरे सिंह ने मुझे रोक लिया था। सिंह ने दहाड़ते हुए कहा–"चलो, मुझे वह सिंह दिखाओ। पहले मैं उसको मारूँगा, बाद में तुम्हें खाऊँगा।"

खरगोश सिंह को साथ लेकर एक कुएँ के पास पहुँचा। खरगोश ने कुएँ में झाँककर देखा और कहा–"महोदय, आपके डर से वह इस कुएँ में छिप गया है।" सिंह ने कुएँ में झाँककर देखा तो उसे अपनी परछाईं दिखाई दी। उसे दूसरा सिंह समझकर वह उस पर टूट पड़ा तथा कुएँ में गिर कर मर गया। इस प्रकार चतुर खरगोश ने अपनी बुद्धिमत्ता से अपने प्राणों की रक्षा की।

5. हठ का परिणाम

एक गाँव के पास एक नदी बहती थी। गाँव वालों ने उसे पार करने के लिए उस पर टूटे हुए पेड़ का तना डाल दिया था। उस पर धीरे-धीरे पैर जमाकर लोग नदी को पार जाते थे।

एक दिन पेड़ के तने के पुल से एक बकरी पार जा रही थी। अचानक उसे सामने से एक दूसरी बकरी आती दिखाई दी। पुल पर इतनी जगह नहीं थी कि दोनों बकरियाँ एक साथ पुल पार कर पातीं। दोनों ही जिद्दी और अड़ियल थीं। चलते-चलते पुल के बीच में दोनों एक दूसरें के आमने-सामने आ गईं। वे एक-दूसरे को घूरने लगीं और एक-दूसरे को हटने के लिए कहने लगीं। किसी ने भी एक-दूसरे की बात नहीं मानी और लड़ने लगीं। एक-दूसरे के सींग-में-सींग फँसाकर वह दूसरे को धकेलकर पीछे हटने को कहतीं। दोनों अपनी हठ पर अड़ी रहीं और लड़ते-लड़ते दोनों ही नदी में गिर गईं।

6. कश्मीरी सेब

कल शाम को चौक में दो-चार जरूरी चीज़ें खरीदने लगा था। पंजाबी मेवाफ़रोशों की दुकानें रास्ते में ही पड़ती हैं। एक दुकान पर बहुत अच्छे, रंगदार, गुलाबी सेब सजे हुए नजर आए। जी ललचा उठा। आजकल शिक्षित समाज में विटामिन और प्रोटीन के शब्दों पर विचार करने की प्रवृत्ति हो गई है। टमाटर को पहले कोई मुफ़्त में भी न पूछता था। अब टमाटर भोजन का आवश्यक अंग बन गया है। गाजर भी पहले गरीबों के पेट भरने की चीज थी। अमीर लोग तो उसका हलवा ही खाते थे; मगर अब पता चला है कि गाजर में भी बहुत विटामिन हैं; इसलिए गाजर को भी मेज़ों पर स्थान मिलने लगा है और सेब के विषय में तो यह कहा जाने लगा है कि एक सेब रोज़ खाइए जो आपको डॉक्टर की जरूरत न रहेगी। डॉक्टर से बचने के लिए हम निबौरी तक खाने को तैयार हो सकते हैं। सेब तो रस और स्वाद में अगर आम से बढ़कर नहीं है, तो घटकर भी नहीं। हाँ, बनारस के लँगड़े और लखनऊ के दशहरी और मुंबई के अल्फाँसों की बात दूसरी है। उनकी टक्कर का फल तो संसार में दूसरा नहीं है; मगर उनमें विटामिन और प्रोटीन हैं या नहीं? है, तो कितने हैं या नहीं हैं, इन विषयों पर अभी किसी पश्चिमी डॉक्टर की रिसर्च देखने में नहीं आई। सेब को यह विशेषता मिल चुकी है कि अब वह केवल स्वाद की चीज़ नहीं है, उसमें गुण भी हैं। हमने दुकानदार से मोल-भाव किया और आधा सेर सेब माँगे।

दुकानदार ने कहा– "बाबूजी! बड़े मज़ेदार सेब आए हैं, खास कश्मीर के। आप ले जाएँ, खाकर तबीयत खुश हो जाएगी।"

मैंने रुमाल निकालकर उसे देते हुए कहा– "चुन-चुनकर रखना।"

दुकानदार ने तराजू उठाई और अपने नौकर से बोला– "आधा सेर कश्मीरी सेब निकाल ला। चुनकर लाना।"

नौकर चार सेब लाया। दुकानदार ने तौला, एक लिफ़ाफे में उन्हें रखा और रुमाल में बाँधकर मुझे दे दिया। मैंने चार आने उसके हाथ में रखे। घर आकर लिफ़ाफा ज्यों-का-त्यों रख दिया। रात को सेब या कोई दूसरा फल खाने का कायदा नहीं है। फल खाने का समय तो प्रातःकाल है। आज सुबह मुँह-हाथ धोकर जो नाश्ता करने के लिए एक सेब निकाला, तो वह सड़ा हुआ था। एक रुपये के आकार का छिलका गल गया था। समझा, रात को दुकानदार ने देखा न होगा। दूसरा निकाला। मगर वह आधा सड़ा हुआ था। अब संदेह हुआ, दुकानदार ने मुझे धोखा तो नहीं दिया है। तीसरा सेब निकाला। वह सड़ा तो न था; मगर एक तरफ दबकर बिल्कुल पिचक गया था। चौथा देखा। वह यों तो बेदाग था; मगर उसमें एक काला सुराख था, जैसा अक्सर बेरों में होता

है। काटा तो भीतर वैसे की धब्बे दिखाई दिए जैसे कि सड़े बेर में होते है। एक सेब भी खाने लायक नहीं। चार आने पैसों का इतना गम न हुआ, जितना समाज के इस चारित्रिक पतन का। दुकानदार ने जान-बूझकर मेरे साथ धोखेबाजी का व्यवहार किया। एक सेब सड़ा हुआ होता, तो मैं उसको क्षमा के योग्य समझता। सोचता, उसकी निगाह न पड़ी होगी। मगर चारों-के-चारों खराब निकल जाएँ, यह तो साफ़ धोखा है। मगर इस धोखे से मेरा भी सहयोग था। मेरा उसके हाथ में रुमाल रख देना मानो उसे धोखा देने की प्रेरणा थी। उसने भाँप लिया कि यह महाशय अपनी आँखों से काम लेने वाले जीव नहीं हैं और न इतने चौकस हैं कि घर से लौटाने आएँ। आदमी बेईमानी तभी करता है, जब उसे अवसर मिलता है। बेईमानी का अवसर देना, चाहे वह अपने ढीलेपन से हो या सहज विश्वास से, बेईमानी में सहयोग देना है। पढ़े-लिखे बाबुओं और कर्मचारियों पर तो अब कोई विश्वास नहीं करता। किसी थाने, कचहरी या म्यूनिसिपलिटी में चले जाइए, आपकी ऐसी दुर्गति होगी कि आप बड़ी-से-बड़ी हानि उठाकर भी उधर न जाएँगे। व्यापारियों की साख अभी तक बनी हुई थी। यों तौल में चाहे छटाँक-आध छटाँक कम कर लें; लेकिन आप उन्हें पाँच की जगह भूल से दस का नोट दे आते थे, तो आपको घबराने की कोई जरूरत न थी। आपके रुपये सुरक्षित थे।

मुझे याद है, एक बार मैंने मुहर्रम के मेले में एक खोमचेवाले से एक पैसे की रेवड़ियाँ ली थीं और पैसे की जगह अठन्नी दे आया था। घर आकर जब अपनी भूल मालूम हुई, तो खोमचेवाले के पास दौड़ा गया। आशा नहीं थी कि वह अठन्नी लौटाएगा, लेकिन उसने प्रसन्नचित्त भाव से अठन्नी लौटा दी और उलटे मुझसे क्षमा माँगी। यहाँ कश्मीरी सेब के नाम से सड़े हुए सेब बेचे जाते हैं! मुझे आशा है, पाठक बाज़ार में जाकर मेरी तरह आँखें बंद न कर लिया करेंगे, नहीं तो उन्हें भी कश्मीरी सेब ही मिलेंगे।

अभ्यास

दिए गए संकेतों के आधार पर कहानी लिखिए तथा उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए।

किसी गाँव में एक लकड़हारा _____ वह रोज़ जंगल में _____ एक दिन वह _____ अचानक उसकी _____ में गिर गई। वह _____ हो गया और नदी के किनारे बैठकर _____ तभी अचानक जल देवता _____ उन्होंने _____ रोने का कारण पूछा। लकड़हारे ने _____ जल देवता को _____ दया आ गई। उन्होंने _____ डुबकी लगाई और अपने हाथ में सोने _____ लेकर बाहर आए और उसे लकड़हारे को देने लगे। लकड़हारे ने कहा _____ जल देवता ने दोबारा _____ और वे चाँदी _____ पर लकड़हारे ने _____ अंत में जल देवता _____ प्रकट हुए। लोहे की कुल्हाड़ी देखकर _____ बहुत प्रसन्न हुआ। लकड़हारे की _____ देखकर _____ बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने _____ तीनों कुल्हाड़ी _____ ईमानदारी के कारण _____ लाभ हुआ।

29

निबंध-लेखन
(Essay-Writing)

निबंध का अर्थ है–भली प्रकार बँधा हुआ। साधारणतः इसका अर्थ है–नि + बंध अर्थात् अच्छी तरह से बँधी हुई रचना।

परिभाषा–निबंध गद्य की वह विद्या है जिसमें किसी एक विषय से संबंधित विचारों को अच्छी तरह से बाँधा जाता है।

निबंध के प्रकार

मुख्यतः निबंध चार प्रकार के होते हैं–

1. वर्णनात्मक	–	इस प्रकार के निबंधों में किसी जीवधारी, निर्जीव, स्थान, भवन तथा दृश्य आदि का वर्णन होता है।
2. विवरणात्मक	–	इस प्रकार के निबंधों में किसी घटना, जीवन-चरित्र, ऐतिहासिक घटना का वर्णन होता है।
3. विचारात्मक	–	इस प्रकार के निबंध विचार तथा विवाद पूर्ण होते हैं।
4. भावात्मक	–	इस प्रकार के निबंधों में सूक्तियों आदि पर निबंध लिखे जाते हैं।

1. महात्मा गांधी

तू चला लोग कुछ चौंक पड़े,
तूफान उठा या आँधी है।
ईसा की बोली रूह अरे,
यह तो बेचारा गांधी है।।

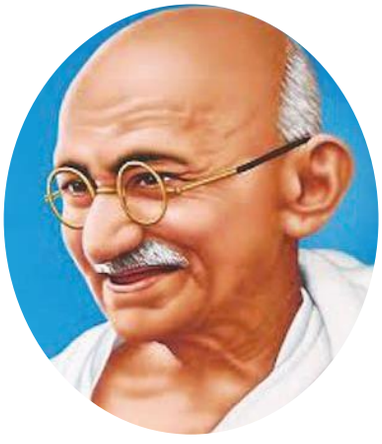

प्रस्तावना–महात्मा गांधी भारत की ऐसी ही विभूति हैं। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह के प्रयोग से अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश कर दिया। गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान में हुआ। इनके पिता करमचंद गांधी राजकोट राज्य के दीवान थे। माता पुतली बाई बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं।

गांधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर में हुई। ये अपने अध्यापकों का पूर्ण सम्मान करते थे। तेरह वर्ष की अल्पायु में कस्तूरबा के साथ आपका विवाह हुआ। आप प्रारंभ से ही सत्यवादी थे। वे कानून की शिक्षा पाने के लिए विलायत गए तथा वहाँ से बैरिस्टर बनकर स्वदेश लौटे।

गांधी जी ने मुंबई में आकर वकालत शुरू की। किसी विशेष मुकदमें की पैरवी करने के लिए वे दक्षिण अफ्रीका गए। वहाँ भारतीयों के साथ अंग्रेज़ों के दुर्व्यवहार को देखकर उनकी आत्मा कराह उठी। वहाँ पर उन्होंने सबसे पहले 'सत्याग्रह' का प्रयोग किया।

गांधी जी ने सन् 1942 के अंत में द्वितीय महायुद्ध के साथ 'अंग्रेज़ों भारत छोड़ो' आंदोलन का बिगुल बजाया। अंत में 15

अगस्त 1947 ई0 को अंग्रेज़ों को भारत से अपना बिस्तर समेटना पड़ा। गांधी जी का व्यक्तित्व महान् था। वे एक आदर्श पुरुष थे। वे अपनी अंतरात्मा की बात लोगों से कहते थे। वे सभी धर्मों का समान रूप से आदर करते थे। अछूतोद्धार के लिए उनके कार्य स्मरणीय हैं। वे शांति के पुजारी थे। स्वतंत्रता के पुजारी 30 जनवरी, 1948 ई0 को एक मनचले नौजवान नाथू राम गोडसे की गोली के शिकार हुए । अहिंसा का सबसे बड़ा पुजारी हिंसा की भेंट चढ़ गया। चाहे बापू भौतिक रूप से हमारे बीच में नहीं हैं तो भी उनके आदर्श इस महान् देश का पथ-प्रदर्शन करते रहेंगे। गांधी जी मरकर भी अमर हैं, क्योंकि उनके आदर्श आज भी हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। प्रख्यात साहित्यकार रामधारी सिंह 'दिनकर' जी के शब्दों में–

ली जाँच प्रेम ने बहुत मगर,
बापू तू सदा खरा उतरा।
शूली पर से भी बार-बार,
तू नूतन ज्योति भरा उतरा।।

2. विजय दशमी

"जग में सदा जीत होती है, पुण्य, सत्य और धर्म की।
यही अमर संदेश दशहरा देता, समझो बात मर्म की।।"

प्रस्तावना–भारत के प्रमुख त्योहारों में विजय दशमी का अपना विशेष महत्त्व है। यह असत्य पर सत्य की, अज्ञान पर ज्ञान की और दानवता पर मानवता की विजय का त्योहार है।

दशहरा पर्व क्वार मास के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को मनाया जाता है। कहते हैं, भगवान् राम के वनवास के दिनों में रावण छल से सीता को उठाकर लंका ले गया था। हनुमान ने उनकी खोज की। तब राम जी ने हनुमान और सुग्रीव आदि मित्रों की सहायता से लंका पर आक्रमण किया। एक घमासान युद्ध हुआ जिसमें भगवान राम और उनके अनुयायियों ने लंका की ईंट से ईंट बजा दी। कुंभकर्ण, मेघनाथ और रावण को मारकर लंका पर विजय पाई। तभी से यह त्योहार मनाया जाता है।

इसके अतिरिक्त इस दिन का और भी महत्त्व है। इस अवसर पर सिंहवाहिनी दुर्गा की प्रतिमा का पूजन नौ दिन होता है। इस अवसर पर जगह-जगह रामलीला भी होती है।

दशहरा रामलीला का अंतिम दिन होता है। बड़े-बड़े नगरों में रामायण के पात्रों की झाँकियाँ निकाली जाती हैं। दशहरे के दिन रावण, कुंभकर्ण तथा मेघनाथ के पुतले बनाए जाते हैं। सायंकाल के समय राम और रावण के दलों में कृत्रिम लड़ाई होती है। राम जी रावण को मारते हैं। पटाखे आदि छोड़े जाते हैं। लोग मिठाइयाँ तथा खिलौने लेकर घरों को लौटते हैं।

विजय दशमी हमें प्रेरणा देती है कि अत्याचारों के समक्ष कभी नतमस्तक न हों। भ्रष्टाचार व अन्य सामाजिक बुराइयों को कभी आश्रय न दें।

3. भारतीय किसान

घुटने तक धोती, सिर पर अंगोछा और क्षीणकाय भारतीय किसान परिश्रम, सेवा और त्याग की सजीव मूर्ति है। किसान संसार का अन्नदाता कहा जाता है। उसे कठोर परिश्रम करना पड़ता है। वह खेतों के हवन में अपने पसीने की आहुति डालता

है। इस आहुति के परिणामस्वरूप ही खेतों में हरियाली छा जाती है। वृक्षों में फल आते हैं। सवेरे से शाम तक किसान लगातार काम करता है। वर्षा की बौछार हो, ग्रीष्म ऋतु की कड़कती धूप हो या हड्डी गला देने वाली ठंड हो, किसान अपने काम पर दिखाई देता है।

अशिक्षा के कारण भारतीय किसान अनेक बातों में पीछे रह जाता है। उसका मानसिक विकास नहीं हो पाता। यही कारण है कि उसके जीवन में अंधविश्वास सरलता से अपना स्थान बना लेते हैं। अपनी सरलता व सीधेपन के कारण वह सेठ-साहूकारों तथा जमीदारों के चंगुल में फँस जाता है। वह परिश्रमी है, पर चार महीने वह हाथ पर हाथ रखकर बैठता है। मुकदमेबाजी भी उसे तबाह करती है।

किसान कुछ दोषों के होने पर भी दैवी गुणों से युक्त है। वह परिश्रम, बलिदान, त्याग और सेवा के आदर्श द्वारा संसार का उपकार करता है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय किसान के जीवन में बड़ा परिवर्तन आया है। सरकार ने उसे अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्रदान की हैं। अब उसका सच्चा जीवन बहुत कुछ नगर जीवन के समान बनता जा रहा है।

किसान समाज का सच्चा हितैषी है। उसके सुख में ही देश का सुख है। उसकी समृद्धि में ही देश की समृद्धि है। आशा है कि भविष्य में किसान भरपूर उन्नति करेगा।

4. स्वतंत्रता दिवस

जीवन के समान राष्ट्र का इतिहास भी उन्नति-अवनति और हर्ष-विषाद की कहानियों से बनता है; लेकिन दुर्भाग्य के कारण जब कोई राष्ट्र पराधीनता की जंजीरों में जकड़ लिया जाता है तो उसका जीवन अभिशाप बन जाता है। भारत को भी यह अभिशाप सदियों तक सहना पड़ा है। अंग्रेज़ों की गुलामी जब असह्य हो उठी, तो देश जागा और आजादी की जंग छिड़ी। दमन का चक्र चला, लेकिन आखिर शहीदों का खून रंग लाया। 15 अगस्त का पावन दिन आया। स्वतंत्रता का नव-प्रभात निकला। भारत के राजनीतिक इतिहास का तो यह स्वर्णिम दिन है।

इसी दिन के लिए अनगिनत माताओं की गोदों के लाल लुट गए। स्वतंत्रता प्राप्ति का समाचार सुनकर भारतवासी प्रसन्नता से झूम उठे। भारत के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक हर्ष के आवेग की लहर दौड़ गई। 15 अगस्त की भोर भी क्या मनोरम भोर थी! चारों तरफ संगीत के ये शब्द गूँज रहे थे–

"उठो सोने वालों, सबेरा हुआ है।
वतन के शहीदों का फेरा हुआ है।"

ठीक प्रातः आठ बजे स्वतंत्रता संग्राम के महान् सेनानी पं० जवाहर लाल नेहरू ने लाल किले पर राष्ट्रीय झंडा फहराया। शहीदों को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई। स्वतंत्रता दिवस का मंगल पर्व इस बात का साक्षी है कि स्वतंत्रता एक अमूल्य वस्तु है। इसके लिए हमने अपना महान् त्याग किया है।

5. विद्यार्थी - जीवन

"विद्यार्थी जीवन, जीवन की आधारशिला है,
भाग्यहीन हैं वही जिन्हें यह जीवन नहीं मिला है।"

विद्यार्थी जीवन का उद्देश्य है कि श्रेष्ठ और उच्च शिक्षा प्राप्त कर, स्वतः के जीवन को उन्नतिशील बनाकर, समाज व देश को वैभव के स्थान पर पहुँचा कर विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त करना।

विद्यार्थी राष्ट्र की चेतना का प्रतीक है और वर्तमान का विद्यार्थी भविष्य का निर्माता है। विद्यार्थी जीवन में योग्य ज्ञान, योग्य दिशा प्राप्त होती है। उसी समय उसके मस्तिष्क में साकार भावनाओं का निर्माण प्रारंभ होता है। विद्यार्थी-जीवन मनुष्य के समस्त जीवन की नींव है। नींव पक्की हो, तो उसके ऊपर भवन भी पक्का बनता है। यदि नींव कच्ची रह जाए, तो उसके ऊपर का भवन देर तक नहीं टिकता। इसी प्रकार यदि विद्यार्थी-जीवन में विद्या भली-भाँति प्राप्त न की जाए, तो भविष्य में मनुष्य का जीवन सूना-सूना, अधूरा और पिछड़ा हुआ रह जाता है।

विद्यार्थी जीवन को सफल बनाने के मुख्य रहस्य हैं–कर्त्तव्य पालन, आज्ञाकारी होना, ब्रह्मचर्य-संयम रखना, कुसंगति से बचना, गुरु और माता-पिता के प्रति श्रद्धा, ईश्वर भक्ति, आलस्य का त्याग एवं समय का सदुपयोग। आलस्य तो विद्यार्थी-जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है।

चाणक्य ने कहा है–

"सुखार्थिनः कुतो विद्या विद्यार्थिनः कुतोः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद् विद्याम्, विद्यार्थी वा त्यजेद् सुखम्।।"

प्रत्येक विद्यार्थी को देशभक्त भी होना चाहिए। उसे लड़ाई-झगड़े आदि में भाग नहीं लेना चाहिए। विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता के कारण आज सारा वातावरण दूषित हो गया है।

अनुशासनहीनता छात्र वर्ग एवं राष्ट्र दोनों के लिए घातक है। अतः ऐसे छात्रों की आवश्यकता है, जो आदर्श जीवन से मोह करने वाले हों।

6. मातृ-भूमि या स्वदेश प्रेम

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है कि मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। उन्होंने कहा–

"मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान् भारतवर्ष में गूंजे हमारी भारती।।"

वास्तव में जिसमें स्वदेश-प्रेम की भावना नहीं, वह अपना व देश का कुछ भी भला नहीं कर सकता है। देश-प्रेम, देशभक्ति सबसे श्रेष्ठ वस्तु है। प्रत्येक जन के अंदर यह प्रदीप्त होनी चाहिए। जिस समय मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने लंका पर विजय प्राप्त की तो लक्ष्मण का मन सोने की लंका को देखकर डोल उठा, उस समय भगवान राम का यह श्लोक कितनी उच्च भावना से पूर्ण था कि जिसकी तुलना संसार में नहीं, मातृ-भूमि की इतनी स्पष्ट और इतनी श्रेष्ठ कल्पना इससे बढ़कर नहीं हो सकती–

"जननी जन्मभूमिश्च स्वगदिपि गरीयसी।"

माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। जिस देश की मिट्टी, जल, अग्नि आदि पाँच तत्वों से मिलकर यह भौतिक शरीर बना है, जिसकी रज (धूल) में लोटकर कृष्ण, राम, शंकर, विवेकानंद आदि महापुरुषों ने अपना जीवन समर्पित कर दिया, वह धूल कितनी पवित्र है।

मानव स्वभाव में मानव और मातृ-भूमि का प्यार भरा है। जहाँ वह जन्म लेता है, जहाँ वह खेलता है, जहाँ वह शिक्षा प्राप्त करता है, वह भूमि उसे कितनी प्यारी होती है; यह उस समय देखने को मिलता है जब वह उस स्थान को छोड़कर बाहर जाता है। सब प्रकार की सुविधाओं के पश्चात् भी वह अपने यथास्थान पर आ जाता है।

देश-प्रेम की धारा मानव के हृदय के अंदर विद्यमान हो, तो वह अनेक रूप में बहकर निकलती है। चाहे वह धन के द्वारा भाभाशाह का त्याग हो, घास की रोटी खाने वाले महाराणा प्रताप का धैर्य हो, जंगलों में इधर-उधर घूमकर औरंगजेब को छकाने वाला शिवाजी का चातुर्य हो या पराधीनता की बेड़ी काटने वाले नौजवानों में चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुभाषचन्द्र बोस आदि क्रांतिकारियों का जोश हो। इतना ही नहीं, कवियों ने अपनी कलम से देश-प्रेम की वह धारा प्रवाहित की जिसे देखते ही बनता है–

"यह देश मेरा, यह धरा मेरी, यह गगन मेरा।
इसके लिए बलिदान हो, प्रत्येक क्षण मेरा।।"

7. क्रिकेट

क्रिकेट का खेल आज भारत में ही नहीं, अपितु सभी जगह सर्वप्रिय खेल हो गया है। आजकल तो छात्रों के अलावा युवा मनुष्य भी इसके खेलने में रुचि रखते हैं।

ब्रिटिश संग्रहालय में लगे चित्रों से मालूम होता है कि इस खेल को पहले अंग्रेज़ी देशों ने ही प्रारंभ किया था। सबसे पूर्व इस खेल को गेंद में छड़ी मारकर खेला जाता था। समयानुसार धीरे-धीरे इस खेल में परिवर्तन आया।

18 वीं शताब्दी में अंग्रेज़ों ने बंबई (मुंबई) में क्रिकेट क्लब की स्थापना की थी। भारतीय टीम ने विदेशों में भ्रमण कर और वहाँ खेलकर अपनी प्रतिभा का जो उदाहरण दिया है वह देखने लायक है। भारतीय टीम के खिलाड़ियों में कई ऐसे महान् खिलाड़ी हैं–सुनील गावस्कर, कपिल देव, नवाब पटौदी, बिशन सिंह बेदी, सचिन तेंदुलकर, सौरव गांगुली आदि प्रमुख खिलाड़ियों में से हैं।

क्रिकेट का खेल एक विशाल मैदान में खेला जाता है। मैदान के बीचों-बीच 22 गज़ लंबी पिच होती है। पिच के दोनों ओर तीन-तीन इंच की दूरी पर स्टंप गाड़े जाते हैं जिन्हें हम 'विकेट' कहते हैं। पूरा मैच दो एंपायरों पर निर्भर करता है। टीम में 11 खिलाड़ी होते हैं। टीम को आउट करने के लिए 10 विकेट गिराने पड़ते हैं। जिस टीम के अधिक रन होते हैं, उसे ही विजयी घोषित किया जाता है।

क्रिकेट के खेल से मनुष्य में अनेक उच्च कोटि की भावनाओं का जन्म होता है जिनके कारण वह जीवन संघर्ष में सफलता पाता हुआ जीवन के सच्चे व पवित्र ध्येय को प्राप्त करता है।

30 अंतर्कथाएँ
(Internal Stories)

ये वे पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथाएँ हैं, जो हिंदी भाषा तथा साहित्य के पठन-पाठन में उस घटना की ओर संकेत करती हैं, जिसके बिना अर्थ स्पष्ट नहीं होता। वे अंतर्कथाएँ निम्नवत् हैं–

1. परशुराम

जमदग्नि ऋषि के बलशाली पुत्र थे। इनकी माता का नाम रेणुका था। परशुराम जन्म से ही अतिक्रोधी और पितृभक्त थे। एक समय जमदग्नि की गाय को राजा के पुत्र चुरा ले गए थे, इस पर परशुराम ने राजा को मार डाला तथा गाय को छुड़ाकर अपने आश्रम में ले आए। जब ये तपस्या करने वन को चले गए थे, तभी मौका पाकर राजा के पुत्रों ने इनके पिता जमदग्नि की हत्या कर दी। इतना सुनकर राजा के सभी वंशजों को परशुराम ने अपने फरसे से मौत के घाट उतार दिया तथा क्षत्रिय राजाओं को इक्कीस बार पृथ्वी से समाप्त किया। इतना ही नहीं, एक बार अपने पिता की आज्ञा पाकर अपनी माता का ही सिर काट डाला और पिता की आज्ञानुसार पुनः जीवित कर दिया।

2. राजा बलि

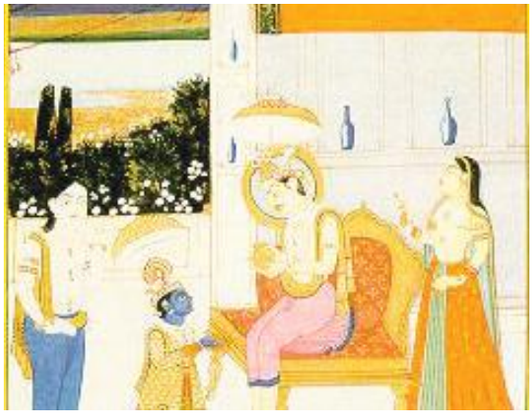

राजा बलि बड़े प्रतापी तथा दानी राजा थे। इनके दान से भयभीत होकर इंद्र ने भगवान विष्णु से इनकी परीक्षा लेने के लिए कहा। अंत में एक दिन भगवान विष्णु बावन अंगुल का रूप धरकर बलि के यहाँ दान माँगने के लिए आए। उन्होंने बलि से रहने के लिए तीन पग भूमि माँगी। बलि के हाँ कह देने पर उन्होंने विराट रूप धरकर दो पग में ही समस्त पृथ्वी को नाप लिया। तीसरे पग में राजा बलि ने स्वयं अपना शरीर नापने को कहा। इतनी दानशीलता देखकर भगवान ने प्रसन्न होकर उन्हें पाताल का स्वामी बना दिया और अपने वास्तविक रूप में आकर उन्हें दर्शन दिया।

3. दानवीर कर्ण

यह कुंती का पुत्र था। कुंती ने लोक-लाज के कारण एक लकड़ी के बक्से में रखकर कर्ण को गंगा में बहा दिया था। धृतराष्ट्र के सारथी अधीरथ ने उसे पाकर उसका पुत्रवत् पालन-पोषण किया। बड़ा होने पर कर्ण अद्‌वितीय वीर-योद्‌धा सिद्‌ध हुआ। वह धनुर्विद्‌या में अर्जुन से तनिक भी कम न था। वह बड़ा दानी भी था। एक बार कपट वेषधारी इंद्र के द्‌वारा माँगने पर उसने अपने शरीर के अद्‌भुत कवच-कुंडल भी दान में दे दिए। महाभारत के युद्‌ध में अर्जुन के द्‌वारा ही दानवीर कर्ण की मृत्यु हुई।

4. अहिल्या

अहिल्या गौतम ऋषि की पत्नी थी। एक दिन जब मुनि स्नान को गए थे, तो इंद्र ने चंद्रमा की सहायता से गौतम मुनि का रूप धारण कर लिया और अहिल्या के पास जाकर उसके साथ दुर्व्यवहार किया। इसी बीच गौतम मुनि लौटे और उन्होंने अपने तपोबल से सब कुछ जान लिया। उन्होंने इंद्र को श्राप दिया तथा अनजाने में हुई गलती को समझकर भी उन्होंने अहिल्या को श्राप देकर पत्थर की शिला बना दिया। भगवान श्री राम के चरणों की धूल से अहिल्या का उद्धार हुआ और वह पुनः अपने रूप में आ गई।

5. अजामिल

यह एक पापी ब्राह्मण था। इसकी पत्नी साधु-संतों की खूब सेवा किया करती थी। साधुओं के आशीर्वाद से इनको पुत्र रूपी रत्न प्राप्त हुआ जिसका नाम इन्होंने नारायण रखा। कुछ दिन बाद इनका पुत्र मर गया। जब यमदूत अजामिल को स्वर्ग ले जा रहे थे, तो उसने डरकर अपने प्रिय पुत्र 'नारायण' को पुकारा। 'नारायण' नाम सुनकर यमदूत भाग गए और इसे मोक्ष की प्राप्ति हुई।

6. गज-ग्राह

प्राचीन काल में एक हाथी, हथिनियों के साथ क्षीर सागर के किनारे त्रिकूट पर्वत पर स्थित एक तालाब में जल-केलि में मस्त था। उसी समय ग्राह (मगरमच्छ) ने उसका पैर मुँह में पकड़ लिया। हाथी भरसक प्रयास करने पर भी अपना पैर न छुड़ा सका। वह ग्राह धीरे-धीरे हाथी को खींचकर जल में ले जाने लगा। जब हाथी के प्राण संकट में हुए तब उसने करुण स्वर में भगवान को पुकारा। भगवान तुरंत ही पैदल गज की सहायता के लिए दौड़े और ग्राह को मारकर गज के प्राणों की रक्षा की।

अभ्यास

1. **छात्र उपरोक्त अंतर्कथाओं के आधार पर निम्न अंतर्कथाएँ लिखिए–**

   महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी तथा दधीचि।

आदर्श प्रश्न-पत्र-1

1. सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए–

(क) भाषा शब्द बना है _____ धातु से।

भाषण ☐ भाष् ☐

(ख) भाषा होती है-

मौखिक व लिखित ☐ केवल लिखित ☐

(ग) संस्कृत भाषा है-

आधुनिक ☐ प्राचीन ☐

(घ) प्रयोग के आधार पर शब्दों के भेद हैं-

तीन ☐ दो ☐

(ङ) देशों के नाम प्राय होते हैंः-

पुल्लिग ☐ स्त्रीलिंग ☐

(च) ऊष्म व्यंजनों की संख्या है–

दो ☐ चार ☐

2. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

(क) पंजाबी भाषा की लिपि रोमन है। ☐

(ख) 'मैं' प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम है। ☐

(ग) अपादन की विभक्ति 'के लिए' है। ☐

(घ) संबंध कारक की विभक्ति 'में, पर' हैं। ☐

(ङ) अपादन की विभक्ति 'के लिए' है। ☐

(च) कर्त्ता कारक की विभक्ति 'ने' है। ☐

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(क) भाषा की दूसरी इकाई _____ कहलाती है।

(ख) सुरेश _____ फल खाया।

(ग) _____ अपना पाठ स्वयं याद करो।

(घ) _____ लड़का सो रहा है।

(ङ) वे शब्द जिनका कोई अर्थ नहीं होता _____ शब्द हैं।

(च) रचना के आधार पर शब्द _____ प्रकार के होते हैं।

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) लिंग की परिभाषा तथा उसके भेद भी लिखिए।

_____

_____

(ख) संज्ञा की परिभाषा लिखकर उसके भेद भी बताइए।

(ग) सर्वनाम के कितने भेद (प्रकार) होते हैं ? उदाहरण दीजिए।

(घ) अधिकरण कारक किसे कहते हैं ?

(ङ) कारक किसे कहते हैं ? कोई दो उदाहरण दीजिए।

(च) विशेषण तथा क्रिया-विशेषण में भेद बताइए।

5. अंतर बताइए–

(क) स्वर एवं व्यंजन –

(ख) दीर्घ एवं प्लुत स्वर –

(ग) अंतःस्थ एवं ऊष्म –

(घ) अनुस्वार एवं विसर्ग –

(ङ) अल्पप्राण एवं महाप्राण –

6. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

टेलीविजन _____ (देशज / विदेशी शब्द) चम्मच _____ (विदेशी / देशज शब्द)

खाट _____ (तद्भव / तत्सम) लड़का _____ (विकारी / अविकारी)

7. निम्नांकित शब्दों में दिए हुए प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाएँ–

शब्द		प्रत्यय	नए शब्द
दानव	+	ता	_____
प्र	+	काश	_____
मोटा	+	ई	_____
इतिहास	+	इक	_____
पढ़	+	आई	_____

आदर्श प्रश्न-पत्र-2

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) काल किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ख) समास किसे कहते हैं ?

(ग) अल्प विराम क्या है ? इसका चिह्न भी दर्शाएँ।

(घ) अव्ययीभाव किसे कहते हैं ? दो उदाहरण दीजिए।

(ङ) भविष्यत् काल किसे कहते हैं ? इसके प्रकार सोदाहरण दें।

(च) अल्प विराम क्या है ? इसका चिह्न भी दर्शाएँ।

2. अंतर बताइए–

(क) द्वंद्व तथा द्विगु समास में

(ख) सामान्य भविष्यत् तथा संभाव्य भविष्यत् में।

(ग) कर्मधारय तथा बहुब्रीहि में

(घ) आसन्न भूतकाल तथा पूर्ण भूतकाल में।

(ङ) आसन्न भूतकाल तथा पूर्ण भूतकाल में।

(च) पूर्ण विराम एवं अल्प विराम में।

3. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

प्राचीन	नवीन/अर्वाचीन	मरण	जीवन/जीवित
ईश्वर	अनीश्वर/देवता	स्वदेश	जीना/विदेश

4. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए–

आकाश–

नदी– _____ _____ _____

वृक्ष– _____ _____ _____

गंगा– _____ _____ _____

घोड़ा– _____ _____ _____

सूर्य– _____ _____ _____

5. निम्नलिखित शब्द-समूह के स्थान पर एक शब्द लिखिए–

(क) उपकार को मानने वाला– _____

(ख) जिसका ईश्वर में विश्वास हो– _____

(ग) जो साथ-साथ पढ़ा हो– _____

(घ) किसी की याद में बनी इमारत– _____

(ङ) नीति को जानने वाला– _____

(च) जो कभी बूढ़ा न हो– _____

6. सही विकल्प छाँटकर लिखिए–

(क) आकाश में उड़ने वाला–

(i) जलचर (ii) नभचर

(iii) वनचर (iv) पक्षी _____

(ख) जो काम न करना चाहे–

(i) अकर्मण्य (ii) दुष्कर

(iii) निकम्मा (iv) आलसी _____

(ग) जो सबसे ऊँचा हो–

(i) श्रेष्ठ (ii) श्रेष्ठतर

(iii) सर्वोच्च (iv) उच्चकोटि _____

7. नीचे दिए शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए–

(क) निरोग – _____ (ख) ग्रहणी – _____

(ग) कवियित्री – _____ (घ) बिमार – _____

(ङ) उपरोक्त – _____ (च) सौंर्यता – _____

(छ) प्रात – _____ (ज) मात्रभूमि – _____